॥ श्री गणेशायनमः ॥

बृहत् होडाचक्रम् ।

भाषा टीका सहितम्

प्रणम्य भारती भक्त्या गणेशं च गजाननम् ।
समाहृत्यान्यग्रन्थेभ्यो होडांचक्रं विरच्यते ॥१॥

अर्थ—सरस्वती देवी तथा हाथी के समान मुख वाले गणेश जी को भक्ति सहित प्रणाम करके अनेक ग्रन्थों से संग्रह करके रचना करता हूं ।

रवि, सोम, मङ्गल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनैश्चर यह सात वार हैं ॥२॥

प्रतिपदा १, द्वितीया २, तृतीया ३, चतुर्थी ४, पञ्चमी ५, षष्ठमी ६, सप्तमी ७, अष्टमी ८, नवमी ९, दशमी १०, एकादशी ११, द्वादशी १२, त्रयोदशी १३, चतुर्दशी १४, कृष्णपक्षे अमावस्या ३०॥ शुक्लपक्षे पौर्णमासी १५ इस भांति १६ तिथियां हैं ॥३॥

चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन (कुआर) कार्तिक, मार्गशीर्ष (अगहन) पौष, माघ, फाल्गुन यह बारह

महीने १ वर्ष में होते हैं ॥४॥ वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा,शरद,हमन्त, शिशिर इतिऋतव ॥५॥ अयने दक्षिणायनोत्तरायणे ॥६॥

मेप, वृप, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ मीन, इति द्वादश राशय ॥७॥

अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा स्वाती विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, अभिजित, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा, रेवती इति अष्टविंशतिनक्षत्राणि ॥ ८ ॥

अर्थ—वसंत ग्रीष्म आदि ६ ऋतु हैं ॥५॥ अयन दो हैं दक्षिणायन (१) उत्तरायण (२) ॥६॥ राशियाँ कुल १२ हैं मेष वृष इत्यादि ॥७॥ इस श्लोकमें ज्योतिष शास्त्र के अनुसार २८ नक्षत्र हैं—अश्विनी भरणी आदि। किन्तु अभिजित नक्षत्र के क्रम से वर्तमान न रहने के कारण सत्ताईस ही नक्षत्र माने जाते हैं ॥८॥

विष्कम्भ, प्रीति आयुष्मान् सौभाग्य, शोभन, अतिगण्ड, सुकर्मा, धृति, शूल, गण्ड,

वृद्धि, ध्रुव, व्याघात, हर्षण, वज्र सिद्धि व्यतिपात् वरीयान्, परिघ, शिव, सिद्ध, साध्य, शुभ शुक्ल ब्रह्म, ऐन्द्र, वैधृति इति सप्तविंशति योगाः ॥९॥

अर्थ—योग भी सत्ताईस ही हैं जिनके नाम विष्कम्भ प्रीति आदि इस श्लोक में कहे अनुसार हैं। ९॥

चू चे चो ला अश्विनी। ली लू ले लो भरणी अ ई ऊ ए कृत्तिका। ओ वा वी वु रोहिणी। वे वो का की मृगशिरा। कू घ ङ छ आर्द्रा। के को हा ही पुनर्वसु। हू हे हो डा पुष्य। डी डू डे डो अश्लेषा। मा मी मू मे मघा। मो टा टी टू पूर्वा फाल्गुनी। टे टो पा पी उत्तरा फाल्गुनी। पू ष ण ठ हस्त। पे पो रा री चित्रा रू रे रो ता स्वाती। ती तू ते तो विशाखा। ना नी नू ने अनुराधा। नो या यी यू ज्येष्ठा। ये यो भ भी मूल। भू धा फा ढा। पूर्वाषाढ़ा भे भो जा जी उत्तराषाढ़ा। जू जे जो खा अभिजित्। खी खू खे खो श्रवण। गा गी गू गे धनिष्ठा। गो सा सी सू शतभिषा। से सो दा दी पूर्वाभाद्रपदा। दु थ झ ञ उत्तरा भाद्रपदा। दे दो चा ची रेवती। इति जन्मनक्षत्राणि ॥१०॥

अर्थ—जिस मनुष्य के नाम का पहिला अक्षर चू चे चो अथवा ला हो तो उसका नक्षत्र अश्विनी होता है तथा अश्विनी नक्षत्र में जन्म लेने वाले पुरुष का नाम इन्हीं चार अक्षरों पर रखना चाहिए। यह चार अक्षर क्रम से चार चरणों के हैं। इसी प्रकार ली-लू-ले-लो भरणी नक्षत्र के हैं। इन्हीं को जन्म नक्षत्र कहते हैं ॥१॥

अथ चन्द्रविचारः—

अश्विनी भरणी कृत्तिकापादेमेप १,कृत्तिकाया त्रय पादा रोहिणी मृगशिरोर्द्धं वृप २,मृगशिरोर्द्ध आर्द्रा पुनर्वसुपादत्रयं मिथुन ३, पुनर्वसुपादमेकं पुष्यश्लेपान्त कर्क ४,मघा च पूर्वाफाल्गुनीउत्तरा पादेसिंह ५, उत्तरायास्त्रय पादा हस्तचित्रार्द्धेकन्या ६, चित्रार्द्धेस्वाती विशाखापादत्रयं तुला ७, विशाखा पादमेकं अनुराधाज्येष्ठान्तं वृश्चिकः ८, मूलं च पूर्वापाठा उत्तरापाद धनु ९, उत्तरायास्त्रय पादा श्रवण धनिष्ठार्द्धं मकर १०, धनिष्ठार्द्धं शतभिपापूर्वाभाद्रपादत्रय कुम्भ ११, पूर्वाभाद्रपादा मेकं उत्तराभाद्रेवत्यंते मीन १२, इतिचन्द्रराशि । पूर्व, आग्नेय, दक्षिण नैऋत्य पश्चिम, वायव्य, उत्तर ऐशान्य इति दिशा ।

अर्थ—१ अश्विनी भरणी-कृत्तिका इनके एक चरण में मेष राशि का चन्द्रमा रहता है। कृत्तिका के तीन चरण, सम्पूर्ण रोहिणी, आधे मृगशिर तक वृष का चन्द्रमा रहता है। सूर्यादि सब नो ग्रह सब नक्षत्र पर इसी तरह रहते हैं, परन्तु वे दिन विशेष तक ही रहते हैं। उनकी संख्या आगे लिखी है। इसी प्रकार श्लोक में लिखे अनुसार सब राशियों पर चन्द्रमा की भी स्थिति जानना। यह चन्द्र राशि विचार समाप्त हुआ। दिशायें आठ हैं पूर्व, अग्निकोण-दक्षिण आदि।

शनौ चन्द्रे त्यजेत्पूर्वं दक्षिणां च दिशं गुरौ।
सूर्यशुक्रे पश्चिमायां बुधे भौमेतथोत्तरे ॥इति॥

अथ दिक्शूलः—

अर्थ—२ शनिवार तथा सोमवार को पूर्व दिशा में, गुरुवार को दक्षिण में रविवार, शुक्रवार को पश्चिम में और बुध, मङ्गल को उत्तर दिशा में यात्रा नहीं करनी चाहिए।

अथ चन्द्रवासस्थज्ञानम्—

मेषे च सिंहे धनपूर्व भागे वृषे च कन्यामकरे च याम्ये युग्मेतुलायां च घटेप्रतीच्यां कर्कालि-मीनेदिशि चोत्तरस्याम् ॥१॥ इति ॥ सम्मुखे अर्थ लाभाय दक्षिणे सुखसंपदः ॥ पृष्ठतोमरणं चैववामेचन्द्रे धनक्षयः ॥२॥

अर्थ—३ मेष-सिंह-धन राशियों में। चन्द्रमा का निवास पूर्व दिशा में, वृष कन्या-मकर राशियों में दक्षिण दिशा में मिथुन-तुला-कुम्भ राशियों मे पश्चिम मे, तथा कर्क वृश्चिक

मीन राशियों में चन्द्रमा का वास उत्तर दिशा में जानना चाहिये ॥१॥ इतिचन्द्र वास ज्ञानम्। चन्द्रमा सामने हो तो धन लाभ, पीछे हो तो धन हानि दाईं ओर हो तो सुख सम्पत्ति तथा बाईं ओर हो तो मृत्यु कारक होगा ॥२॥

अथ योगिनीवास ज्ञानम्

प्रति पत्सु नवम्यां च पूर्वस्यां दिशि योगिनी ।
अग्निकोणे तृतीयाया मेकादश्यां तु सा स्मृता ॥३॥
त्रयोदश्यां च पंचम्यां दक्षिणस्यां शिवप्रिया ।
द्वादश्यां च चतुर्थ्यां च नैऋत्यांयोगिनीस्मृता ॥४॥
चतुर्दश्यां च षष्ठ्या च पश्चिमायां च योगिनी ।
पौर्णिमाया च सप्तम्यां वायुकोणे तु पार्वती ॥५॥
दशम्यां च द्वितीयायामुत्तरस्यां दिशा भवेत् ।
ऐशान्ये दर्शचाष्टम्या योगिनी समुदाहृता ॥६॥
योगिनी सुखदा वामे पृष्ठे वांछितदायिनी ।
दक्षिणे धनहंत्री च सम्मुखा मरणप्रदा ॥७॥

अर्थ—पड़वा तथा नवमी को योगिनी पूर्व दिशा में तथा एकादशी और तृतीया को अग्निकोण में रहती है ॥३॥ त्रयोदशी तथा पंचमी को दक्षिण में और द्वादशी व चतुर्थी को नैऋत्य कोण में रहती है ॥४॥ चतुर्दशी व षष्ठी को पश्चिम में तथा पूर्णिमा व सप्तमी को वायुकोण में रहती है ॥५॥ दशमी व द्वितीया को उत्तर में तथा अष्टमी व अमावस्या को ईशान कोण में योगिनी रहती है ॥६॥ योगिनी बाईं ओर होने

से सुखदाई, पीछे होने से मनोरथ सिद्ध करने वाली, दाईं तरफ धन हारिणी तथा सन्मुख होने से मृत्यु कारक होती है ॥७॥

अथ भद्रावासज्ञानम्—

दशम्यायां च तृतीयायां कृष्णपक्षे परे दले ।
सप्तम्यां च चतुर्दश्यां विष्टिः पूर्वदले स्मृता ॥८॥
एकादश्यां चतुर्थ्यां च शुक्लपक्षे परे दले ।
अष्टम्यां पौर्णिमायां च विष्टिः पूर्वदले स्मृता॥९॥

अर्थ—कृष्ण पक्ष की दशमी और तृतीया तिथि के उत्तरार्द्ध (अर्थात पीछे के आधे भाग) में तथा सप्तमी और चतुर्दशी के पूर्वार्द्ध (आरम्भ के अर्द्ध भाग) में भद्रा रहती है ॥८॥ शुक्ल पक्ष की एकादशी और चतुर्थी के उत्तरार्द्ध में तथा अष्टमी और पूर्णिमासी के पूर्वार्द्ध में भी भद्रा रहती है ॥९॥

मेष मकर वृषकर्क टस्वर्गे कन्या-
मिथुन तुला धनुनागे ।
कुम्भ मीन अलिकेसरि मर्त्ये विचरति—
भद्रा त्रिभुवन मध्ये ॥१०॥

स्वर्गे भद्रा शुभं कुर्यात् पाताले च धनागमम् ।
मृत्युलोके यदा भद्रा सर्वकार्य विनाशिनी ॥११

अर्थ—मेष मकर-वृष-कर्क राशियों के चन्द्रमा में भद्रा को स्वर्ग लोक में, कन्या मिथुन-तुला धन राशि के चन्द्रमा में पाताल लोक में, तथा कुम्भ मीन वृश्चिक सिंह राशि के चन्द्रमा

मेषसिंहवृषा रक्ता कुंजरो वाहनं भवेत् ।
युग्मकन्यानुः पीतमश्वसंवाहनं भवेत् ॥१६॥
नक्लीनघटाः कृष्णामहिषो वाहनं भवेत् ।
अलिकर्कतुलाः श्वेतावृषभो बाहनं भवेत्॥१७॥
रक्तचन्द्रे भवेद्युद्धं श्वेतचन्द्रे सुखी भवेत् ।
पीतचन्द्रे महालाभः कृष्णचन्द्रे महाभयम् ॥१८

अर्थ—मेष-सिंह-वृष राशियों के चन्द्रमा में स्थित सक्रान्ति का वर्ण लाल तथा वाहन हाथी होता है, मिथुन-कन्या-धन राशि में पीत वर्ण अश्व वाहन होता है ॥१६॥ मकर-कुम्भ-मीन में वर्ण कृष्ण तथा वाहन महिष होता है। वृश्चिक कर्क-तुला राशि में वर्ण श्वेत तथा वाहन वृषभ जानना चाहिये ॥१७॥ चन्द्रमा रक्त हो तो युद्ध, श्वेत हो तो महालाभ, कृष्ण वर्ण हो तो महाव्यय प्राप्त होता है ॥१८॥

अथ घातचन्द्रविचारः—

चन्द्रभूतग्रहा नेत्रा रसा दिग्वाह्निसागराः ।
वेदाः सिद्धिशिलार्काःस्युर्घातचन्द्रः क्रमान्नृणाम् ॥
रोगे मृत्युरणे भंगंयात्राकाले तु वंधनम् ।
विवाहे विधवा नारी भातचन्द्र फलं त्विदम् ॥२०

अर्थ—१-५-९-२-६-१०-३-७-४-८-११-१२ इस प्रकार यह चन्द्रमा मेष आदि राशि वाले मनुष्यों के क्रम से घातक होते हैं। जैसे मेष को १, वृष को ५, चन्द्रमा घातक हैं। इसी भांति समस्त राशियों मे चन्द्रमा का घात जानना चाहिए ॥१९॥

घातक चन्द्रमा में रोग होता हो तो मृत्यु, युद्ध होय तो पराजय यात्रा काल में बन्धन तथा विवाह होवे तो स्त्री विधवा हो जावे। इस तरह घात चन्द्रमा का फल है ॥ २० ॥

ग्रहों की भुक्तसंख्या वचनम्—

मासं शुक्रो बुध सूर्य सार्द्धमासं महीसुत ।
गुरुरब्दं तम सार्द्ध शनि सार्द्धद्वयस्मृत ॥२१॥
तथा सपादद्विदिनं राशौ तिष्ठति चन्द्रमा ।
ग्रहाणा राशिसंभागमेवमुक्त विचक्षणो ॥२२॥

अर्थ—शुक्र, बुध सूर्य १ मास तक मंगल १॥ डेढ़ मास तक बृहस्पति १ साल तथा राहु १॥ साल तक और शनि २॥ ढाई साल तक एक राशि में रहते हैं ॥ २१ ॥ इसी भांत से चन्द्रमा सवा दो दिन तक एक राशि में रहता है ग्रहों के राशि का भोग इस प्रकार पण्डितों ने कहा है ॥ २२ ॥

चन्द्रमा की द्वादश राशियों का फल—

आद्येचन्द्र श्रियं कुर्यान्मनस्तोषं द्वितीयके ।
तृतीये धनसंपद्चिश्चतुर्थे कलहागम ॥२३॥
पंचमे ज्ञानवृद्धिश्च षष्ठे संपत्तिरुत्तमा ।
सप्तमे राजसन्मानं मरणं चाष्टमे तथा ॥२४॥
नवमे धर्मलाभश्च दशमे मानसेप्सितं ।
एकादशे सर्वलाभं द्वादशे हानिरव च ॥२५॥

अर्थ—चन्द्रमा प्रथम स्थान में हो तो लक्ष्मी प्राप्त हो दूसरे स्थान में हो तो मन में आनन्द तीसरे में धन सम्पत्ति चौथे में

फलह ॥ २३ ॥ पाँचवें ज्ञान की वृद्धि, छटे मे उत्तम सम्पत्ति, सातवें में सम्मान, आठवें मे मरण ॥ २४ ॥ नवें में यश, धर्म, लाभ, दशवें मे इच्छित कामना, ग्यारहवें मे सर्व लाभ, तथा बारहवें स्थान मे हो तो हानि पहुचाने वाला होता है ॥ २५ ॥

हरिद्वयंमैत्रहस्तौ मृगाश्वौ चादितिद्वयम् ।
यात्रायां रेवती शस्ता निन्द्याऽद्रा भरणीद्वयं २६
मघा चित्रा विशाखाश्चसर्पश्चान्ये च मध्यमाः ।
सर्वदिग्गमने हस्तपूषा च श्रवणोमृगः ॥२७॥
सर्वसिद्धिकरःपुष्यो विद्यायां चगुरुर्यथा ॥२८॥

अर्थ—यात्रा करने के लिए श्रवण धनिष्ठा अनुराधा, हस्त मृगशिरा, अश्विनि, पुनर्वसु, पुष्य रेवती यह नक्षत्र शुभ हैं। आर्द्रा—भरणी कृत्तिका–मघा–चित्र–विशाखा–अश्लेषा नक्षत्र अशुभ तथा अन्य शेष नक्षत्र मध्यम हैं। हस्त, रेवती श्रवण, मृगशिरा नक्षत्र सब दिशाओ की यात्रा के लिए शुभ हैं। पुष्य नक्षत्र सब विधि सिद्धि दायक है जैसे विद्या प्राप्ति के लिए गुरु सब प्रकार से सिद्धि दायक होता है ॥ २६-२७ २८ ॥

वर्ग विचार और लग्नज्ञान

अ इ ऊ ए गरुड़ १, क ख ग घ ङ विडाल २,
च छ ज झ ञ सिंह ३, ट ठ ड ढ ण श्वान ४,
त थ द ध न सर्प ५, प फ ब भ म मूषक ६,
य र ल व मृग ७, श ष स ह मेष ८, ॥२९॥
स्ववर्गात् पंचमे शत्रुश्चतुर्थे मित्रसंज्ञकः ।

उदासीनस्तृतीये स्याद्वर्गभेदस्त्रिधोच्यते ॥३०॥
द्विजन्मनि पंचमसप्तमगाश्चतुरष्टमद्वादशधर्मयुता
धनधान्यहिरण्यविनाशकरा रविराहु शनैश्चर १मि
सुता । मीनाजोसार्धतिस्त्र स्युर्घट्य पादोनपंचकः
वृषकुम्भौ तथाज्ञेय पादोनषट्पराणि च ॥३१॥

अर्थ—जिसके राशि नाम का प्रथम अक्षर अ इ उ ए हो उसका प्रथम वर्ग होता है। इसी प्रकार यह सब आठ वर्ग जानने चाहियें ॥१०॥ अपने वर्ग से पांचवा वर्ग शत्रु चौथा मित्र तीसरा उदासीन कहलाता है। इस प्रकार वर्गों में भेद तीन प्रकार का कहा है ॥१०॥ द्विजन्मों को पांचवी ७वीं चौथी ८वीं १२वीं ९वीं राशि पर प्राप्त हुए रवि राहु शनि-तथा मंगल स्वर्ण धन धान्य को नष्ट करते हैं। यह ग्रह गोचर देखने का प्रकार है ॥११॥ मीन-मेष लग्न साढ़े तीन घड़ी वृष कुम्भ पौने पांच घड़ी और शेष अन्य लग्न पौने ६। घड़ी

कालवास विचार वर्णनम्—

अर्केत्तरे वायुदिशां च सोमे ।
भौमे प्रतीच्यां बुधनैऋते च ॥
याम्ये गुरौ वह्निदिशां च शुक्रे ।
मन्दे च पूर्वं प्रवदन्तिकालम् ॥३२॥

अर्थ—रविवार को उत्तर दिशा में सोमवार को वायव्य दशा में मंगलवार को पश्चिम में बुधवार को नैऋत्य कोण में बृहस्पति को दक्षिण में शुक्र को अग्नि कोण में,शनि को पूर्व में

काल का योग होता है। इस काल मे योग में सम्मुख गमन नहीं चाहिए ॥३३॥

राशियों के स्वामी वर्णन—

मेषवृश्चिकयोर्भौमः शुक्रो वृषतुलाधिपः ।
बुधःकन्यामिथुनयोःप्रोक्तः कर्कस्यचन्द्रमा ॥३४
जीवो मीनधनुःस्वामी शनिर्मकरकुम्भयोः ।
सिंहस्याधिपतिःसूर्यःकथितोगणकोत्तमैः ॥३५॥
ववश्च बालवश्चैव कौलवस्तैतिलस्तथा ।
गरश्च वणिजोविष्टिःसप्तैतेकरणानि च ॥३६॥
शुक्रे नंदा बुधे भद्रा शनौ रिक्ता कुजे जया ।
गुरौ पूर्णातिथिर्ज्ञेया सिद्धियोगाः शुभेशुभाः।३७

अर्थ—मेष वृश्चिक राशि का स्वामी मगल, वृष तुला राशि स्वामी शुक्र, कन्या मिथुन का बुद्ध और कर्क का स्वामी चन्द्रमा है ॥३४॥ मीन, धन राशि का स्वामी बृहस्पति, मकर, कुम्भ, का स्वामी शनि और सिंह राशि का स्वामी सूर्य है ॥३५॥ बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज, विष्टि यह सात करण हैं ॥३६॥ शुक्रवार को नन्दा, बुद्ध को भद्रा, शनि को रिक्ता, मगल को जया, बृहस्पति को पूर्णा तिथि हो तो इनमे सिद्धि योग होता है जो शुभ है ॥३६॥

अथ दिनमान विचारः—

त्र्यं गुलं शंकुमादाय छायारामसंलन्विता ।
चतुःषष्ठिहरेद्भागं लब्धंघटिपलात्मकम् ॥३८॥

अर्थ—तीन अंगुल प्रमाण अंकुरा लेकर छाया मापे। उसमें तीन मिलावे जो माप हो उसका भाग ६४ में देवे। भजन फल को भक्ती मान तथा शेष में ६० का गुणा करके पुनः उसी अंक का भाग दे और उसके भजनफल को पल मानें॥ ३८॥

स्त्री को नवीन वस्त्र धारण करने का मुहूर्त—

हस्तादिपंचकेऽश्विन्या धनिष्ठायां च पूषणि ।
गुरौशुक्रे बुधे वारे धार्यं स्त्रीभिर्नवाम्बरम् ॥३९

अर्थ—हस्त से आदि ले पाँच नक्षत्र और अश्विनि धनिष्ठा रेवती इन नक्षत्रों में बुध बृहस्पति शुक्रवार को स्त्रियों को नये वस्त्र धारण करने चाहियें॥ ३९॥

अथ पुरुष नवीन वस्त्र धारण मुहूर्तः—

लग्ने मीनेच कन्यायां मिथुने च वृषे शुभ ।
पौष्णे पुनर्वसुद्वंद्वे रोहिण्युत्तर भेषु च ॥४०॥

अर्थ—मीन, कन्या मिथुन वृष इन लग्नों में रेवती पुनर्वसु पुष्य रोहिणी तथा तीनों उत्तरा नक्षत्रों में नवीन वस्त्र धारण करना चाहिये॥ ४०॥

अथ नवान्न भोजन मुहूर्त—

नवान्नभोजनेप्राह्य वस्त्रोक्तमरोशत ।
वराधिकासूर्यसोमो नक्षत्र श्रवणो मृग ॥४१॥

अर्थ—नवीन वस्त्र धारण करने के लिए जो नक्षत्र ऊपर कहे हैं विशेष करके उन्हीं वार तथा नक्षत्रों में तथा श्रवण मृगशिरा नक्षत्रों में रविवार सोमवार को भी नया अन्न ग्रहण करना चाहिये॥ ४१॥

अथ पंचक कथनम्

धनिष्ठादि पंचकं त्याज्यं तृणकाष्ठादिसंग्रहे ।
त्याज्यादक्षिणदिग्यात्रा गृहच्छादनमेव च ॥४२॥

अर्थ—धनिष्ठा आदि पाच नक्षत्र पञ्चक कहलाते हैं। इनमें तृण काष्ठ आदि का सग्रह न करे, दक्षिण दिशा में न जावे, घर को न बनवावे न छान डलवावे ॥ ४२ ॥

तैल लगाने का विचार और परिहार कथन—

तैलाभ्यंगे रवौ तापः सोमे शोभा कुजे मृतिः ।
बुधे धनं गुरौहानि शुक्रे दुःखं शनौ सुखम् ४३
रवौ पुष्पं गुरौ दुर्वा भौमवारे च मृत्तिका ।
गोमयं शुक्रवारे च तैलाभ्यंगे न दोषभाक् ॥४४

अर्थ—रविवार के दिन तैल लगाने से ज्वर, सोमवार को शोभा, मगल को मृत्यु बुद्ध को धन प्राप्ति, बृहस्पति को हानि, शुक्रवार को दु ख तथा शनिवार को तेल लगाने से सुख प्राप्त होता है ॥ ४३ ॥ रविवार को तेल मे पुष्प, बृहस्पति वार को दूर्वा मंगल को मृत्तिका, शुक्र को गोबर डाल कर लगाने से इन त्याग्यवारों में भी कोई दोष नहीं होता ॥ ४४ ॥

मृत्युप्रद योग वर्णन—

नन्दा सूर्ये च भौमे च भद्रा भार्गवचंद्रयोः ।
बुधेजया गुरौरिक्ता शनौपूर्णा च मृत्युदा ॥४५

अर्थ—रविवार और मगल को नन्दा तिथि हो, सोम शुक्र

को भद्रा तिथि बुध को जया, बृहस्पति को रिक्ता तथा शनि को पूर्णा तिथि होवे तो मृत्युयोग होता है ॥४५॥

एक संग यात्रा का मंद कथन—

पितापुत्रौ न गच्छेतां न गच्छेद् भ्रातरद्वयम् ।
नरांगनास्त्रयो विप्रा न गच्छन्तु तथैव च ॥४६

अर्थ—पिता पुत्र को, दो सहोदर भाइयों का भी स्त्रियों को तथा तीन ब्राह्मणों को भी एक साथ यात्रा नहीं करनी चाहिये ॥४६॥

अमृतसिद्धियोग कथन—

हस्त सूर्ये मृग सोमे वारे भौमे तथाश्विनी ।
बुधे मैत्रगुरौ पुष्यो रेवती भृगुनन्दने ॥४७॥
रोहिणी रविपुत्रे च सर्वसिद्धिप्रदायका ।
अर्वंचामृतसिद्धि स्याद्योग प्रोक्त पुरातने ॥४८

अर्थ—रविवार को हस्त सोमवार को मृगशिरा मंगल को अश्विनी बुध को अनुराधा बृहस्पति को पुष्य शुक्र को रेवती तथा शनिवार को रोहिणी नक्षत्र होवे तो उनमें सब सिद्धियों को देन वाला अमृतसिद्धि नामक योग पूर्व पण्डितों ने कहा है ॥४८॥

अथ ग्राम सिफलत्वानम्—

[illegible] च भद्रांतिदाद्या मघ मस्तके ।
[illegible] नम्र हृदि श्चैवं पादयो सप्त तारका ॥४९॥

मस्तके च धनी मान्यः पृष्टे हानिश्च निर्धनः ।
हृदये सुखसंपत्तिः पादे पर्यटनं भवेत् ॥५०॥

अर्थ—ग्राम का जो नक्षत्र हो उसके आदि के साथ नक्षत्र मस्तक पर धरे, सात पीठ पर, सात हृदय पर तथा सात पैरों पर धरे ॥४६॥ वर्तमान नक्षत्र मस्त पर होवे तो ग्राम मे बसने वाला धनी मान्य होता है। पीठ पर हो तो हानि और निर्धन, हृदय पर हो तो सुख-संपत्ति वाला तथा पैरों पर हो तो घूमने वाला होता है ॥५०॥

अन्य मत से ग्रामवास फल वर्णन—

ग्रामस्यभं समारभ्य सूर्यभं यश्च तिष्ठति ।
पंचमे द्वादशे वापिचैकोनविंश विंशयोः ॥५१॥
एकविंशश्च तुर्विंशत् षड्विंशस्थैव च ।
एतानिसप्तनक्षत्राणिग्रामेनासुखदायकम् ॥५२॥

अर्थ—ग्राम के नक्षत्र से सूर्य के नक्षत्र तक गिने। ५वा, १२वाँ १६वा २०वा, २१वा २४वा, २६वां, यह सात नक्षत्र ग्राम में जाकर बसे तो सुख नहीं होता ॥५२॥

अथ वधू प्रवेशमुहूर्तः—

हस्तत्रयेब्रह्मयुगे मघायां पुष्यधनिष्ठा श्रवणोत्तरेषु
मूलानुराधाहयरेवतीषु स्थिरेषु लग्नेषुवधूप्रवेशः

अर्थ—हस्त से ३ नक्षत्र रोहिणी, मृगशिरा, मघा पुष्य, धनिष्ठा, श्रवण, तीनो उत्तरा, मूल, अनुराधा, अश्विनी, रेवती इन नक्षत्रोंमें स्थिर लग्नमें वधू को प्रवेश कराना चाहिए ॥५३॥

प्रस्थान में दिन प्रमाण वर्णन—

राजादशाहे पञ्चाहमन्योपि प्रथितो वसेत् ।
अंगप्रस्थानसम्पूर्णं वस्तुप्रस्थानमर्द्धकम् ॥५८॥

अर्थ—राजा को प्रस्थान करने पर १० दिन तथा औरों को ५ दिन तक का मुहूर्त्त उपयोगी रहता है। तत्पश्चात् वह मुहूर्त नष्ट हो जाता है। स्थान छोड़ कर प्रस्थान में रहने से मुहूर्त्त का पूरा फल मिलता है और पदार्थ के रखने से मुहूर्त्त का फल आधा ही रह जाता है ॥५८॥

अङ्ग फड़कने का फलाफल वर्णन—

पृथ्वीलाभो भवेन्मूर्ध्नि ललाटे रविनन्दन ।
स्थानवृद्धिं समायाति भ्रूनसोः प्रियसंगमः ॥५९॥
मृत्युलब्धिश्चाक्षिदेशे दृगुपान्ते धनागमः ।
उत्कण्ठोपगमे मध्येदृष्टं राजन्विचक्षणैः ॥६०॥
दृग्वन्धने संगरे च जयं शीघ्रमवाप्नुयात् ।
योषिल्लाभोऽपांगदेशेश्रवणान्तेप्रियश्रुति ॥६१॥
नासिकायां प्रीतिसौख्यं प्रियाप्तिरधरोष्ठयोः ।
कंठेतुभाग्यलाभःस्याद्भोगवृद्धिरथांसयोः ॥६२॥
सुहृत्स्नेहश्च बाहुभ्यां हस्ते चैव धनागमः ।
पृष्ठे पराजयोत्सेधोजयोवक्षः स्थलेभवेत् ॥६३॥

रोगी के स्नान करने का मुहूर्त—

आश्लेषाद्वितयं स्वाती रोहिणी च पुनर्वसु ।
रोगिस्नाने रेवती च वर्जयेदुत्तरात्रयम् ॥५४॥
रिक्त तिथो चरे लग्ने वारे च रवि भौमयो ।
स्नानं च रोगिणांप्रोक्तं द्विजभोजनसंयुतम् ५५

अर्थ—आश्लेषा, मघा स्वाती, रोहिणी पुनर्वसु रेवती तीनों उत्तरा यह नक्षत्र चर लग्न, खाली तथा रविवार मंगलवार को ब्राह्मण को भोजन कराकर तभी रोगी को स्नान कराना चाहिए। क्योंकि उक्त सब इस कार्य में वर्जित हैं ॥ ५४-५५ ॥

मुख्य २ तिथियों में निषिद्ध कार्य वर्णन—

षष्ठीषुतैलंपलमष्टमीषु क्षौरंमियानैवचतुर्दशीषु ।
स्त्रीसेवनंनष्टकलासुषु सामायुःक्षयार्थमुनयोवदंति

अर्थ—६ठ को तेल तथा अष्टमी को माँस नहीं खावे। चतुर्दशी को क्षौर तथा अमावस्या को स्त्री प्रसंग नहीं कराना चाहिए। जो करते हैं उनकी आयु नष्ट हो जाती है ॥५६॥

प्रस्थान में वस्तु रखन का विधान—

यज्ञोपवीतकं शस्त्रं मतुभ्च स्थापयेत्फलम् ।
विप्रादिक्रमत सर्वस्वर्णधन्याम्बरादिकम् ॥५७॥

अर्थ—प्रस्थान में ब्राह्मण को यज्ञोपवीत क्षत्रिय को शस्त्र वैश्य को मिठाई तथा शूद्र को फल रखना चाहिए। सोना वस्त्र तथा धान्य सब कोई प्रस्थान में रखें ॥५८॥

हिन्दी जैन ग्रन्थमाला ग्रन्थाङ्क ५
भविष्यज्ञान ज्योति
तिलक विजय

भविष्य ज्ञान ज्योति

मयोजक—

तिलक विजय

वीरसं—२४५९ विक्रम स० १९९२

द्वितीय सस्करण १०००

मूल्य |||=)

प्रकाशक—
तिलक विजय
कटरा खुशालराय देहली।

१—श्राद्ध विधि प्रकरण मूल्य ४)

२—जैनसाहित्य में विकार, सवा रुपये से घटाई हुई मूल्य ॥)

३—जिन गुण मंजरी मूल्य ।)

मुद्रक—
महरोत्रा प्रेस नई सड़क

॥ प्राक्कथन ॥

भविष्य ज्ञान याने ज्योतिष ज्ञान का विषय बड़ा ही गहन और महत्वपूर्ण है। मेरे जैसे अल्पज्ञ व्यक्ति के द्वारा इस विषय में कुछ प्रकाश डाला जाना यह सर्वथा असंभवसी बात है। परन्तु हिन्दी-जैन समाजके लिये जिन ज्योतिष विषयक प्रचलित एवं आवश्यक बातों के परिज्ञान का प्रायः अभावसा था। उन्हीं महत्वपूर्ण बातोंको आरम्भ सिद्धि, दिन शुद्धि एवं लग्नशुद्धि आदि जैन के महान ग्रन्थों से लेकर मैंने इस छोटी सी पुस्तक के स्वरूप में संकलित कर उसी त्रुटी को पूर्ण करने का प्रयास किया है।

इसमें शुभ कार्य की सिद्धि के लिये, तथा लाभार्थ परदेश गमन के लिये सिद्धि दायक योग, जन्म पत्रीमें पड़े हुये शुभा-शुभ

ग्रहों का फलादेश विपरीत ग्रहों को शान्त करने के उपाय विवाह, दीक्षा तथा प्रतिष्ठादि में शुभ तिथि नक्षत्र, वार, चन्द्रमा की अनुकूलता, राशि, त्यागने वाले योग, स्वरोदय, मृत्यु ज्ञान, लाभ हानि जानने का तरीका, तेजी मंदी जानने का तरीका, सामुद्रिक लक्षणों का फलादेश, शकुन विचार और अनेक प्रकार के प्रश्न विचार आदि अनेकानेक विषयों का सरल हिन्दी में कविता तथा गद्य में विवेचन किया गया है।

मेरा विश्वास है

भविष्य ज्ञान ज्योति

—::०:—

आकाश में सूर्य और चन्द्रमा जो वर्तुलाकार परिभ्रमण करते हैं उसे क्रान्तिवृत्त कहते हैं। क्रान्तिवृत्त के बारह समान विभाग कर अश्विनी नक्षत्र से आरम्भ कर मेष, वृषभ, मिथुन, आदि अनुक्रम से बारह राशी मानी गई हैं और बारह राशिचक्र के आरम्भ स्थान से लेकर तीस अंश के अन्तर पर प्रत्येक राशिस्थित होने से बारह ही राशियां समस्त क्रांतिवृत्त में ३६० अंश पूर्ण करती हैं। इन्हीं में नव ग्रह भी अपनी २ गति के अनुसार भ्रमण करते हैं। इसी प्रकार आकाश में अश्विनी नक्षत्र से पूर्वमें भरणी, भरणी से पूर्वमें कृत्तिका और उससे पूर्व में रोहिणी, इस तरह सत्ताईस नक्षत्रों की व्यवस्था

ग्रहों का फलादेश, विपरीत ग्रहों को शान्त करने के उपाय, विवाह, दीक्षा तथा प्रतिष्ठादि में शुभ तिथि नक्षत्र, वार, चन्द्रमा की अनुकूलता, राशि, त्यागने वाले योग, स्वरोदय, मृत्यु ज्ञान, लाभ हानि जानने का तरीका, तेजी मंदी जानने का तरीका, सामुद्रिक लक्षणों का फलादेश शकुन विचार और अनेक प्रकार के प्रश्न विचार आदि अनेकानेक विषयों का सरल हिन्दी में कविता तथा गद्य में विवेचन किया गया है।

मेरा विश्वास है कि इस पुस्तक के द्वारा हर एक विचार शील मनुष्य यथेष्ट प्रमाण में आर्थिक फायदा भी उठा सकता है।

विनीत—
तिलक विजय।

डे डो, वालेकी कर्क राशि। मा मी मू मे मो टा टी टू टे, वाले की सिंह राशि। टो प पि पू ष ण ठा पे पो, वाले की कन्या राशि। रा रि रु रे रो ता ती तू ते, वालेकी तुला राशि। तो ना नी नू ने नो या यि यू, वाले की वृश्चिक राशि। ये यो भा भी भू धा फा ढ भे, वाले की धन राशि। भो ज जि जू जे जो खा खी खू खे खो गा गी, वाले की मकर राशि। गू गे गो सा सी सू से सो दा, वालेकी कुम्भ राशि और दी दू थ झ ञ दे दो चा ची, वालेकी मीन राशि समझनी चाहिये।

इसी प्रकार नाम के आद्यक्षर पर से अपना या दूसरे का नक्षत्र भी जानना चाहिये। चू चे चो ला अश्विनी। ली लु ले लो भरणी। आ ई ऊ ए कृत्तिका। ओ वा वी वू रोहिणी। वे वो का की मृगशिरा, कु घ ङ छ आर्द्रा, के को हा हि पुनर्वसु, हू हे हो डा पुष्य, डी डू डे डो अश्लेषा, म मि मू मे मघा, मो टा टी टू पूर्वाफाल्गुनी, टे टो पा पी उत्तरा फाल्गुनी, पु ष ण ठ हस्त, पे पो र रि चित्रा, रू रे रो ता स्वाति, ती तू ते तो विशाखा, न नी नू ने अनुराधा, नो य यी यू ज्येष्ठा, ये यो भा भी मूल, भु धा फ ढ पूर्वाषाढा, भे भो ज जी उत्तराषाढा, जु जे

है। इन सत्ताईस नक्षत्रों के आकाश चक्र को राशि चक्र कहते हैं।

चैत्र मास की शुक्ल एकम से सूर्य मेष राशि से प्रारम्भ कर अनुक्रम से बारह मास में बारह ही राशियों को भोगता है। सूर्य जिस राशि में प्रवेश करता है उस राशि के नाम से वह संक्रान्ति कहलाती है। चन्द्रमा सवा दो दिन की एकसौ पैंतीस घड़ियों में एक राशि भोग कर अनुक्रम से एक मास में बारह राशियों को भोगता है। अमावस्या के रोज सूर्य और चन्द्र एकत्रित होते हैं। इसी प्रकार अन्य ग्रह भी अपनी २ गति से एक राशि में से दूसरी राशि में प्रवेश करते हैं। बारह राशियों के नाम इस प्रकार हैं—

मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक धन, मकर, कुंभ और मीन। जिसके नाम में आद्यक्षर चू चे चो ला ली लू ले लो अ, हो उसकी मेष राशि समझनी चाहिये। या मेष राशि वालेका नाम पूर्वोक्त अक्षरों पर रखना चाहिये। इसी प्रकार इ उ ए ओ वा वी वू वे वो वालेकी वृष राशि। का की कू घ ङ छ के को हा, वालेकी मिथुन राशि। ही हू हे हो डा डी डू डे।

याने काणे कहलाते हैं। बाकीके शेष रहे नक्षत्र अंध लोचन याने अंधे कहलाते हैं।

यदि अंधे नक्षत्र में किसी की कोई वस्तु खोई गई हो तो वह शीघ्र ही वापिस मिल जायगी। मंद लोचन वाले नक्षत्र में खोई गई हो या चोरी गई हो तो वह वस्तु भी जरा विलम्ब से वापिस मिल जायगी। काणे नक्षत्र में खोई हुई चीज कुछ विशेष देरसे वापिस मिलने की सम्भावना होती है। बल्कि कभी तो पता ही लग कर रह जाता है। सुलोचन नक्षत्र में चोरी गई या खोई गई वस्तु वापिस नहीं आती।

गृहस्थ लोगों के लिए नक्षत्रों के गण जानना भी परमावश्यक है। जो लोग विवाह करने की धुन में वर कन्या के राशि नक्षत्रों और ग्रहों पर ध्यान नहीं देते वे अन्तमें कभी विपरीत योग मिलने के कारण बड़ा भयंकर नुकशान उठाते हैं, इस लिये विवाह के समय वर कन्या की जन्म कुन्डलियों का मिलान अवश्य करा लेना चाहिये। उनके जीवन सम्बन्धी सुख दुःख की बातें उनकी जन्मकुन्डली परसे मालूम हो सकती हैं।

पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, स्वाति, अश्विनी, श्रवण, रेवती,

जो खा अभिजित, खि खु खे खो श्रवण, गा गी गु गे धनिष्ठा, गो स सी सू शतभिषक या स्तवारा, से सो द दि पूर्वाभाद्रपद, दु थ झ ञ उत्तराभाद्रपद, दे दो च ची रेवती,

इन पूर्वोक्त नक्षत्रों का शुभाशुभ फल इस प्रकार समझना। अश्विनी, मृगसिरा, आर्द्रा, पुष्य, चित्रा, ज्येष्ठा, पूर्वाषाढ़ा, धनिष्ठा और रेवती ये नव नक्षत्र शुभ कहलाते हैं। हस्त और उत्तराभाद्रपद ये दो नक्षत्र लक्ष्मी दायक माने हैं। रोहिणी और अनुराधा ये दो सिद्धिकारी बतलाये हैं। उत्तराफाल्गुनी और उत्तराषाढ़ा विद्या व बुद्धि दायक कहे हैं। स्तवारा या शतभिषक कल्याणकारी कहा है। पुनर्वसु और मूल मध्यम बतलाये हैं और बाकीके नक्षत्र अशुभ स्वभाव वाले माने हैं। कृत्तिका, पुनर्वसु, पूर्वाफाल्गुनी, स्वाति, मूल, श्रवण और उत्तराभाद्रपद, ये सात नक्षत्र सुलोचन कहलाते हैं। अश्विनी, मृगशिरा, अश्लेषा, हस्त, अनुराधा, उत्तराषाढ़ा और स्तवारा या शतभिषक ये नक्षत्र मंद लोचन याने मंद ... वाले कहलाते हैं। भरणी, आर्द्रा, मघा, चित्रा, ... अभिजित और पूर्वाभाद्रपद ये नक्षत्र मध्य लोचन

याने काणे कहलाते हैं। बाकीके शेष रहे नक्षत्र अंध लोचन याने अंधे कहलाते हैं।

यदि अंधे नक्षत्र में किसी की कोई वस्तु खोई गई हो तो वह शीघ्र ही वापिस मिल जायगी। मंद लोचन वाले नक्षत्र में खोई गई हो या चोरी गई हो तो वह वस्तु भी जरा विलम्ब से वापिस मिल जायगी। काणे नक्षत्र में खोई हुई चीज कुछ विशेष देरसे वापिस मिलने की सम्भावना होती है। बल्कि कभी तो पता ही लग कर रह जाता है। सुलोचन नक्षत्र में चोरी गई या खोई गई वस्तु वापिस नहीं आती।

गृहस्थ लोगों के लिए नक्षत्रों के गण जानना भी परमावश्यक है। जो लोग विवाह करने की धुन में वर कन्या के राशि नक्षत्रों और ग्रहों पर ध्यान नहीं देते वे अन्तमें कभी विपरीत योग मिलने के कारण बड़ा भयंकर नुकशान उठाते हैं, इस लिये विवाह के समय वर कन्या की जन्म कुन्डलियों का मिलान अवश्य करा लेना चाहिये। उनके जीवन सम्बन्धी सुख दुःख की बातें उनकी जन्मकुन्डली परसे मालूम हो सकती हैं।

*पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, स्वाति, अश्विनी, श्रवण, रेवती,

मृगशीर्ष और अनुराधा, ये नव नक्षत्र देवगण कहलाते हैं। भरणी, रोहिणी, ३ पूर्वा और ३ उत्तरा एव आर्द्रा, ये नव नक्षत्र मनुष्यगण कहलाते हैं। मघा, मूल, धनिष्ठा, ज्येष्ठा, चित्रा, विशाखा, शतभिषक, कृत्तिका, और अश्लेषा, ये नव नक्षत्र राक्षसगण कहलाते हैं।

स्वगणे परमा प्रीति र्मध्यमा देव मर्त्ययोः।
देव राक्षसयो र्वैरं मरणं मर्त्य राक्षसो ः ॥१॥

इसमें खास समझने की यह बात है कि वर कन्या का यदि एक ही गण हो याने उन दोनों के नक्षत्रों का एक ही गण हो तो उनमें सदैव प्रेमभाव रहता है और दोनोंका जीवन आनन्द पूर्वक व्यतीत होता है। देव और मनुष्यगण वाले वर कन्या में मध्यम प्रेम रहेगा। देवगण और राक्षसगण में परस्पर वैरभाव रहता है और मनुष्य राक्षसगण में अवश्य ही मनुष्यगण वाले की मृत्यु होती है।

इसी प्रकार राशिवर्ण जानने की आवश्यकता है। मीन, कर्क, और वृश्चिक राशि ब्राह्मण वर्ण हैं। मेष, सिंह, और धनराशिका क्षत्रिय वर्ण है। वृषभ कन्या और मकर-

राशि वैश्यवर्ण की हैं और मिथुन, तुला एवं कुंभ राशि का शूद्र वर्ण है।

यत्रवर्णाधिका नारी, तत्र भर्ता न जीवति।
यदि जीवति भर्त्ता स्यात्तदा पुत्रो न जीवति॥

इसमें यह बात विशेष जानने की है कि यदि वर कन्या मे कन्याराशि का वर्ण वर से ऊँचा हो तो वह कन्या वरकी मृत्युकारक योगवाली होती है। अर्थात् पतिकी राशि के वर्ण से ऊँचे राशिवर्ण वाली पत्नी पतिकी मृत्यु कराती है। यदि कदाचित् ऐसा योग होने पर पुण्योदय से पति जीवित भी रहे तो उनके पुत्र जीवित नहीं रहता फिर कन्याका मेल मिलाते समय ऐसी महत्व की बातें देखने की बड़ी आवश्यकता है, परन्तु खेद की बात है कि आज कलके माता पिता जो अपनी अयोग्य सन्तान की भी शादी कर देना अपना परम कर्त्तव्य समझते हैं वे सन्तान के भावी सुख दुखकी ओर दुर्लक्ष कर मात्र धन पर ही दृष्टि डालते हैं। विवाह से पहले वर कन्या के विषय में जिन महत्वपूर्ण बातों के जानने की बड़ी जरूरत है और वर वधू के मेल मिलाने में जिन

दोषों को दूर करना माता पिता का परम कर्त्तव्य है उन बातों पर उपेक्षा करने से आज कौटुम्बिक जीवन की कैसी कदर्थना हो रही है यह बात किसी से छिपी नहीं है। दक्षिण, गुजरात व काठियावाड़ आदि देशों में बड़े २ कुटुम्बों में प्रत्यक्ष देखा गया है कि जो सांसारिक सुख की सामग्री सम्पन्न भी हैं आज व सुन्दर दम्पती सांसारिक या कौटुम्बिक सुख से सर्वथा वंचित रहकर प्रस्तुत दुःख का अनुभव करते हैं। यदि सच पूछो तो यह उन्हें अपनी या अपने माता पिता की भूलका प्रायश्चित्त करना पड़ता है। कार्य बिगड़ जाने पर जन्म पत्रिका दिखाते फिरना यह तो अज्ञानता की बात है, कार्य के प्रारम्भ में सब कुछ देख भाल कर सोच समझ कर कार्य किया जाय तो उतना पश्चात्ताप करने का समय नहीं आता जितना कि बिना सोचे समझे असावधानी से मात्र साहस द्वारा किये हुये कार्य के बिगड़ने पर करना पड़ता है।

जिस प्रकार हमने उपरोक्त नक्षत्रगण और राशि बन्धन दोष निवारण करने की आवश्यकता बतलाई है उसी प्रकार वर वधू के मेल में वय के दोष भी दूर करने की

जरूरत है और ऐसे ही ग्रहों के दोष दूर करने चाहियें। वर कन्याके मेल में आपस में विरोधी याने शत्रुभाव रखने वाला वर्ग और ग्रह अवश्य टाल देना चाहिये। चाहे इन बातों पर लक्ष दिया जाय या न दिया जाय परन्तु गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने वाले मनुष्य के लिये ये बातें बड़े ही महत्व की एवं परम उपयोगी हैं।

वर कन्या के नामाक्षरों में जो गुरु अक्षर हो उसके पांच अङ्क गिनो और जो लघु अक्षर हो उसके तीन तीन गिनो, परन्तु लम्बे चौड़े नाम को संक्षिप्त कर लेना चाहिये। यदि किसी के दो नाम गिने जाते हों तो पूर्वोक्त रीति से दोनों नामों के अक्षर गिन कर आधे निकाल डालो, फिर सबको मिलाकर तीन से भाग दो, यदि शेष में दो बचें तो वर की आयु वधू से लंबी समझो और यदि शेष में एक या शून्य रहे तो वधू की आयु लंबी जानो।

मेष, वृष, मकर कन्या, कर्क, मीन, तुला, ये सात राशि क्रमसे दश, तीन, अठाईस, पन्द्रह, पांच, सत्ताईस, एवं बीस अंश करके अनुक्रम से सूर्यादि के उच्च स्थान हैं। याने मेष में सूर्य उच्च है, वृष में चन्द्रमा उच्च है, मकर में मंगल उच्च है, कन्या में बुध उच्च है, कर्क में

गुरु उच्च है, मीनमें शुक्र उच्च है और तुला में शनि उच्च है।

मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धन, कुंभ, ये राशि पुरुष सञ्ज्ञक होने के कारण इनमें जन्मने वाला बालक तेजस्वी होता है और बाकी राशियों में जन्म पाने वाला सौम्य स्वभावी याने कोमल हृदय वाला होता है। विवाह से प्रथम वर वधू की राशियों में नीचे लिखी बातों पर भी अवश्य ध्यान देना चाहिये। निम्न राशियों में परस्पर प्रेम भाव रहता है। मेष वृश्चिक। मिथुन-कर्क। सिंह-मीन। तुला-वृष। धन-कर्क। कुंभ-कन्या। ये राशियां प्रीतिषडष्टक कहलाती हैं। मेष-मीन। मिथुन-वृष। सिंह-कर्क। तुला-कन्या। धन-वृश्चिक। कुंभ—मकर। इन राशियों को श्रेष्ठ द्विद्वादशक कहते हैं। ये नामानुसार सुख धारक होती हैं। वृष-कुंभ। कर्क-मेष। वृश्चिक-सिंह। मकर-तुला। कन्या-मिथुन। मीन-धन। ये राशियां दशम चतुर्थ श्रेष्ठतर कहलाती हैं। मेष-सिंह। वृष-कन्या। मिथुन-तुला। सिंह धन। तुला-कुंभ। वृश्चिक-मीन। धन मेष। मकर-वृष। ये राशि नव पंचम कहलाती हैं। मेष-कुंभ। वृष-मीन। मिथुन-मेष।

कर्क-वृष। सिंह-मिथुन। कन्या-कर्क। तुला-सिंह। वृश्चिक-कन्या। धन-तुला। मकर-वृश्चिक। कुंभ-धन। मीन-मकर। ये राशि शुभ तृतीयैकादश कहलाती हैं। कन्या और सिंह भी शुभ कहलाती हैं। कुंभ-मिथुन। मीन-कर्क कर्क-वृश्चिक। कन्या-मकर। ये मध्यम नव पंचम कहलाती हैं। वृश्चिक-तुला। मकर-धन। मीन-कुंभ। वृष-मेष। अशुभ द्विद्वादशक कहलाती हैं और कर्क-मिथुन। अशुभतर द्विद्वादशक कहलाती हैं। वृष-धन। कर्क-कुंभ। कन्या-मेष, वृश्चिक-मिथुन। मकर-सिंह। मीन-तुला। ये राशियां शत्रुषडष्टक कहलाती हैं। इनको वर्ज कर मेल मिलाना ठीक रहता है।

दम्पत्योः सह मरणं पाणिग्रहणोदिते केतौ।

केतु के उदय में विवाह करने पर वर वधू की साथ ही मृत्यु हो जाती है।

*मकरवृष मीन कन्या वृश्चिक कर्काष्ट मे रिपुत्वं स्यात्
अज मिथुन धन्वि हरि घट तुलाष्ट मे मित्रताऽवश्यम्

---

*मेष

मकर, वृष, मीन, कन्या, वृश्चिक और कर्क के अष्टमें याने इन राशियों से आठवीं आठवीं राशि में वैर भाव होता, है इस लिए इसको कर्णाष्टम कहते हैं। मेष, मिथुन, धन सिंह, कुंभ और तुलाराशि के अष्ट में याने इन राशियों में आठवीं आठवीं राशि में अवश्य मैत्र मित्र भाव होता है।

जब पुरुष का राक्षसगण हो और कन्या का मनुष्य गण हो तो उस पक्ष शुभराशिकूट, ग्रहों की मैत्री और योनी आदिकी शुद्धि होने पर वह शुभ माना जाता है। विसम राशि से छठे मृत्यु, आठवें सर्व सम्पति दूसरे बारहवें राशि में निर्धनता और स्वामी की मैत्री में लक्ष्मी प्राप्त होती है। अर्थात् जहां पर स्त्री पुरुष की या गुरु शिष्य की राशि परस्पर छटी आठवीं हो तो वह दोनों का षडष्टक नामक राशिकूट कहलाता है। इसी प्रकार दूसरी बारहवीं और नवमी पांचवीं राशि के सम्बन्ध में भी समझना। मेष, मिथुन, वगैरह विसम राशि से छटी राशि हो तो यह मृत्युषडष्टक कहलाता है, क्योंकि इन राशियों में परस्पर वैर भाव है। इसमें जिसकी आठवीं राशि हो उसकी मृत्यु होती है।, और यदि विसम राशि से

आठवीं राशि हो तो वह प्रीति षडष्टक कहलाता है।'
योंकि उन राशियों के स्वामियों में परस्पर मैत्री भाव है।

मातवें सातवें, दसवें चौथे और तीसरे ग्यारहवें राशि
ूट हों तो वह श्रेष्ठ समझना चाहिये, क्योंकि इन स्थानों में
रस्पर राशियों मे ही मैत्री भाव है। यदि राशि कूट
शुभ प्राप्त हो गया हो तो फिर ग्रहों की मैत्री देखने की
आवश्यकता नहीं रहती। परन्तु राशि कूट शुभ न मिला
हो तो ग्रहों की मैत्री अवश्य देखनी चाहिये। सप्तम-
सप्तम आदि राशि कूट में यदि एक ही स्वामित्व मिल जाय
तो वह सर्व श्रेष्ठ माना जाता है। यदि विवाहादि में दोनों
की राशि में परस्पर मैत्री भाव हो या दोनों राशियों के
स्वामियों में पारस्परिक मित्रता हो तो उन दम्पतियों का
लम्बा आयुष और आपस में प्रेम होता है। दोनों
की राशियों में एककी राशि का स्वामी मध्यस्थ हो
और दूसरे की राशि का स्वामी मित्र हो तो सुख मिलता
है। दोनों की राशि के स्वामी मध्यस्थ हों तो प्रीति
नहीं होती और यदि दोनों की राशिके स्वामी एक-
सम तथा एक वैरी हो तो उन्हें सुख नहीं मिलता।

भुवन विचार

जन्म कुण्डली के लग्न स्थान को पहला तनु भुवन या तनु भाव कहते हैं और उस पर से रूप, वर्ण, चिन्ह, सुख, दुख और साहस कर्म आदि जाना जाता है। लग्नसे बाईं तर्फ दूसरा स्थान धन भुवन या धन भाव कहलाता है और उस पर से धन संपत्ति के विषय में देखा जाता है। लग्न से बाईं तर्फ अनुक्रम से तीसरा स्थान बन्धु भुवन कहलाता है और उस पर से बन्धुओं के सम्बन्ध में जाना जाता है। इसी अनुक्रम से चौथा स्थान मित्र भुवन कहलाता है और मित्रों के सम्बन्ध की बातें उस परसे मालूम होती हैं। पंचम स्थान सुत भुवन कहलाता है और उस पर से सन्तान सम्बन्धी बातें जानी जाती हैं। छठा शत्रु भुवन कहलाता है और उस पर से शत्रुके सम्बन्ध में जाना जाता है। सातवां स्थान स्त्री भुवन कहा है और उस पर से स्त्री सम्बन्धी बातें जानी जाती हैं। आठवाँ स्थान मृत्यु भुवन कहलाता है और उस पर से आयुष्य के सम्बन्ध में जाना जाता है। नवम स्थान को भाग्योदय भुवन कहते हैं और उस पर से भाग्योदय कब होगा यह बात जानी जाती है। दशम स्थान को

कर्म भुवन कहते हैं और उस पर से वह कैसे कर्म करने वाला होगा इत्यादि जाना जाता है। ग्यारहवाँ स्थान लाभ भुवन कहलाता है और उस पर से आमद की बातें जानी जाती हैं, एवं बारहवें स्थान को व्यय भुवन कहते हैं और उस पर से खर्च का होना देखा जाता है।

प्रथम भुवन का कारक ग्रह सूर्य है, दूसरे का गुरु, तीसरे का मंगल, चौथे का चन्द्र और बुद्ध, पंचम का गुरु, छठे का शनि और मंगल, सातवें का शुक्र, आठवें का शनि, नवमे का सूर्य और गुरु, दशवें का गुरु, सूर्य, बुद्ध और शनि। ग्यारहवें का गुरु और बारहवें का शनि है इन बारह ही भुवन के कारक ग्रहों में से जन्म कुण्डली में जिस भुवन का ग्रह बलवान होकर बैठा होगा वह उस का पूर्ण रूप से शुभ फल देता है और यदि निर्बल होगा तो अशुभ फल देगा। जन्म कुण्डली मे जिस भुवन में जो ग्रह पड़ा होता है उस ग्रहके नाम का उस भुवन में मात्र प्रथम अक्षर ही लिखा होता है और यदि भुवनों में १-२ इत्यादि क्रमसे अंक देखने में आवें तो वे अंक राशि क्रम के समझिये। जन्म कुण्डली को देखने की रीति यह है कि जन्म लग्न को प्रथम भुवन समझ कर

क्रम से बाईं ओर दूसरा, तीसरा, चौथा, पाँचवाँ इत्यादि क्रम से बारह भुवन देखो ।

" नव ग्रह विचार "

सूर्य चन्द्र मंगल तथा बुध गुरु शुक्र हि धार ।
शनि राहु केतु कहा यह नव ग्रह विचार ॥

"नव ग्रहों का दिशा वास "

पूर्व सूर्य दिशि शुक्र की अग्नि कोण पिछान ।
दक्षिण दिशि मंगल बसे नैऋत्य राहू मान ॥
पश्चिम दिशि शनि जानिये वायव्ये शशि वास ।
उत्तर दिशि में बुध रहे गुरु इशान निवास ॥

" ग्रहों का स्वभाव गुण "

रवि, शशि, सुरगुरु, तीन ये सत्वगुणी पहचान ।
शुक्र और बुध दो कहे रजगुण प्रकृति प्रधान ॥
राहु केतु शनि भूमिसुत तमोगुणी हे जान ।
एक स्वभावी ग्रह मिलें तब ही तो बलवान ॥

जिस भुवन के स्वामी अस्तके हों, नीच राशि के हों, अपने शत्रु ग्रहों की राशि में हों, शुभ ग्रहों की दृष्टि में न हों एवं शुभ ग्रहों के साथ न हों, पाप ग्रहों के साथ या पाप ग्रहों की दृष्टि में हों और छठे, आठवें, बारहवें

स्थान में बैठे हों, या अल्पांशमें हों या क्रूर ग्रहोंके बीचमें हों या सन्धि में हों तो वे ग्रह निर्बल होनेके कारण अपनी राशि वाले भुवन या जिस भुवन में बैठे हों उस भुवनका यदि श्रेष्ठ फल हो तो उसका विनाश करते हैं और खराब फल हो तो उसे विशेष खराब बनाते हैं। जो ग्रह अपने मित्र ग्रहके स्थानमें अपनी राशिमें, उच्च राशिमें एवं मित्रके नवमांश में, अपने नवमांश में या उच्च राशिके नवमांशमें बैठे हों उन्हें बलवान ग्रह समझना चाहिये। जिस पर शुभ ग्रहोंकी दृष्टि हो एवं चन्द्रमा और शुक्र समराशि में तथा सूर्य, मंगल, बुध, गुरु और शनि, ये विसम राशिमें हों तो इन्हें बलवान समझना चाहिये। दो पाप ग्रहोंके बीचमें रहने वाला ग्रह निर्बल समझो और इसी तरह दो शुभ ग्रहोंके मध्यमें रहने वाले ग्रहोंको बलवान तथा स्वाधीन समझना चाहिये। परन्तु गुरु, शनि तथा राहू के मध्यमें रहने वाला ग्रह पाप योगका फल नहीं करता किन्तु जब शनि तथा राहू किसी भी ग्रहके आगे हों और सूर्य तथा मंगल पीछे हों तब मध्यमें रहने वाला ग्रह अधिक अनिष्ठ फल देता है। बलवान ग्रह शुभ हो या अशुभ वह अपना पूर्ण फल देता है।

(जन्म कुण्डली में पड़े हुए बलवान तथा निर्बल ग्रह निम्न लिखित अवधि पर अपना शुभाशुभ फल देते हैं। सूर्य बाईस से पचीस वर्षके भीतर, चन्द्रमा चौबीस से पचीस वर्षके अन्दर, मंगल अठाईस से बत्तीस वर्ष के भीतर, बुध बत्तीस से छत्तीस वर्षके अन्दर, गुरु सोलह से बीस वर्षके दरम्यान, शुक्र पच्चीस से अठाईस वर्ष तक, शनि छत्तीसते बैंतालीस वर्षके मध्यमें, राहू बैंतालीस से अड़तालीस वर्षके भीतर और केतु अड़तालीस से चौवन वर्षके दरम्यान अपना शुभाशुभ फल प्रदान करता है।)

जिस प्रकार नक्षत्रों के वर्ण और राशियों के वर्ण होते हैं उसी प्रकार पूर्वोक्त नवग्रहों के भी वर्ण होते हैं और वे निम्न प्रकार के हैं—गुरु और शुक्र ब्राह्मण, सूर्य मंगल क्षत्रिय, बुध, शनि शूद्र। चन्द्र वैश्य, राहू और केतु निषाद हैं।)

"वर्तमान ग्रहोंका फल"

सहज दशम पष्ठे लाभगे जाति सूर्ये
धन यश नृपमान्यं सर्वकार्येषु सिद्धिम्।

शुभमति मखिलार्थं बन्धु वर्गेपि सौख्यम्
सुत सुख लाभं च पुण्यवृद्धिं करोति ।

यदि जन्मराशि या नामराशि से तीसरा, छठा, दशवां, या ग्यारहवां वर्तमान सूर्य हो तो उसके फल स्वरूपमें धन एवं बुद्धिका लाभ हो, राज्यकी ओरसे सन्मान मिले, सब कार्योंमें सिद्धि प्राप्त हो, बहुत धन सहित कुटुम्बमें सुखकी प्राप्ति हो, पुत्र सुख, द्रव्यलाभ और पुण्यकी वृद्धि श्रेष्ठ सूर्यसे मिलती है । जन्मराशि या नामराशि से पहला, दूसरा, चौथा, पांचवां, सातवां, नवमा या दशवां सूर्य हो तो उसे बल हीन समझो । वह शरीर पीड़ा या रोगोत्पत्ति करता है । शोक, भय, प्रवास और द्रव्य हानि कारक समझना चाहिये ।

विपरीत सूर्यका खराब फल न होने देनेके लिए प्रातःकाल में स्नान करके स्वच्छ कपड़े पहन कर आसन पर बैठके सूर्यका सात हजार जाप करना चाहिये, इस से सूर्यकी शान्ति हो जाती है । लाल वस्त्र, गेहूं, सोना तांबा, लाल चन्दन और कमल वगैरह का यथा शक्ति दान भी करना चाहिये । जन्मराशि या नामराशि से यदि वर्तमान चन्द्रमा प्रथम, द्वितीय, तृतीय, षष्ठम, सप्तम,

दशम या एकादशम हो तो उसे अधिक श्रेष्ठ समझना चाहिये । यह धनका लाभ, मित्रका समागम, श्रेष्ठ विचारों में वृद्धि और धर्म-भावना पैदा करता है। जन्म राशि या नामराशि से चौथा, पांचवां, आठवां, नवमा, और बारहवां चन्द्र हो तो वह हानिकारक समझना चाहिये। शुक्ल पक्षमें जन्मराशि या नामराशि से दूसरी पांचवीं, या नवमी राशिमें चन्द्रमा हो और कृष्ण पक्ष में जन्म या नामराशि से चौथी, आठवीं या बारहवीं राशि में आवे तो वह शास्त्र कारोंने शुभचन्द्र माना है, श्रेष्ठ फलदायक कहा है। ज्यों माता शिशु रक्षा करती है त्यों वह उस मनुष्यका रक्षण करता है ।

यदि विपरीत चन्द्र हो तो उसकी शान्ति के लिए प्रातः काल में स्नानकर स्वच्छ वस्त्र पहन आसन पर बैठ के चंद्रमा का ग्यारह हजार जाप करना या कराना चाहिये और चावल, कपूर, चांदी, घी तथा श्वेत वस्त्रादि का दान करना चाहिये। अपनी जन्मपत्रिका में देखो, यदि जन्मराशि का जन्मपत्रिका न हो तो नामराशि से गिनो जो तीसरी छठी या ग्यारहवीं राशि में वर्तमान मंगल विराज मान हो तो धनका, सुवर्णका, वस्त्रका और जमीन का

लाभ होता है, शत्रुका नाश करता है, राजकी सहानुभूति पैदा कराता है और शरीर सुखके साथ हरएक प्रकार से फायदा पहुंचाता है। परन्तु इससे विपरीत यदि जन्म नामराशि से पहले, दूसरे, चौथे, पांचवे, सातवें, आठवें, नवमें, दशवें और बारहवें भावमें मंगल का वास हो तो शरीर में व्याधि, परदेश गमन और मित्रों के साथ विरोध पैदा करता है। विपरीत मंगल की शान्ति के लिए पूर्वोक्त प्रकार से स्वच्छ होकर दश हजार जाप करना या कराना चाहिये और मूंगा, गेहूं, मसूर की दाल गुड़, सोना, लाल वस्त्र और कनेरके पुष्पादिका दान करना चाहिये। जन्म या जन्मराशि से गिनने पर यदि दूसरे, चौथे, छठे, आठवें, दशवें और ग्यारहवें चालु बुध विराजित हो तो वह हरएक प्रकार से लाभ दायक समझिये। इससे विपरीत यदि पहले, तीसरे, पांचवें, सातवें, नवमें या बारहवें भावमें स्थित हो तो सुखका नाश, द्रव्य की हानि, कुटुम्ब में विरोध शरीर में पीड़ा, शत्रुओं के भयसे चिन्ता और मित्रोंका वियोग करता है। विपरीत बुध की शान्ति के लिए पूर्वोक्त प्रकार से स्वच्छ होकर चार हजार जाप करना या कराना चाहिये और काले

दशम या एकादशम हो तो उसे अधिक श्रेष्ठ समझना चाहिये। यह धनका लाभ, मित्रका समागम, श्रेष्ठ विचारों में वृद्धि और धर्म-भावना पैदा करता है। जन्म राशि या नामराशि से चौथा, पांचवां, आठवां, नवमा, और बारहवां चन्द्र हो तो वह हानिकारक समझना चाहिये। शुक्ल पक्षमें जन्मराशि या नामराशि से दूसरी पांचवीं, या नवमी राशिमें चन्द्रमा हो और कृष्ण पक्ष में जन्म या नामराशि से चौथी, आठवीं या बारहवीं राशि में आवे तो यह शास्त्र कारोंने शुभचन्द्र माना है, श्रेष्ठ फलदायक कहा है। ज्यों माता शिशु रक्षा करती है त्यों यह उस मनुष्यका रक्षण करता है।

यदि विपरीत चन्द्र हो तो उसकी शान्ति के लिए प्रातः काल में स्नानकर स्वच्छ वस्त्र पहन आसन पर बैठ के चंद्रमा का ग्यारह हजार जाप करना या कराना चाहिये और चावल, कपूर, चांदी, घी तथा श्वेत वस्त्रादि का दान करना चाहिये। अपनी जन्मपत्रिका में देखो, यदि जन्मराशि या जन्मपत्रिका न हो तो नामराशि से गिनो जो तीसरी छठी या ग्यारहवीं राशि में वर्तमान समस्त विराज मान हो तो धनका, सुवर्णका, वस्त्रका और जमीन का

सद्गृहस्थों के साथ समागम, द्रव्य प्राप्ति, पुत्र से सुख प्राप्ति कराता है। यदि छठे सातवें या दसवें स्थानमें हो तो शरीर पीड़ा, शोक, इच्छित कार्य में विक्षेप, चित्तमें चिन्ता और स्त्री के साथ विरोध कराता है। विपरीत शुक्र की शान्ति के लिये पूर्वोक्त प्रकार से शुद्ध होकर सोलह हजार जाप करना या कराना चाहिये और साथही रंग-बिरंगे वस्त्र, चांदी, सोना, चावल, चंदन और सुफेद पुष्प दान करना चाहिये। जन्म या नाम राशिसे तीसरे, छटे और ग्यारहवें स्थान में वर्तमान—चालू शनि हो तो वस्त्र, द्रव्यका लाभ कराता है, राज्य तथा मित्रकी ओर से लाभ प्राप्त हो, यश प्राप्ति हो और सब तरह के सुख प्राप्त हों। इससे विपरीत यदि पहले, दूसरे, तीसरे, चौथे, पांचवें, सातवें, आठवें, नवमें, दशवें और बारहवें हो तो वह स्वजनों के साथ क्लेश करता, द्रव्य की हानि करता है और शरीर में पीड़ा पैदा करता है। शनि विपरीत होने पर उसकी शान्ति के लिए पूर्वोक्त शुद्ध होकर प्रातःकाल में तेईस हजार जाप करना या दूसरे से कराना चाहिये और साथ ही उड़द, तेल, स्याम मणि, काला वस्त्र, भैंस, वगैरह यथा शक्ति दान करना चाहिये। पुस्तक बड़ी होनेके भयसे यहां

वस्त्र, कांसापात्र, मूंग, सुगन्धी वाले पुष्प और गोरोचन आदि का दान भी यथा शक्ति करना चाहिये। जन्म या नामराशि से दूसरे, पांचवें, सातवें, नवमें या ग्यारहवें भाव में गुरु रहा हुआ हो तो वह विशेष श्रष्ठ माना है। इससे द्रव्य का अधिक लाभ हो, मित्रोंके साथ प्रेमभाव रहे, सुख-सम्पत्ति, प्रतिष्ठा, सद्विचारों एवं हर प्रकार के वैभव की प्राप्ति होती है। सब ग्रहोंमें गुरुको सभी लोग सर्वश्रेष्ठ मानते हैं, परन्तु विपरीत स्थानों में आकर यह भी अपनी मेहर की नजर को दूर बना लेता है। जैसे पूर्वोक्त गिन्ती से यदि पहले, तीसरे, चौथे, छठे, आठवें, दशवें और बारहवें स्थान में गुरु हो तो वह विपरीत फल देता है। प्यारे मित्रोंमें एवं कुटुम्ब में विरोध कराता है और इच्छित कार्यमें विघ्न करता है। विपरीत गुरुकी शान्ति के लिए पूर्वोक्त प्रकार से स्वच्छ होकर उन्नीस हजार का जाप करना या कराना चाहिये और शक्कर, हल्दी, पीला धान्य, पीला वस्त्र, नमक, पीले पुष्प और सुवर्णादि का दान करना चाहिये। जन्म या नाम राशिसे पहले, तीसरे, चौथे, पांचवें, आठवें, नवमें और ग्यारहवें भुवन में शुक्र निवास करता हो तो श्रेष्ठ

काली कंबल, कस्तूरी और काला वस्त्र यथाशक्ति दान करना चाहिये।

"जैनरीतिसे विपरीत ग्रहोंकी शान्ति"

यदि सूर्य विपरीत हो तो लाल वस्त्र पहन कर लाल नवकार वाली लेकर निम्न प्रकार के मन्त्र को प्रतिदिन एक नवकार वाली गिनना।

"ओम् ह्रीं पद्मप्रभ नमस्तुभ्यम् मम शान्तिः"

इसके अलावा जब तक सूर्यकी दशा रहे तब तक लाल पुष्पों से पद्मप्रभ भगवान की मूर्तिकी पूजा करना। यदि चंद्रमा विपरीत हो तो सुफेद वस्त्र धारण कर और श्वेत ही रंगकी माला लेकर निम्न मंत्रकी एक माला रोज गिनना।

ओम् ह्रीं चंद्रप्रभ नमस्तुभ्यम् मम शान्तिः शान्तिः

तदुपरान्त जब तक चंद्र विपरीत हो तब तक हमेश तीर्थंकर की मूर्तिकी श्वेत पुष्पोंसे पूजा करना। यदि मंगल विपरीत हो तो लाल वस्त्र पहन कर लाल ही माला धारण कर निम्न लिखे मंत्रका एक मालासे रोज जाप करना और जब तक मंगल विपरीत रहे तब तक वासु पूज्य भगवान की लाल पुष्पोंसे पूजा करते रहना।

पर हमने शनिकी छोटी और बड़ी याने ढाई वर्ष और साढ़े सात वर्ष वाली दशाका फल नहीं लिखा है।

यदि जन्म या नाम राशिसे गिनने पर चालू राहु पहला, तीसरा, छठा, नवमां, दशवां, और ग्यारहवां आवे तो पुत्र, स्त्री और द्रव्यका लाभ कराता है एवं सब तरह से सुख प्राप्त कराता है परन्तु यदि दूसरा, चौथा, पांचवां सातवां, आठवां और बारहवां राहु हो तो वह हानिकर समझो। हानिकर राहुको शान्त करने के लिये पूर्वोक्त प्रकार शुद्ध होकर प्रातःकाल में अठारह हजार जाप करना या कराना चाहिये और काला वस्त्र, काले तिल, तेल तथा लोहा वगैरह का दान भी यथा शक्ति करना चाहिये। जन्म या नामराशिसे गिन कर पहले, तीसरे, छठे, नवमें, और ग्यारहवें में यदि वर्तमान केतु हो तो पुत्र, स्त्री और धनका लाभ कराता है और जो दूसरा, चौथा, पांचवां, सातवां, आठवां और बारहवां केतु आवे तो मृत्यु समान पीड़ा करता और द्रव्य हानिकर समझना चाहिये। इस विपरीत केतुकी शान्ति के लिए पूर्वोक्त प्रकार से शुद्ध होकर सुबह के वक्त सात हजार जाप करना या दूसरेसे कराना चाहिये और तिल, तेल,

काली कंबल, कस्तूरी और काला वस्त्र यथाशक्ति दान करना चाहिये।

'जैनरीतिसे विपरीत ग्रहोंकी शान्ति'

यदि सूर्य विपरीत हो तो लाल वस्त्र पहन कर लाल नवकार वाली लेकर निम्न प्रकार के मन्त्र की प्रतिदिन एक नवकार वाली गिनना।

"ओम् ह्रीं पद्मप्रभ नमस्तुभ्यम् मम शान्तिः"

इसके अलावा जब तक सूर्यकी दशा रहे तब तक लाल पुष्पों से पद्मप्रभ भगवान की मूर्तिकी पूजा करना। यदि चंद्रमा विपरीत हो तो सुफेद वस्त्र धारण कर और श्वेत ही रंगकी माला लेकर निम्न मंत्रकी एक माला रोज गिनना।

ओम् ह्रीं चंद्रप्रभ नमस्तुभ्यम् मम शान्तिः शान्तिः

तदुपरान्त जब तक चंद्र विपरीत हो तब तक हमेश तीर्थंकर की मूर्तिकी श्वेत पुष्पोंसे पूजा करना। यदि मंगल विपरीत हो तो लाल वस्त्र पहन कर लाल ही माला धारण कर निम्न लिखे मंत्रका एक मालासे रोज जाप करना और जब तक मंगल विपरीत रहे तब तक वासु पूज्य भगवान की लाल पुष्पोंसे पूजा करते रहना।

ओम् ह्रीं वासु पूज्य प्रभो नमस्तुभ्यम् मम शांति २
यदि बुध विपरीत हो तो पीले वस्त्र पहन कर और पीली ही नवकार वालीसे निम्न लिखित मंत्रकी प्रति दिन एक माला गिनना और जब तक बुधकी दशा रहे तब तक रोज शान्तिनाथ भगवान की मूर्तिकी पीले पुष्पों से पूजा करना।

ओम् ह्रीं शान्तिनाथ नमस्तुभ्यम् मम शान्ति २
यदि गुरु विपरीत हो तो पीले कपड़े पहन कर और पीली ही माला लेकर प्रतिदिन एक माला निम्न लिखे मंत्रकी गिनना और जब तक गुरुकी दशा रहे तब तक ऋषभदेव प्रभुकी पीले पुष्पोंसे रोज पूजा करना।

ओम् ह्रीं ऋषभदेव नमस्तुभ्यम् मम शांति शांतिः
यदि शुक्रकी दशा हो तो सुफेद कपड़े पहन कर और सुफेद ही माला लेकर निम्न लिखे मंत्रकी एक माला रोज गिने और जब तक शुक्र विपरीत रहे तब तक सुफेद पुष्पोंसे सुविधिनाथ प्रभुकी रोज पूजा करे।

ओम् ह्रीं सुवधिनाथ नमस्तुभ्यम् शांति शांतिः
शनिकी दशामें श्वेत वस्त्र पहन कर, श्वेत माला द्वारा प्रतिदिन निम्न लिखे मंत्रकी एक माला गिने

और जब तक शनि विपरीत रहे श्वेत पुष्पोंसे ही मुनिसुव्रत स्वामी की पूजा करते रहो।

ओम् ह्रीं मुनिसुव्रत नमस्तुभ्यम् मम शान्तिः २

यदि राहूकी दशा हो तो पीले वस्त्र पहन कर, पीली ही माला द्वारा निम्न लिखे मंत्रकी एक माला रोज और पीले ही पुष्पोंसे जब तक राहूकी दशा रहे नेमिनाथ प्रभुकी पूजा करो।

ओम् ह्रीं नेमिनाथ नमस्तुभ्यम् मम शाँतिःशांतिः

यदि केतुकी दशा हो तो लीले रंगके वस्त्र पहन कर और लीले ही रंगकी मालासे प्रतिदिन निम्न लिखित मंत्रकी एक माला गिनो और वैसे ही रंगके पुष्पोंसे पार्श्वनाथ प्रभुकी पूजा करो।

ओम् ह्रीं पार्श्वनाथ नमस्तुभ्यम् मम शान्तिः २

ग्रहशान्ति मंत्रकी जाप संख्या तो हम प्रथम बतला चुके हैं।

"चंद्र दिशाकास"

मेष सिंह धन पूर्वमें, बसे चंद्रमा खास।
वृष कन्या अरु मकर में, दक्षिण करे निवास।
मिथुन तुला अरु कुंभ में, पश्चिम दिशा प्रमाण,
मीन कर्क अरु वृश्चिके, घर उत्तर पहचान।

"सन्मुख तो धन के लिये, दहने सुखद सुमान,
बाम चन्द्र धन क्षय करे, पीछे मृत्यु जान।

"सन्मुखचंद्र की महिमा"

सक्रांति नक्षत्र के, वार करण तिथि दोष,
राहु केत्वादि शनि, हो चाहे रविरोष।
और किसी भी दोष का, करना नहीं विचार,
सन्मुख हो यदि चंद्रमा, सकल दोष परिहार।
निज राशि हो कर्कमें, या निज ऊंची राश,
चंद्र श्रेष्ठ फल जानिये, घर मनमें उल्लास।
पड़े जन्म में चन्द्रमा, पुष्टी करे हमेश,
द्वितीय हो धन सुख दे, फल ठ नहीं लवलेश।
यदि हो तीजे में शशि, मिले राज्य सन्मान,
चौथा तो कलह करे, पंचम मति हैरान।
छटा देव धन धान्य को, सप्तम दे संतोष,
अष्टम प्राणों को हर, नवम करावे रोष।
दशवें कारज नीपजे, एकादशा सुखकार,
द्वादशवां शशि जानिये, निश्चय मृत्युकार।

"परधन प्राप्ति योग"

मास आठवें ऊंच का, गुरु पूर्ण बलि होय,

जरा न संशय मानिये, पर धन पावे सोय।
वृष्य तुला या मीन में, शुक्र आठवें देख,
वह नर पर लक्ष्मी वरे, मिटे न भावी लेख।
चौथे में शनि ऊंच का, या निज घर में जाय,
तो स्थावर मिल्कत उसे, मिले अचानक आय।
चौथे में यदि ऊंचका, शुक्रहि करे निवास,
मंगल की दृष्टि विना, पर संपति की आश।

"योगिनी विचार"

पीछे वांच्छित दायिनी, वाम रही सुख दाय,
दहिने योगिनी धन हरे, सम्मुख लेती खाय।

एकम नवमी को योगिनी पूर्व दिशा में रहती है। द्वितीया और दशमी को उत्तर दिशामें योगिनी वास करती है, तृतीया और एकादशी को अग्निकोण में रहती है, चतुर्थी और द्वादशी को नैऋत्य कोणमें वसती है। पंचमी और त्रयोदशी को दक्षिण दिशा में रहती है, छठ और चतुर्दशी को पश्चिम में, सप्तमी और पूर्णिमासी को वायव्य कोण में रहती है, तथा अष्टमी और अमावस्या को योगिनी ईशान कोणमें रहती है।

प्रवास करने वालेको घरसे निकलते समय योगिनी को अपने पीछे या बांई ओर रख कर चलना शुभकारक

है। सम्मुख तथा दहने हाथ रही योगिनी प्रवासी को कष्ट दायक होती है।

प्रयाण करते समय यदि सूर्य प्रवासी के दहनी ओर हो तो धर्मारक दोष, विष्टि दोष, व्यतिपात दोष और शनिश्चरम्यदोषादि भी कुछ असर नहीं करते, याने सूर्य के अनुकूल होने पर ये क्षुद्र दोष अपना कुछ भी बल नहीं बतला सकते। परन्तु प्रवेश के समय सूर्यको बाईं तरफ शुभ कारक समझना चाहिये।

रात्रिके अन्तिम पहर से लेकर दो दो पहर तक सूर्य पूर्वादिक चारों दिशाओं में गमन करता है। अर्थात् रात्रिका अन्तिम पहर और दिनका पहला पहर ये दो पहर तक सूर्य पूर्वदिशा में गमन करता है, दिनके मध्य भागमें दो पहर तक दक्षिण में गमन करता है, दिनके अन्तिम पहर में रात्रिके पहले पहरमें सूर्य पश्चिम दिशामें गति करता है और रात्रिके मध्यभाग के दो पहर तक सूर्य उत्तर दिशामें रहता है। शास्त्रमें कहा है कि—

"अयाय दक्षिणे राहुर्योगिनी वामतः स्थिता।
पृष्ठतो द्वयमप्येसश्चन्द्रमाः सम्मुखः पुनः"

दहने राहु जयके लिए, बांये योगिनी जयके लिए और ये दोनों यदि पीछे हों तो भी शुभकारक हैं, परन्तु चन्द्रमा तो सम्मुख और दहने ही विशेष शुभकर एवं लाभदायक है। शुभकर्मके लिए गमन करने वाले मनुष्यको योगिनी अपने पीछे और चन्द्रमा सम्मुख लेना श्रेष्ठ है।

पाश तथा काल का स्वरूप लिखते हुये आरम्भ सिद्धिकार फरमाते हैं कि कृष्णपक्ष की एकम से महीने का आरम्भ होता है। महीने की तीसों ही तिथियों को आठ से भाग देने पर जो शेष बचे उसे पूर्व दिशामें रखना, उसके बादकी तिथियों को अनुक्रम से अग्निकोणादि में रखना, अन्तिम तिथि जिस दिशामें आवे उसमें पाश समझना चाहिये। इस हिसाब से कृष्णपक्ष की षष्ठी-छठ को पूर्वदिशामें पाश आता है, 'सप्तमीको अग्निकोण में पाश जानना। इसी अनुक्रम से गिनने पर चतुर्दशी को ऊर्ध्वदिशामें और अमावस्या को अधोदिशामें पास होता है। फिर शुक्लपक्ष की एकमको पूर्वदिशामें आयगा। पूर्वदिशा, अग्निकोण, दक्षिणदिशा, नैऋत्यकोण, पश्चिम दिशा, वायव्यकोण, उत्तर दिशा, ईसानकोण ऊर्ध्वदिशा और अधोदिशा इन दशों ही दिशाओं के क्रमसे कृष्ण

पंचमी छठ और शुक्लपक्षकी एकम तथा एकादशी को पाश पूर्वदिशामें रहता है। यदि सप्तमी और शुदि द्वितीया को तथा द्वादशी को पाश अग्निकोणमें समझना चाहिये यदि अष्टमी और शुदि तृतीया तथा त्रयोदशीको दक्षिण में पाश होता है, यदि नवमी और सुदि चौथ तथा चतुर्दशी को पाश नैऋत्यकोणमें जानना, यदि दशमीको तथा शुदि पंचमी और पूर्णमासीको पश्चिम दिशामें पाश समझना चाहिये, यदि एकादशी और एकमको तथा शुदि छठको वायव्य कोणमें पाशा जानना, यदि द्वादशी और द्वितिया तथा शुदि सप्तमीको उत्तर दिशामें पाश ईशान कोणमें होता है, यदि चतुर्दशी तथा चौथको और शुदि नवमीको पाश ऊर्ध्व दिशामें रहता है और यदि अमावस्या तथा पंचमीको एव शुदि दशमीको पाश अधोदिशामें रहता है।

जिस दिशामें पाश होता है बिल्कुल उसके सामनेकी दिशामें काल जानना चाहिये। कितनेएक विद्वानोंका मत है कि जिस दिन जो वार हो उस वारसे लेकर अनुक्रमसे सातों वारोंको पूर्वादिक दिशाओंमें रखने पर जिस दिशामें शनिवार आवे उस दिशामें काल समझना चाहियें। और उसके सामनेकी दिशामें पाश जानना चाहिये।

पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नै०	अधः	ऊर्ध्व
वदि ६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	३०
सुदि १	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
११	१२	१३	१४	१५	वदि १	२	३	४	५

उपरोक्त यंत्र से दशों ही दिशाओं में वदि तथा सुदि पक्ष की तिथियों में काल जानना। शुभ कार्यार्थ गमन करने वाले मनुष्यको काल और पाश अपने सम्मुख न लेने चाहियें। यदि प्रयाण करते समय बांई तरफ पाशादि हों और दहिनी ओर काल हो तो शुभ कारक समझना चाहिये।

दिक् शूल और विदिक् शूलका कोष्टक निम्न प्रकार है—

पूर्व दिक्—सोम शनि	अग्निकोण—रवि गुरु
दक्षिण दिक्—गुरु	नैऋत्यकोण—सोम शुक्र
पश्चिम दिक्—रवि शुक्र	वायव्यकोण—मंगल शनि
उत्तर दिक्—मंगल बुध	ईशानकोण—बुध

गमन करते समय इस प्रकार दिक् शूल और विदिक् शूल त्याज्य है, वैसे ही नक्षत्र दिक् शूल भी परि-

स्याज्य है, इस लिये प्रसंग से नक्षत्र दिक् शूल भी निम्न लिखे मुजब समझना चाहिये—ज्येष्ठा, पूर्वाषाढ़ा और उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में पूर्व दिशा में नक्षत्र दिक् शूल होता है। विशाखा, श्रवण, धनिष्ठा और पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में दक्षिण दिशा में दिक् शूल होता है। रोहिणी और मूल नक्षत्र में पश्चिम दिशामें और उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में उत्तर दिशामें दिक् शूल समझना चाहिये। नक्षत्र दिक् शूल में प्रयाण करने से मार्ग में मरणान्त कष्ट आता है। प्रयाण करने के दिनसे नवमें दिन श्रेष्ठ नक्षत्र होने पर भी नगर प्रवेश न करना चाहिये और नगर में प्रवेश करने के दिनसे नवमे दिन प्रयाण करना भी निषेध्य है।

"भाग्योदय योग"

रवि हो ऊंचा स्वगृही, जन्म काल में मित्र,
भाग्योदय हो वर्ष में, बाइस पुण्य पवित्र।
चन्द्र ऊँच हो स्वगृही, चौबीसे बलवान,
लक्ष्मी भी अतुला लहे, होवे बुद्धिमान।
मंगल स्वगृही ऊंच में, अष्टा विंशति मान,
पामर भी विक्रमी बने, लक्ष्मी की नहीं हान।

बुध हो स्वगृही ऊंच में; बत्तीसे बलवन्त,
बुद्धि से लक्ष्मी वरे, कर निरधनता अन्त।
गुरु स्वगृही यदि ऊंचका, हो सोलह सुखकार,
राज्य ऋद्धि वह भोगता, मान पान श्रीकार।
शुक्र स्वगृही ऊंच का, पंचविंशति होय,
तिरिया सुत रथ पालकी, धन पावे नर सोय।
शनि स्वगृही हो ऊंच में, सत्ताइस सुखकार,
हिम्मत में हारे नहीं, बल बुद्धि दातार।

"विद्या योग"

पंचम स्वामी एकला, या बुध गुरु के सँग,
षष्टम अष्टम बारवें, करता विद्या भंग।
मंगल शशि यदि लग्नमें, बुधकी दृष्टि होय,
विद्या धन पावे नहीं, मूर्ख निखट्टू सोय।
चन्द्र और लग्नेश को, यदि ले मंगल देख,
तस विद्या आवे नहीं, हीन बुद्धि नर लेख।
पँचमपति हो स्वगृही, अथवा केन्द्री जान,
या नव में घर जा बसे, तो नर हो विद्वान।
पंचमस्वामी लग्न में, अथवा चौथे मान,
मिथ्या मत जानो जरा वह नर हो विद्वान।

स्याज्य है, इस लिये प्रसंग से नक्षत्र दिक् शूल भी निम्न लिखे मुजब समझना चाहिये—ज्येष्ठा, पूर्वाषाढा और उत्तराषाढा नक्षत्र में पूर्व दिशा में नक्षत्र दिक् शूल होता है। विशाखा, श्रवण, धनिष्ठा और पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में दक्षिण दिशा में दिक् शूल होता है। रोहिणी और मूल नक्षत्र में पश्चिम दिशामें और उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में उत्तर दिशामें दिक् शूल समझना चाहिये। नक्षत्र दिक् शूल में प्रयाण करने से मार्ग में मरणान्त कष्ट आता है। प्रयाण करने के दिनसे नवमें दिन श्रेष्ठ नक्षत्र होने पर भी नगर प्रवेश न करना चाहिये और नगर में प्रवेश करने के दिनसे नवमे दिन प्रयाण करना भी निषेध्य है।

"भाग्योदय योग"

रवि हो ऊंचा स्वगृही, जन्म काल में मित्र,
भाग्योदय हो वर्ष में, बाइस पुण्य पवित्र।
चन्द्र ऊंच हो स्वगृही, चौबीसे बलवान,
लक्ष्मी भी अतुला बढ़े, होवे बुद्धिमान।
मंगल स्वगृही ऊंच में, अष्टा विंशति मान,
पामर भी विक्रमी बने, लक्ष्मी की नहीं हान।

बुध हो स्वगृही ऊंच में; बत्तीसे बलवन्त,
बुद्धि से लक्ष्मी वरे, कर निरधनता अन्त।
गुरु स्वगृही यदि ऊंचका, हो सोलह सुखकार,
राज्य ऋद्धि वह भोगता, मान पान श्रीकार।
शुक्र स्वगृही ऊंच का, पंचविंशति होय,
तिरिया सुत रथ पालकी, धन पावे नर सोय।
शनि स्वगृही हो ऊंच में, सत्ताइस सुखकार,
हिम्मत में हारे नहीं, बल बुद्धि दातार।

"विद्या योग"

पंचम स्वामी एकला, या बुध गुरु के सँग,
षष्ठम अष्टम बारवें, करता विद्या भंग।
मंगल शशि यदि लग्नमें, बुधकी दृष्टि होय,
विद्या धन पावे नहीं, मूर्ख निखट्टू सोय।
चन्द्र और लग्नेश को, यदि ले मंगल देख,
तस विद्या आवे नहीं, हीन बुद्धि नर लेख।
पँचमपति हो स्वगृही, अथवा केन्द्री जान,
या नव में घर जा बसे, तो नर हो विद्वान।
पंचमस्वामी लग्न में, अथवा चौथे मान,
मिथ्या मत जानो जरा वह नर हो विद्वान।

बुध चौथे या लग्न में, लग रहे लग्नेश,
बुद्धि धन पैदा करे, झूठ नहीं लवलेश।

"दानी धर्मी योग"

चौथा दशवां नवम का, स्वामी, केन्द्री होय,
गुरु दृष्टि यदि डारवें, निश्चय दानी सोय।
स्वगृही हो या ऊचका, शुभ से विंध नवमेश,
विक्रम सम दानी बने हो धर्मज्ञ विशेष।

"कुमार योग"

मंगल बुध शशि शुक्र भी, तिथि एकम छटसार,
पंचमी दशमी और भी, तिथि एकादश धार।
अश्विनी रोहिणी अरु मघा, पुनरवसु शुभ कार,
हस्त विशाखा श्रवण भी, करलेना सुम्मार।
मूल पूरवा भाद्रपद, हों ये शुभ सयोग,
कारज में सिद्धि मिले, हर्षित हों सब लोग।

"स्वरगमन योग"

उत्तर पूर्व गमनमें, रवि स्वर सुखद पवित्र,
चन्द्र स्वरे संपति मिले, पश्चिम दक्षिण मित्र।

"काल राहू"

रवि गुरु पूरब में रहे, दक्षिण शुक्र हि सोम,

शनिको उत्तर में वसे, वसे पश्चिमे भोम ।

पीछे वांये सुखकरे, सकल कार्य में सिद्ध,

सम्मुख दहने दुख करे, राहूकाल प्रसिद्ध ।

नक्षत्र तिथि वार दिशाशूल

सोम शनिश्चर बुध तथा, प्रतिपद नवमी जान,

मूल श्रवण अरु ज्येष्ठ में, विघ्न पूर्व दिशि मान ।

पूर्वा भाद्रप अश्विनी, आर्द्र धनीष्ठा देख,

भृगुको पंचमी तीज में, दक्षिण वर्जित लेख ।

रोहिणी पुष छट चौदशी, मंगल गुरु रवि वार,

पश्चिम दिशा विवर्जे कर, गमना गमन विचार ।

उत्तर फाल्गुनी हस्त भी, द्वितीया दशमी धार,

सूर्यवार बुध भोम में, उत्तर विघ्न निवार ।

भटकाया वन रामको, चली पटका पातार,

लङ्कापति रणमें दला, कौरव दल संहार ।

"यमघंट योग"

सूर्यवार को तो मघा, शशिको जान विशाख,

बुध मंगल को मूल में, घंट योग यम भाख ।

वार गुरु तज कृत्तिका, को भृगु रोहिणी जान,

और हस्त शनिवारमें, यम घंटा तू मान ।

"मूसका फल"

परदेशी नहीं बाहुरे, विघ्न विवाह होय,
और प्रतिष्ठा वास्तु या, निश्चय मृत्यु सोय।

"तिथि वार वर्जित योग"

पड़वा थांवर परिहरो, दोयज को भृगुवार,
तृतीया को रवि वर्जिये, चौथ तजो बुधवार।
पंचमी को मंगल तजो, छठी शुक्र में जान,
ऐसे तिथि अरु वारको, वर्जित करो प्रमान।

" विरुद्ध योग "

रवि विशाखा अरु मघा, जेष्ठा भरणी जान,
बारस चौदस सप्तमी, योग विरुद्ध हि मान।
सोम विशाखा उत्तरा-षाढ़ा चित्रा देख,
छठ तेरस एकादशी, योग विरुद्ध हि लेख।
भोम धनिष्ठा आदरा, पूर्वाभाद्र प्रसिद्ध,
उत्तरषाढ़ा संगसे, एकम दशम विरुद्ध।
बुध भरणी अश्विनी तथा, मूल धनिष्ठ विचार,
तृतीया नवमी योगसे, योग विरुद्ध प्रचार।
गुरु मृगसिर अरु कृत्तिका, अष्टमी चौथ निवार,
आद्रा उत्तरा फाल्गुनी, रोहिणी शतभिशा वार।

शुक्र रोहिणी ज्येष्ठ या, पुष्य और अश्लेश,
मघा संग दोशत मिलें, योग विरुद्ध हमेश।
शनि अश्विनी रेवती तथा, भरणी उत्तरा दोय,
चित्रा उत्तारा फाल्गुनी, योग देत सुख खोय।
छठ सातम तिथि यदि मिले, योग विरुद्ध बखान,
शुभ कारजमें सुख नहीं, विघ्नकार ये जान।
गमन करे तो घर तजे, व्यापारे नुकसान,
ज्ञानी हानि त्यागते, ना समझे अज्ञान।

" मृत्यु योग "

मंगल औ रविवार को, नन्दा तिथि विचार,
छठ एकम एकादशी, इन तिथियों को धार।
शुक्र सोम भद्रा कही, बारस सातम द्वीज,
बुध को जया सुजानिये, आठम तेरस तीज।
चौथ नवम चौदश तथा, रिक्ता तिथि विचार,
इनमें मृत्यु योग हो, यदि होवे गुरु वार।
वार शनिश्चर पूर्णिमा, पंचमी दशमी सार,
ये पूर्णा मृत्यु करें, सर्व कार्य तिथि वार।
अनुराधा रविवार को, उत्तराषाढ निशीश,
मंगल शतभिश बुध तथा, अभिजित शुक्रसुनीश।

अश्विनी गुरु मृगसिर तथा, शनि हस्त पहचान,
समझ लीजियेगा इन्हें, हरदम रखिये ध्यान।
इनमें मत शुभ काम कर, सुखी नहीं हो लोग,
वार तिथि नक्षत्र ये, सहचर मृत्युयोग।

" ज्वालामुखी योग "

पड़वा में तज मूलको, पंचमी भरणी धार,
नवमी रोहिणी कृत्तिका, अष्टम तिथि विचार।
दशमी में अश्लेष तू तज करता हूँ सांच,
पुरे तिथि नक्षत्र ये, हैं ज्वालामुखी पांच।
जन्मे तो जीवे नहीं, बसे तो उज्जेड़ होय,
नारी पहने चूड़ियां, निज करको दे खोय।
बोवे तो काटे नहीं, कुवे न निपजे नीर,
ये ज्योतिष के चुटकले, धरो हिये में धीर।

" राशिवार अवयोग "

सूर्य तुला मत गमन कर, सोम मिथुन मत जाय,
मगल कर्क न पग धरो, बुध कुमी न सुहाय।
गुरु कन्या में भी कभी, मत छोड़ो निज धाम,
कन्यामें तज शुक्रको, हो चाहे शत काम।
मीन शनिश्चर घर रहो, करो न कभी प्रयान,
विद्वानों के वचन ये, सुनलो धरके ध्यान।

" सिद्ध योग "

रवि अष्टमी अश्विनी तथा, हस्त पुष्य निरधार,
मूल धनिष्ठा उत्तरा, तीन जान सुखकार।
सोम नवमी दशमी श्रवण, पुष्य रोहिणी सार,
मृगसिर शतभिष सुखद हैं, करें दुःख संहार।
मंगल अष्टमी तीज छठ, तेरस मूल सुहाय,
मघा उत्तरा भाद्रपद, अश्लेषा दुख जाय।
बुध द्वितीया अरु द्वादशी, मृग अनुराधा पुष्य,
कृत्तिका रोहिणी कार्य में, करें सदा संतुष्य।
गुरु [1]दश पंचमी पूर्णिमा, पुनरवसु सुविशाख,
अश्विनी [2]राधा रेवती, पुष्य सुखाशा राख।
शुक्रत्रयोदशी छठ तथा, ग्यारस पड़वा देख,
श्रवण पुनरवसु अश्विनी, रेवती चित्रा पेख।
शनि चौदश नवमी तथा, चौथ श्रवण हितकार,
पूर्वाफाल्गुनी औ मघा, स्वाती जय जयकार।
पड़वा छठ एकादशी, शुक्र में नन्दा जान,
बारस सप्तमी दूजको, बुध में भद्रा मान।
शनि चौदस नवमी तथा, रिक्ता चौथ पिछान,

१ दशमी २ अनुराधा

गुरु पूर्ण पूनम दशम, पंचमी करो मिलान।
इनमें से यदि योग हो, फल करता कर काज,
सिद्ध योग ये जानिये, करें सिद्ध सब काज।

"सिद्धियोग"

सूर्य मूल नक्षत्रमें, सोम श्रवणमें मान,
उत्तरा कृतिका सोम बुध, सोच समझ धर ध्यान।
पुनरवसु भृगु जानिये, स्वाती शनि निरधार,
ज्योतिष से पहचानिये, सिद्धि योग विचार।

"अमृत सिद्धियोग"

हस्त रवि मृगसिर शशि, मंगल अश्विनी वार,
पुष्य गुरु शनि रोहिणी, शुक्र रेवती सार।
पुष्य गुरु तो ब्याहमें, शनि रोहिणी प्रयाण,
अश्विनी भौम प्रवेशमें, अमृत वर्जित जान।
हो विष्टी व्यतिपात या कोई अन्य कुयोग,
उसने को सीधा कर, अमृत सिद्धि योग।

"दत्तक पुत्रका योग"

सप्तम अथवा पांचवें, में शनि मंगल होय,
पर ग्रहदृष्टि सग बिन, हो पर दत्तक सोय।
चंद्र शनि को देखता, १था सगदृष्टि पाय

ऐसी कुंडली का शिशु हो पर गोदी जाय।

पांचवें यदि लग्नेश हो, लग्नमे पंचम जाय,

गोदी ले पर पुत्र को, सेठ बड़ा सुख पाय।

पहला पंचम बारवें, छठे आठवें जान,

शुभ ग्रहदृष्टि योग से, दत्तक ले सुख मान।

पाप राशि में चंद्र हो, पांचवां नवमें देख,

लग्न पति [3]नव पांचवें, दत्तक पुत्र सुलेख।

पंचम को शनि चंद्रमा, देखें दृष्टि खोल,

दत्तक सुत लेना पड़े, बुध दृष्टि ले मोल।)

(माता मृत्यु योग

राहू बुध शनि शुक्र भी, सूर्य संग धनराश,

साथ हि लेकर पुत्रको, माता मृत्यु खास।

बारह षट पापीग्रह, शुभ[2]सह दृष्टि न होय,

निश्चय माता मौत हो, नहीं बचावे कोय।

तीजे अथवा सातवें, वसे सूर्य यदि जाय,

मंगल हो यदि लग्नमे, वर्ष स्वर्ग सिधाय।

तीन पाप ग्रहचंद्रको, देखें दृष्टि डाल,

१—शनिके साथ या शनि की दृष्टि मे हो। २—बारहवें और छठे में पापी ग्रह हों और उनके साथ न तो शुभ ग्रह हो न शुभ की दृष्टि हो। ३—नवममें भुवनमें हो या पाचवें में हो।

शुभग्रह परिसंग बिन हो माता का काल।
द्वितीये शनि लग्ने गुरू सप्तम राहु विलोक,
मात बाप परलोकको बालक करते शोक।
चतुर्थेश लग्नेश भी, शशि निबल क्या काम,
पुत्र गर्भप्रसव नहीं बाप मात यमधाम।
क्षीण कलाका चंद्रमा अष्टम भाव बसन्त
या पापी के संग हो या छठवें शोमन्त।
अथवा बारहवें बसे, होकर के स्वच्छन्द
माता तब इस लोकको सुरपुर कर पसन्द।

(पितामृत्यु योग"

शनि लग्नमें सप्तमें, मंगल छठवें चन्द,
मृत्यु होवे बापकी, होवे दुःख अमन्द।
सूर्य पापग्रह सम हो, या पापिन के बीच,
रवि से सप्तम पापग्रह, पिता मृत्युकर नीच।
दश मंगल रवि सातवें, बारवें राहू आप,
मुश्किल से जीवे पिता, पीड़ा महती पाय।
शत्रु ग्रहकी राशिमें, मंगल दशवें भाव,
शुभग्रह दृष्टि गत बिन, पितृ मरणप्रभाव
भाग्य स्वामी हो बारवें, बारवां नवमें देख,
वर्ष पचासिस बाप की, तब तू आयु लेख।

छटवें शशि शनि लग्नमें, सातवें मंगल योग,
शुभग्रह दृष्टि संग विन, पिता मृत्यु का भोग।
चौथे दशवें बारवें, पापग्रहों का वास,
मात पिता दोनों मरें बालक पावें त्रास।
मंगल शनि यदि राहु भी, नवम ग्यारवें पेख,
पिता मरे मा रांड हो, मिटे न भावी रेख।
भाव दूसरे में कभी, सूरज मंगल वुद्ध,
और शनिश्चर जा मिले, इसी भाव में शुद्ध।
ये चारों ग्रह ठीक हों, हो गुरु पहिले गेह,
पिता पुत्रके व्याह में मरे न कुछ सन्देह।)

लक्ष्मीयोग

लग्नपति औ धनपति, जिसके तनु में जाय,
भुजवलसे वह नर सदा, लक्ष्मी लेत कमाय।
ये दोनों ग्रह साथ में, रहें दूसरे भाव,
मिले अचानक सम्पदा, तसघर हो उत्साव।
ये दोनों यदि जा करें, भाव तीसरे वास,
मिले सम्पदा बन्धुसे, वस उस नर को खास।
जो ये चौथे जा पड़ें, देखो धर कर ध्यान,
माता से लक्ष्मी मिले ऐसा करो बयान।

हों ये सप्तम भाव में, तब तू ऐसा जान,
यह नर अपने पुत्र से होवेगा धनवान।
छठे भाव में भाग्य से, हो यदि इनका वास,
तब तू निश्चय जानिये, शत्रुसे धन नाश।
हों ये सप्तम भाव में, बचन मान यह खास,
पुण्योदय से वह करे, स्वसुर संपदा प्राप्त।
मंद भाग्य वश ये कभी, अष्टम करें निवास,
तो जीवन पर्यन्त तू, तज दे धनकी आस।
जो ये नवमें स्थान में, अपना करें मुकाम,
तो वह धन हर काममें, प्राप्त करे धनधाम।
दशवें में स्थिरता करें, धनपति औ लग्नेश,
राज काज से ही उसे लक्ष्मी मिले हमेश।
एकादशवें भुवन में, जो ये वास करन्त,
धन पावे व्यापार में, हो यदि उद्यमवन्त।
अगर द्वादशे भाव में, होवे इनका वास,
खर्च करावें खूब ये, रहे नहीं धन पास।
इस विध यह धन भाव फल, शुभग्रह शुभ फल जान,
शुभ पर शुभ की दृष्टि हो, शुभफल अधिक मान।
पापीग्रह हो भुवन में, पापग्रहों से दृष्ट,
तो यह निश्चय मानिये, करे विशेष अनिष्ट।

"दरिद्रता योग"

चार केन्द्र में पापग्रह, या धन पापी जान,
होरारत्नी यों कहे, उसे दरिद्री मान।
सूर्य शनिश्चर साथ हों, शुक्र संग में जाय,
तो वह निश्चय मानिये, धन विन धक्के खाय।
धनमें जिसके शनि रवि, उसे दरिद्री देख,
शनि मंगल के योग से, अति दरिद्री लेख।

तिथि नक्षत्रकी वर्जनीय अन्तिम घड़ी"

तिथि और नक्षत्र की, अन्तिम घटिका तीन,
वर्जनीय शुभकार्य में, क्योंकि ये गुण हीन।

राशि जानने का तरीका"

अश्विनीसे नक्षत्र गिन, जिसको चालू देख,
अंक उसी नक्षत्र का, चार गुण कर लेख।
नवसे उसको भाग दे, अंक बचे जो शेष,
सो गत राशि जानिये, झूंठ नहीं लवलेश।
अंक बाद की राशि जो, जितनो बढ़ गई होय,
तो उस दिन नक्षत्रके, चरणे समझो सोय।
याने उस दिन राशिमें, समझो सोच अमंद,
उस दैनिक नक्षत्रके, चरण में चालू चंद।

दैनिक ग्रह फल (हरि गीत)

गत मिति गतवार गिनके नाम अक्षर द मिला,
सब अंक करके एक फिर तू भाग नवसे दे भला।
गर शेष में रहे एकहो रवि दुःख दायक जानिये,
यदि दो बचें तो सहज ही शशि सौम्य सुखकर मानिये।
हों तीन तो मंगल दुखद औ चारमें राहु बुरा
रहें पांच तो गुरु सुखद है छहमें शनी दुख की धुरा।
जो सात बाकी के रहें तो बुध बड़ा सुखकार ह,
गर आठ आवें शेष तो फिर केतु दुःख विकार है।
हों शून्य बाकी का रहे तो शुक्र शुभ फल द सदा
इस गतदिवसे यो तिलकने ग्रहफल विगत दैनिक कही

दैनिक ग्रह दशा जानने का तरीका

हरएक मनुष्य को समझना चाहिये कि जब अपनी राशि का सूर्य लगा हो पचांग में देखकर उस रोज से बीस दिन तक सूर्य की दशा रहेगी और सूर्य की दशामें धन हानि होती है। तीसरी राशि में सूर्य को दस दिन व्यतीत करने तक चंद्र की दशा पचास दिन रहेगी और उसमें धर्म व धनका लाभ होगा। चौथी राशिमें सूर्य को चार दिन व्यतीत करने तक बुध की दशा छप्पन दिन तक रहेगी और उसमें वैभव की प्राप्ति होती है। सातवीं

राशि में सूर्य दस दिन व्यतीत करे तब तक छत्तीस दिनकी शनि की दशा रहेगी और वह मंदगति कारक है। नवमी राशिमें सूर्यको आठ दिन व्यतीत करने तक गुरु की अट्ठावन दिनकी दशा रहेगी और यह हरएक प्रकार से सुख सम्पति देने वाली होती है। दशवें राशि में सूर्य बीस दिन बितावे तबतक बैतालिस दिनकी राहू की दशा रहेगी और यह वध बन्धन कारक होती है। बारहवीं राशिके दिन पूरे होने तक सत्तर दिनकी शुक्रकी दशा रहेगी और यह सब तरह से इष्ट फल सिद्धि दायक होगी।

वर्तमान साल में लाभ हानि जानने की कुञ्जी

अपनी जन्म पत्रिका देखकर निश्चय करो, आपकी उम्र में आपको जितनेवां वर्ष चल रहा हो उस वर्षकी संख्या लिखो, जन्म कुंडली में जिस राशिका चन्द्रमा हो उस राशि की संख्या लिखो और जिस नक्षत्र में जन्म हुआ हो उस नक्षत्र की संख्या लेकर सब एकत्रित करलो, फिर सारी रकम को तीन जगह रक्खो। अब एक जगह की रकम को दो से गुणाकार कर सातसे भाग दो। दूसरी जगह की रकम को चारसे गुणाकार कर आठसे

भाग दो और तीसरी रकम को तीन से गुणाकार कर छः से भाग दो। शेष बचे हुवे परसे नीचे मुजब फल समझो। पहली और तीसरी रकम को भागाकार करने पर शेष में शून्य रहे तो वर्तमान सालमें आपको कष्ट की सम्भावना समझो। दूसरी रकम के शेष में शून्य रहे तो धन नाश हो। यदि पहिले और दूसरे एव दोनों शेष में शून्य रहे तो या दूसरे और तीसरे शेषमें इन दोनों में ही शून्य रहे तो दुःख और धन नाश हो। यदि तीनों ही जगह के शेष में शून्य हों तो उस वर्षमें अपनी मृत्यु समझनी चाहिये इससे विपरीत में सुखकारी समझो।

(किस २ नक्षत्र में प्रारम्भ हुई बीमारी कितने दिन तक रहेगी यह बात जानने के लिये पचांग में चालू दैनिक नक्षत्र देखकर नीचे मुजब समझो।

रेवती भद्र अनुराधिका, बचें कष्ट से प्रान,
स्वर आषाढा तथा, मास एक दुख मान।
मघा बीस दिन वश करे, हस्त पंच दस जान,
स्वास्थ प्राप्त निश्चय करे, मानो वचन प्रमाण।
मूल अश्विनी कृतिका, और विशाख धनिष्ट,
नव दिन दुख देय सही, होवे नहीं अनिष्ट।

चित्रा श्रवण स्वतारिका, भरणी सौम्य स्वभाव,
ग्यारह दिन रोगी रहे, फिर नहीं आवे ताव।
पूर्वा फाल्गुनी उत्तरा भाद्र अभीजित योग,
पुष्य पुनरवसु जानिये, उतने ही दिन रोग।
आर्द्रा अश्लेषा त्रिका, पूर्वा स्वाती धार,
नन्दा रिक्ता तिथिन में, भौम शनि रविवार।
रोग ग्रहस्त होवे कभी, मुक्त कभी ना होय,
धन्वन्तरी रक्षा करे, विरला जीवे कोय।

निम्न राशि वालों को कालान्त नक्षत्र

पूर्वा त्रिक नक्षत्र में, होय रोग का योग,
मेष राशि वाला सदा, बने मृत्यु का भोग।
वृष राशि तो हस्त में, स्वाती मिथुन सुजान,
कर्क राशि अनुराधिका, निश्चय मृत्यु मान।
कन्या राशि श्रवण में, तुला स्वतारा होय,
वृश्चिक राशि रेवती, मृत्यु न संशय कोय।
पूर्वा पाढा सिंहको, धन भरणी पहचान,
रोगी हो जीवे नहीं, कर मृत्यु सामान।
मकर राशि को रोहणी, कुम्भ आदरा खाय,
अश्लेषा तो मीन को, यमपुर तक लेजाय।

लग्न विचार

भूत भविष्यत वर्तमान ये तीन काल बतलाते हैं,
ज्योतिष शास्त्रपट शास्त्र शिरोमणि बिना भाग्य नहीं आते हैं।
जिसका जन्म हो मेष लग्न में क्रोध युक्त और महा विघ्न,
सब कुटुम्बसे विरोध रखता रक्तनेत्र रहता निर्धन।
करे गुरु की भक्ति सनातन जिसके होवे वृष लगन,
शास्त्र दुशाले तरह तरहके पहने कंठमें आभूषन।
मिथुन लग्नके चतुरे बालक किसीसे नहीं शरमाते हैं,
भूत भविष्यत वर्तमान ये तीन काल बतलाते हैं।
कर्क लग्नक कृश अति अंगी रोग उदर में बीमारी,
सिंह लग्न में महा पराक्रमी है करी नागकी असवारी।
कन्या लग्नका होवे नपुंसक रोवे बाप और महतारी,
तुला लग्न में तसकर खेले जुआ हारे अपनी नारी।
वृश्चिक लग्नके दुष्ट पदारथ आप अकेले खाते हैं—
भूत-भविष्यत—
धीतिमान सब गुणो सुघड़ नर जिसका लग्न होता है धन,
मकर लग्नमें मंद बुद्धि हो अति अंगमें जिनके मदन।
कुंभ लग्न का पूत बने अवधूत रातदिन करे भजन,
मीन लग्नक सुतका जीना मर्त्यलोकमें महा कठिन।

नहीं किसी का दोष कर्म अपने का नर फल पाते हैं,
भूत भविष्यत वर्तमान ये तीन काल बतलाते हैं।

परस्पर मित्र सम तथा शत्रु ग्रह

शशि मंगल गुरु सूर्यके, मित्र सुबुध सम जान,
शुक्र शनि मार्तण्डके, दोनों शत्रु मान।
बुध सूरज दोनों सदा, चंद्रसु मैत्री चाव,
शुक्र शनि मंगलगुरु, ये जानो समभाव।
मंगलके गुरु चंद्रमा, सूरज मित्र सुनेक,
शुक्र शनि सम जानिये, बुध को शत्रु लेख।
सूर्य शुक्र दोउ मित्र हैं, बुध शशि शत्रु सोय,
मंगल गुरु शनि सम हुये, इस विधि मैत्री होय।
चंद्र सूर्य मंगल सदा, गुरु के मित्र बखान,
शनि सम समझो शुक्र बुध, धरते शत्रु ध्यान।
शनि बुध मित्रहि शुक्रके, सम मंगल गुरुवास,
सूर्य चंद्र दो शुक्रके, शत्रु समझो खास।
शनि से बुध औ शुक्र भी, रखते मैत्री भाव,
गुरु सम रवि शशि भूमि सुत, तकते शत्रु दाव।
ग्रह में दोनों ओरके, तीन भुवन ग्रहवास,
सत्वर वे मैत्री करें, कहे ज्योतिषी खास।

राशि गृह की मित्रता, जन्म कुण्डली देख,
होते हैं अधि मित्र गृह समको मित्रहि लेख।
शत्रु शत्रु गृह जब मिलें, अधिक शत्रु तब धार,
शत्रु मित्र मिल सम बनें, देखो ज्योतिष सार।
मित्र और जब सम मिलें, तो बन बैठें मित्र,
शत्रु सम मिल शत्रु हो, कहता शास्त्र पवित्र।

बारह राशियों के स्वामी

मंगल वृश्चिक मेषका वृष तुल शुक्र सुजान
कन्या मिथुन हि बुध कहा कर्क चन्द्रमा मान।
सिंह राशि का रवि पति कुम मकर शनि होय
धन राशि अरु मीनका स्वामी सुरगुरु सोय।

ग्रहों का राशि भ्रमण काल

मेष कर्क कन्या वृषा सिंह राशि दिन ईश
पांचों राशि में फिरे सूरज दिन इकतीस।
तुला कुंभ वृश्चिक धना मीन रहे दिन तीस
उनतिस दिन रहे मकर में मिथुन बीच पचीस।
सक्रांति जिस राशिकी, सूर्य उदय जब देख,
गिन करके उस राशिको, लग्न ज्योतिषी लेख।
दो दिन एक पहरतक, चन्द्र रहे इक राश,

पैंतालिस दिन शान्तिसे, मंगल करे निवास।
बीस दिवस पन्द्रह घडी, बुध जी का शुभ वास।
गुरू त्रयोदश मास तक, शुक्र एक ही मास।
दोय वर्ष षट मास तक, शनि इक राशि ठाम,
करे अठारह मास लो, राहू केतु मुकाम,
तीस अंश पूरा करे, राशिमें हर एक,
फिर दूजी राशि चरे, ग्रह जानो प्रत्येक।

उच्चके ग्रह

सूर्य अंश दश मेष मे, चन्द्र तीन वृष शुद्ध,
अठाइस मंगल मकर, पन्द्रह कन्या बुद्ध।
गुरू कर्क पंचम कहा, शुक्र सताइस मीन,
शनी बीस तुलमें भला, राहू मिथुने तीन।
धनमे केतू एक ही, अंश कहा शुभ कार,
उच्चो ग्रह ये जिसके पड़ें, कर देवें पौ बार।
यदि निज ऊंची राशिसे, सप्तम राशि देख,
उसे ऊंच मत जानिये, उसको नीचा लेख।

सौम्य क्रूर या शुभाशुभ ग्रह

चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्र ये सौम्य या शुभ ग्रह कहलाते हैं और सूर्य, मंगल, राहू एवं शनि ये क्रूर पापी

या अशुभ ग्रह मान जाते हैं। जन्म कुण्डली में किसी भी भाव या सूत्र में रहा हुआ शुभ ग्रह शुभफल करता है। और किसी भी भाव में रहा हुआ अशुभ ग्रह अशुभ फल देता है। यदि शुभग्रह पर अन्य शुभग्रह की दृष्टि हो तो वह विशेष शुभ फल देता है और यदि उस पर किसी अशुभग्रह की दृष्टि हो तो वह मध्यम शुभ फल देता है। इसी प्रकार अशुभ ग्रह पर अन्य अशुभ ग्रह की दृष्टि पड़ती हो तो वह अधिक अशुभफल देता है और यदि शुभग्रह की दृष्टि पड़ती हो तो वह मध्यम अशुभ फल देता है। शुभग्रह होते हुए भी क्षीण कलाका चन्द्रमा अशुभ फल देता है। सुदि एकमसे लेकर नवमी तक मध्यम कला का चन्द्रमा होता है। एकादशी से लेकर यदि पंचमी तक पूर्ण कलावान चन्द्रमा समझना चाहिये और यदि षष्ठी से लेकर अमावस्या तक क्षीणकला चन्द्रमा माना जाता है। हर एक ग्रह अपने रहने के स्थान से तीसरे और दशवें स्थान को चतुर्थांश दृष्टि से देखता है और फल भी उतने ही प्रमाण में देता है। नवमें और पांचवें को आधा अंश देखता है एवं फल भी उतने ही प्रमाण में देता है। चौथे और आठवें स्थान को पौना अंश देखता है एवं फल भी

उतने ही प्रमाण में देता है। अपनेसे सातवें भाव को प्रत्येक ग्रह पूर्ण दृष्टि से देखता है और वहां पर फल भी संपूर्ण देता है। यह बात और विशेष समझना कि शनि तीसरे और दशवें भाव को भी पूर्ण दृष्टि से देखता है। गुरु नवमें और पांचवें भाव को तथा मंगल चौथे और आठवें स्थान को भी संपूर्ण दृष्टि से देखता है। साथ में यह भी समझिये कि कोई भी ग्रह अपने से पहिले दूसरे, ग्यारहवें और बारहवें भुवन को बिल्कुल नहीं देखता।

(जन्मकुण्डली में सातवां भुवन स्त्री सम्बन्धी सुख दुख के साथ सम्बन्ध रखता है, अतः हम यहां पर संक्षेप से उसके विषय में खास जानने योग्य बातें लिखते हैं। सातवें भाव या भुवन में सूर्य, मंगल, राहू और केतुका होना नितान्त खराब है। यदि इन चारों ग्रहों में से कोई सा भी ग्रह सातवें भाव में आ बैठे तो वह स्त्री सुखका बाधक होता है। बाकी के ग्रह स्त्री सुखके बाधक नहीं हैं। सातवें में शुक्र और गुरुका होना बहुत ही अच्छा माना गया है। ये सुन्दर शीलवती सती स्त्रीकी प्राप्ति करते हैं। ज्यों सातवें भुवन में सूर्य, मंगल, राहू और केतु का होना स्त्री सम्बन्धी अनिष्ट फलदायक कहा है

स्त्री सातवें भुवन में इन ग्रहोंकी दृष्टि भी अनिष्ट कारक है। यदि सातवें भुवन पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो उसे रूपवती स्त्रीकी प्राप्ति अवश्य होती है परन्तु वह स्त्री शील से विभूषित नहीं होती। जिसकी जन्मकुण्डली में सातवें भुवन में शुक्र की दृष्टि पड़ती हो वह मनुष्य स्त्री के सुख सहित लम्बी आयुष्य भोगता है। जिसके सातवें भुवन में गुरुकी दृष्टि हो वह मनुष्य स्त्री और पुत्रके सहित प्रतिष्ठित एवं धर्मी व धनवान होता है। सातवें भुवन में शुक्र की दृष्टि का भी यही फल समझना चाहिये। जन्मकुण्डली में यदि शनि की नजर पड़ता हो तो वह स्त्री के लिये हानिकर है और उस कुंडली वाले के लिये भी शारीरिक पीड़ा कारक है।)

निम्न नक्षत्रों में जन्म होना शुभ माना है।

अश्विनी, भरणी, रोहिणी, पुनर्वसु, पुष्य, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी चित्रा, स्वाती अनुराधा पूर्वाषाढा, अभिजित्, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वा भाद्रपद, उत्तराभाद्रपद और रेवती। इन पूर्वोक्त नक्षत्रों में पैदा होनेवाला बालक हरएक प्रकार से सुखी समुन्नत और शुद्ध होता है। कृत्तिका, मृगशिरा, आर्द्रा, अश्लेषा,

हस्त, और जेष्ठा एवं मूल इन पूर्वोक्त नक्षत्रो मे जन्म लेने वाला बालक कृतघ्न खराब प्रकृति वाला समझना चाहिये। जेष्ठा और मूल नक्षत्र के चारों ही चरण जन्म लेने वाले तथा उनके माता पिता सगे सम्बन्धियों तक को हानि कारक है।

(जन्म राशि के चन्द्र का फल।

मेष राशि के चन्द्र मे जन्म लेने वाला बालक धन धान्य भोग परोपकार मे प्रेम रखने वाला, धर्मी प्रमाणिक और क्रोधकी प्रकृति वाला होता है और यदि शुभ ग्रह चंद्रमा पर दृष्टिपात करते हों तो अस्सी वर्षकी आयु भोगने वाला, कार्तिक मासके कृष्ण पक्षकी नवमी तथा बुधवार के दिन अर्धरात्रि के समय मस्तक की पीडा का अनुभव करते हुये स्वर्ग गमन करता है।

वृषभ राशि के चंद्र मे पैदा होने वाला बालक स्वाभिमानी सत्य वक्ता कामी, परोपकार रसिक, माता पिता तथा स्त्री के कथनानुसार वर्तने वाला और संतोष वान एवं सभा चतुर होता है। यदि शुभग्रह चंद्र को देखते हों तो वह शान्त स्वभावी, शूर वीर और सहन शील पुरुष लम्बी आयु को भोग कर माघ मास शुक्ल पक्ष रोहिणी नक्षत्र में स्वर्गागमन करता है।

मिथुन राशि के चक्रमें जन्म लेने वाला बालक मिष्टान प्रिय, सुशील प्रीतिवान, मानन्दी, स्वभाव वाला, पहली अवस्था में सब तरहके सुख भोगने वाला, मध्यम अवस्थामें मध्यम सुखी, अन्त अवस्था में दुःखी, अल्प सन्तान वाला, दा स्त्री वाला, गुरु प्रिय और गुणवान होता है। वह बुद्धिमान् मनुष्य लम्बी आयु व्यतीत कर वैशाख माह में दिन के समय हस्त नक्षत्र में स्वर्ग जाता है।

कर्क राशिके चक्रमें पैदा होने वाला बालक परोपकार रसिक, संग्रही, पुत्रवान, धनवान, माता पिता की सेवा में तत्पर और स्त्री के वशवर्ति होता है। राशिके पहिले भाग में जन्मा हो तो कम आयु और निर्धन होता है। दूसरे भाग में पैदा हुआ मध्यम आयुष्य और सुखी तथा अन्तिम भाग में पैदा होने वाला धर्मी, धनवान एवं विद्वान होता है। वह मिष्ट भाषी पुरुष लम्बी आयु भोग कर माघ मासके शुक्ल पक्ष रोहिणी नक्षत्र में इस संसार से प्रयाण करता है।

सिंह राशिके चक्रमें जन्मा हुआ धन धान्य भोगी, विद्वान, परदेश गमनमें प्रेम रखने वाला, बड़ी आँखों वाला, क्रोधयुक्त स्वभाव, अल्प संतान वाला

और शत्रु पर विजय पाने वाला होता है। यदि चंद्रमा को शुभग्रह देखते हों तो वह चतुर नर लम्बी आयु भोग कर फाल्गुन मास कृष्ण पक्ष जलमें समाधि लेकर परलोक गमन करेगा ।

कन्या राशिके चंद्रमें जन्मने वाला अपने सगे सम्बन्धियों को सुख देने वाला, धन धान्य भोगी, गुरु भक्त, मिष्ट भाषी, धर्म प्रिय, पुत्र पुत्रियों वाला, होता है। यदि चंद्रको शुभग्रह देखते हों तो पूर्ण आयु भोगकर चैत्र मासके कृष्ण पक्षमें स्वर्गको जाता है।

तुला राशि के चंद्रमामें जन्म लेने वाला मानव समाज में सन्मान पाने वाला, सर्व वस्तुओंका संग्रह करने वाला, अनेक प्रकार के भोग भोगने वाला, धर्मभाव रखने वाला, अनेक नौकर रखने वाला, धनवान, बुद्धिमान् चतुर, राज्यमें सम्मान प्राप्त करने वाला, मिष्ट भोजन में प्रेम रखने वाला, दो स्त्रियों वाला, माता पिताकी भक्ति करने वाला, व्यापार में लाभ प्राप्त करने वाला, अल्प सन्तान तथा अल्प बन्धुओं वाला, स्त्रीके कथन में चलने वाला, और देवताओं में भक्ति रखने वाला होता है । उस मनुष्य को सातवें वर्षमें अग्नि भय

होता है, आठवें वर्षमें बुखार, पीड़ा, बारहवें में पानी से भय होता है। यदि चंद्रमाको शुभ ग्रह देखते हों तो पचासी वर्षका आयुष्य पूर्ण करके वैशाख मासके शुक्ल पक्षमें अश्लेषा नक्षत्रमें अष्टमीके दिन स्वर्ग-गमन करता है।

वृश्चिक राशिके चंद्रमें जन्म लेने वाला शत्रुओं पर आक्रमण करने वाला, क्रोधी स्वभाव वाला, लड़ाई में प्रेम रखने वाला, निरालस वादी, मित्रका तिरस्कार करने वाला, सतोष रहित, बुद्धिमान, शुभ लक्षण युक्त दूसरे के कार्यमें विघ्न डालने वाला, पराक्रम वाला, गुप्त पाप करने वाला, चार भाइयों वाला, दो स्त्रियों वाला होता है। उस मनुष्यका तीसरे वर्षमें अग्नि भय पांचवें या पंद्रहवें वर्षमें बुखार पीड़ा और पचीसवें वर्षमें घात आती है। यदि चंद्रमाको शुभग्रह देखते हों तो वह लम्बी आयु भाग कर जेठ मासके शुक्ल पक्ष हस्त नक्षत्रमें दशमीके रोज लगभग अर्धरात्रि के समय स्वर्ग सिधारता है।

धन राशि के चंद्र में जन्म लेने वाला मनुष्य बुद्धिमान, धर्म भावना वाला, विनीत पुत्रों वाला, राज

की तरफ़ से सन्मान पाने वाला, मिष्टभाषी, गुरु जनों की सेवा करने वाला, तमाम वस्तुओं का संग्रह करने वाला, वक्ता, कवि, भाग्यवान, कुलवान, श्रेष्ठ मित्रों के साथ मित्रता करने वाला, नम्रता वाला, शान्त स्वभावी परन्तु असत्य बात पर शीघ्र क्रोध करने वाला, संतति-वान, श्रेष्ठ बन्धुओं वाला, और तेरह वर्ष में पीड़ा भोगने वाला होता है। वह मनुष्य लगभग साठ-सत्तर वर्षकी आयु भोग कर और यदि चंद्रमा को शुभग्रह देखते हों तो इससे भी लंबी आयु समाप्त कर अषाढ मास के कृष्ण पक्ष में हस्त नक्षत्र में रात्रि के समय पंचमी को स्वर्ग वास करता है।

मकर राशि के चंद्र में जन्म पाने वाला मनुष्य धैर्य और श्रेष्ठ बुद्धिमान होने पर भी क्लेश कारी, पुत्र-वान, राजमान्य, दयालु, सत्यवक्ता, चतुर, सदाचारी, प्रमादी, शरीर में तिलके लक्षण वाला, पांचवें वर्ष में पीडा भोगने वाला, और सातवें वर्ष में जल से भय पाने वाला होता है। पच्चीसवें वर्ष में शारीरिक पीड़ा पावे, पैंतीसवें वर्ष में अग्नि भय हो और लगभग अस्सी-पचासी वर्ष की आयु भोग कर वह श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की दशमी के दिन ज्येष्ठा नक्षत्र म मृत्यु प्राप्त करता है।

कुम्भ राशि के चन्द्र में जन्मने वाला उदारचित्त वाला, दानी, मिष्टभोजी, धार्मिक कार्य करने वाला,

मिष्टभाषी, वीरशरीर वाला, थोड़ी सन्तति वाला, दो स्त्रियों वाला, कामी, पवि मार्ग में विन्न वाला, पांचवें वर्ष में अग्निभय वाला, बारहवें वर्ष में सर्प से भयवाला तथा अठारहवें वर्ष में चोरी से भयवाला होता है। वह मनुष्य लम्बी आयु भोगकर भाद्रव मास में कृष्णपक्ष की चौथ के दिन रोहिणी नक्षत्र में मृत्यु प्राप्त करता है।

मीन राशिके चन्द्र में जन्मा हुआ मनुष्य धनवान सन्मानित, सुन्दर शरीरवाला, नम्रस्वभावी, भोला, प्रसन्न चित्तवाला, माता पिता आदि गुरुजनोंकी सेवा करने वाला, उदार दिल, सुरूपवान होता है। वह मनुष्य बाईसवें वर्षमें कष्ट पावे, चौबीसवें वर्षमें पूर्व दिशामें प्रयाण करे। लंबी आयु भोग कर अन्त में आश्विन मास कृष्ण पक्षमें द्वितीया के दिन कृत्तिका नक्षत्रमें सन्ध्या समय इस लोकको त्याग कर स्वर्ग सिधारता है।)

"जन्म कुण्डली पर से जन्म समय की गुप्त बातों का परिज्ञान"

यदि जन्म के समय तुला, वृश्चिक, कुंभ, मेष और कर्क लग्न हो तो समझो कि जिस घर में बालक का जन्म हुआ है उस घर का दरवाजा पूर्व दिशा तरफ

था। यदि कन्या; धन; मीन और मिथुन लग्न हो तो उत्तर दिशामें; वृषभ लग्न हो तो पश्चिम दिशा तरफ और सिंह या मकर लग्न हो तो जन्म घरका द्वार दक्षिण दिशामें समझो। लग्न और चंद्रमाके बीच जितने ग्रह हों जन्म लेने वाले बालक की माता के पास जन्म समय उतनी ही स्त्रियां मौजूद थीं और जन्म कुंडलीमें जन्म लग्न से सातवें भुवन तक जितने ग्रह हों उतनी ही स्त्रियां जन्म समय उस घरमें जाननी चाहियें। एवं आठवें से बारहवें भाव तक जितने ग्रह हों उतनी स्त्रियां घरके बाहर समझनी चाहियें। यदि जन्म लग्न में चंद्रमा पड़ा हुआ हो तो जन्मके समय बालक की माता के पास एक भी स्त्री नहीं थी। मेष और मीन लग्न हो तो दो स्त्रियां, वृष और कुम्भ लग्न हो तो चार स्त्रियां, मकर, मिथुन, धन और कर्क हो तो पांच और सिंह, कन्या, तुला एवं वृश्चिक लग्न में जन्म हो तो माता के पास तीन स्त्रियां मौजूद थीं। यदि चंद्रमा शनि की राशि में हो या उसके नवमांश में हो या लग्न से चौथे भुवन में हो या चंद्र को शनि देख रहा हो अथवा जलचर राशि-मीन, कर्क, मकर में चंद्र रहा हो किंवा चंद्रके साथ में शनि रहा हो तो

समझो कि उसका जन्म अन्धेरे में हुआ है। परमें उस समय दीया भी न था। जन्म कुंडली में तीन या इससे अधिक ग्रह नीच के हों तो जन्म देने वाली माता ज़मीन पर सो रही थी। पहले सातवें भुवन में पापग्रह पड़े हों या चौथे भुवन में पड़े हों तो जन्म काल समय माता को अति पीड़ा होती है। जन्म कुण्डली में जिस भाव में राहु पड़ा हो उस दिशा तरफ़ ही बालक का जन्म समय मस्तक था। जिस भुवन में सूर्य हो उस दिशा में दीपक रक्खा था। जिस भुवनमें शनि हो उस दिशा तरफ़ चक्की या अन्य कुछ लोहेका छोटा मोटा शस्त्र पड़ा था। दिशाओं का खुलासा इस प्रकार है—जन्म लग्न को पूर्व दिशा, चौथे भुवन को उत्तर दिशा, सातवें भुवन को पश्चिम दिशा और दशवें भुवन को दक्षिण दिशा मानी है।

स्त्रियों की जन्म कुंडली देखनी हो तो लग्नसे यश, तेज और संपत्ति देखना। पांचवें भुवन से सन्ततिका सुख, दुख देखना, सातवें भुवन से पतिका सुख दुख। नवम भुवन से वैराग्य, प्रव्रज्या और आठवें भुवन से वैधव्य देखा जाता है। बाकी के भुवनों का एवं अन्य

योगों का फलादेश पुरुषों के समान ही समझना चाहिये।
स्त्री के जन्म लग्न में चंद्रमा और शुक्र की राशि हो वो वह स्त्री रूप लावण्य एवं सद्गुणों से आनन्द प्राप्त करने वाली होती है। यदि जन्म लग्न में गुरु या बुध की राशि हो वो वह स्त्री सूक्ष्म कलाओं में निपुण होती है। यदि लग्न में गुरु, बुध और शुक्र हों तो वह औरत सब जगह अपने सद्गुणों से ख्याति प्राप्त करती है। यदि जन्म कुंडली के पांचवें या नवमें भुवन में गुरु हो या केन्द्र में स्वगृही हो अथवा उच्चका हो तो वह वनिता श्रेष्ठ आचार वाली, सदाचारी पुत्रोंको जन्म देने वाली और अपने नैतिक गुणोंसे सुख संपन्न हो दोनों कुलमें यश प्राप्त करती है। लग्न पर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो हुन्नर में कुशल, सरल मानशाली, संपत्ति से सुखी और सुसंस्कारी, सुन्दर रूप लावण्यवती होती है। अगर उसके जन्म लग्न में कर्क राशिका चंद्र पड़ा हो या शुक्र, गुरु, बुध एवं चंद्र बलवान हो तो वह स्त्री अनेक प्रकारके शास्त्रोंका अभ्यास करती है और कलाओं में कुशलता प्राप्त, चतुरा तथा तेजस्विनी और ख्याति प्राप्ति करने वाली होती है। चौथे भुवन-

में पापग्रह हो तो उस स्त्रीके विशेष लड़के होते हैं। परन्तु लग्न में धन या कर्क राशि हो तो उसे पुत्रों और पतिकी ओर से दुःख होता है। वह दरिद्रता का भी अनुभव करती है। यदि लग्न में वृष, सिंह, वृश्चिक या कन्या राशि हो और पंचम स्थानमें चंद्र पड़ा हो तो वह स्त्री अल्प संतति वाली होती है। अगर आठवें भुवन से नवमें भुवन में पापग्रह हो या लग्न से आठवें भुवन में हो तो उदासीन अवस्था में रहने वाली होती है। यदि उपरोक्त स्थानों में शुभ ही ग्रह पड़े हों तो वह भाग्यवती और सुखी होती है। यदि लग्न और चंद्रमा दोनों विषम राशि के हों तो वह स्त्री रूपवती एवं शीलवती होती है। अगर लग्न और चंद्रमा सम राशि के हों और शुभग्रह की दृष्टि हो या शुभग्रह साथ में हो तो चतुरा, साध्वी समान सुशीला और संपत्ति शालिनी होती है। यदि सातवें भुवन में कोई निर्बल ग्रह पड़ा हुआ हो और उस पर किसी पापीग्रह की नजर पड़ती हो तो उस स्त्रीका पति खराब आचरण वाला समझना चाहिये। यदि नवमांश कुंडली में सातवें भुवन में सूर्य अपनी राशि में हो तो उस स्त्रीका पति मधुर

वचन वाला, नरम स्वभावी और शौकीन समझना चाहिये। चंद्रमा हो तो सुखी, मंगल हो तो अपनी स्त्री पर प्रेम न रख कर अन्य स्त्री लंपट, बुध हो तो विद्वान, गुरु हो तो एक स्त्री वाला, जितेंद्रीय, शुक्र हो तो सुन्दर देहवाला, एवं कामी और यदि सातवें में शनि पड़ा हो तो उस स्त्री का पति बूढा होता है। जन्म कुण्डली के सातवें भुवन में जो राशि हो यदि वही राशि नवमांश कुंडली के लग्न में हो तो उस स्त्री को सुन्दर देहवाला, गुणवान और गंभीर पति मिलता है। अगर अपने नवमांश में सातवें भुवन में शनि हो तो निखट्टू-मूर्खपति प्राप्त होता है। स्त्री की जन्म कुंडली में छठे, आठवें और बारहवें स्थान में नवम स्थान का स्वामी तथा गुरु दोनों पड़े हों तो उसका पति आयुष्य रहित होता है, याने वह शीघ्र ही वैधव्य प्राप्त करती है। अगर केन्द्रमें हों, याने पहले, चौथे, सातवें और दशवें या त्रिकोण में-पांचवें और नवमें में ये दोनों विराजते हों तो उसका पति लम्बी उमर वाला और धनवान होता है। नवम भुवनका स्वामी गुरु, बुध या चौथे भुवन के स्वामी के साथ हो तो उस सुन्दरी को विद्वान पति मिलता है, मंगल या

शनि साथ में हो तो किसान जैसा और राहु या केतु साथ हों तो लुच्चा, लफंगा पति मिलता है, एवं छठे भुवन का स्वामी हो तो उसका पति चोरोंका सरदार होता है। अगर सूर्य सातवें भुवन में हो तो उसे गौरवर्ण वाला, कामी, चन्द्र हो तो रूपवान, गुणवान, दुर्बल शरीर वाला, मोसी एवं रोगी, मंगल हो तो गंभीर, पापक कार्य करने वाला, आलस्यवान, जल्दी बोलने वाला और लालरंग-वाला, बुध हो तो विद्यावान, गुणवान, धनाढ्य और शौकीन पति प्राप्त होता है। सातवें भुवन में यदि गुरु पड़ा हो तो उसका पति महान् वैभवशाली, लम्बी आयुष्य वाला और बाल्यावस्था से ही कामी, शुक्र सातवें हो तो अपनी स्त्रीको प्रिय हो, खुश मिजाज, मसखरे स्वभाव वाला और कवि मनोंपर स्वामीत्व प्राप्त करने वाला पति मिलता है। सातवें में राहु या केतु हों तो नीच प्रकृति वाला या हलके काम करने वाला पति प्राप्त होता है। यदि सातवें भवन में शुभग्रह बलवान हो तो वह स्त्री राजमान्य पुरुष की पत्नी बनती है। अगर सातवें में तीन शुभग्रह बलवान हों तो वह स्त्री राजा की मान्य रानी बनती है।

यदि सातवें भुवनमें निर्बल पाप ग्रह हो और शुभ ग्रहोंकी दृष्टि हो तो उस स्त्रीका पति उसे प्यार न करेगा, परन्तु वह निर्बल पापग्रह नीचका या शत्रु ग्रहकी राशि का हो तो वह अपने पतिके साथ सदा विरोध भाव रक्खेगी। सातवें भुवनमें सूर्य शत्रुग्रहों की दृष्टिमें हो तो उसका पति उसे तज देता है, अगर इस प्रकार मंगल पड़ा हो तो उसका पति मृत्यु को प्राप्त करता है, या दोनों में परस्पर सदा विरोध रहता है। सातवें भुवनमें शुभ और पापग्रह विराजते हों तो वह स्त्री अपने विवाहित पतिको छोड़ कर अन्य पुरुपसे पुनर्विवाह करती है। सातवें में शनि शत्रुगृहों की नजर में हो तो उस स्त्रीका योवनकाल कुमारावस्थामें ही व्यतीत होता है। जिसकी जन्मकुंडली में उच्चके शुभगृह पड़े हों परन्तु आठवें भुवन में यदि पापगृह पापगृह की राशि में होवे और पापीगृहकी ही नजर में हो तो वह सुन्दरी वैधव्य प्राप्त करती है। इसी प्रकार अगर अष्टम भुवन का स्वामी नवमांश कुंडली में जिस राशिमें हो उस राशिका मालिक गृह पापी गृह हो तो भी वह वनिता अवश्य विधवा होती है। परन्तु उसके आठवें भुवन में अगर शुभगृह हो तो वह सुन्दरी

छोटी उमर में पतिस पहल ही स्वर्ग सिधार जाती है। लग्न से सातव घर में तमाम पापग्रह पड़े हों तो वह युवती विधवावस्था को प्राप्त होती है। यदि सातवे में दो पापग्रह पड़े हों तो वह युवती विधवा होकर कामेच्छा रखकर भटकनेवाली होती है। इसी तरह अगर सप्तमघर में तीन पापग्रह पड़े हों तो भी वह स्वराबापरता से पति का नाश करने वाली होती है। नवमांश कुंडली में शुक्र और शनि एक दूसरे की राशिमें बैठे हों या आपस में एक दूसरे को देखते हों अथवा कुम राशिके आठवे अंश में जन्मपाने वाली हो तो वह कन्या अधिक कामेच्छावाली होती है। यदि लग्न में सूर्य हो और शनि हो सातवे घर में तो उस सुन्दरी को गर्भ नहीं रहता। सूर्य शनि सातवे में हों और गुरुकी दृष्टि बिना चन्द्रमा दशवे भुवनमें विराजता हो अथवा चौथ और छठवे भुवन में शनि एवं मंगल पड़े हों तो भी उस युवती को गर्भ नहीं रहता, अगर रह भी गया तो नष्ट हो जायगा।)

धन भावका फल

धनभावी श्रीकोष हो, अथवा केन्द्र सुजान,
शुभग्रह दृष्टि योग से, होवे नर विद्वान।

धन में स्वगृही हो गुरु, ऊंच राशि या जान,
इसमें कुछ संशय नहीं, वह नर हो धनवान।

धनस्वामी हो ग्यारवें, ग्यारवां धन में वास,
शुभगृह दृष्टि योग से, होय धनी वह खास।

धन में होवे गृहवली, धनकर ऊंच सुजान,
धन उसको छोड़े नहीं, जब लग घटमें प्रान

धन मालिक हो लग्न में, धनमें हो लग्नेश,
मिले अचानक संपदा, सुखमें रहे हमेश।

धनका स्वामी केन्द्रमें, शुक्र चन्द्र गुरु साथ,
सोना चांदी पात्र में, कर भोजन विख्यात।

धनमें यदि लग्नेश हो, ग्यारवें वसे धनेश,
पड़े लग्न में ग्यारवां, लक्ष्मी रहे हमेश।

धन स्वामी धन देखता, धनमें शुभ ग्रह होय।
तो धन पावे लोकमें, निर्धनता को खोय।

चौथे दूजे शुभ गृह, ग्यारहवें धन नाथ,
झूंठ जरा मत जानिये, तस नर लक्ष्मी हाथ

लग्न भाव बुध शुक्र हो, धन में यदि गुरु जान,
मनमानी लक्ष्मी मिले, और मिले सन्मान।

प्रथम चतुर्थे नव दश, यदि धनेश का वास,
शुभ गृह दृष्टि योग से, सम घर लक्ष्मी मास

बुध दृष्टि के योग से, धनमें शनी विराज,
उस नरके संसार में सिद्ध होंय सब काज।

हो चाहे जिस भाव में, मंगल गुरु संग वास,
शुभगह दृष्टि योग से, वह नर करे विलास।

राहु शुक्र मंगल शनि, कन्या राशि थान,
धनवानों में वह सदा, होवेगा बलवान।

बुध चंदा या शुक्र की, नजर दूसरे भाव,
तो तुम निश्चय मानना, धन का बड़ा प्रभाव

ग्यारहवां धन में बसे, धनपति ग्यारे आय,
एक सात दश चार या, वह नर धनपतिराय

बारह तक से सातसे, सब ग्रह करें निवास,
सकल कार्य सिद्धि करें, पूरें मन की आश

जिसके गुरु या चंद्रमा, धन में दशवें थान,
वह नर लक्ष्मीवान हो ऐसा करो बखान।

यदि गुरु धनमें आ बसे, शुभगृह दृष्टि करन्त,
इच्छित धन पावे सही, कर चिन्ता का अन्त।

शुक्र रहे धन भाव में, यदि शुभ ग्रह के संग,

अथवा बुध की दृष्टि से, तस घर लक्ष्मी अभंग

भाव दूसरे में कहा, यह शुभ गृह विचार,

बारह लग्न भी कह दिये तुक बन्दी में यार

"जय पराजय प्रश्न"

यदि दो कुस्ती लडने वालों या अदालत में मुकदमा लड़ने वालों की हार जीत का प्रश्न देखना हो तो वादी प्रतिवादी के नामाक्षर लिखकर उसमें व्यंजन और स्वरों की अंक संख्या नीचे के चक्रमें देखकर स्वर एवं व्यंजनों की संख्या को मिलाने से जिसकी सम संख्या होगी वह हारेगा और जिसकी विसम होगी वह जीतेगा । यदि दोनों की सम हो जाय या विसम होजाय तो समझो कि परस्पर फैसला हो जायगा ।

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अं
क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ	ढ
ड	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ	ब	भ
म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह	०	०
५	५	३	३	३	६	६	८	८	९	९

दूसरा तरीका

जिस दिन मुकदमे की तारीख हो उस दिन की तिथि, नक्षत्र, वार जुदे जुदे लिखकर तीनों में प्रश्नकार के नामाक्षर मिलाकर तिथि को दूनी करना, नक्षत्र को चार गुणा करना और वारको तीन गुणा करना। फिर तिथिके अंक को छह से भाग देना, नक्षत्र के अंकको आठ से भाग दो और वारके अंक को सात से भाग दो। यदि तीनोंमें शेष रहे तो वह कार्य प्रश्नकर्त्ता के लाभ में शीघ्र ही होगा। यदि दो के अंक में शेष आवे तो उसकार्य की तारीख पड़े। एकके नीचे अंकमें शेष रहे तो नुकसान हो और अगर तीनों जगह में शेष में शून्य ही रहे तो मुकदमा हार में होगा, यदि और किसी कार्य का प्रश्न हो तो वह भी सिद्ध न होगा।

शंका वाली भूमिमें धन जानने का तरीका

प्रश्नके वक्त उस समय के पंचांग में देखो कि सूर्य और चन्द्रमा किस नक्षत्र में हैं। यदि सूर्य और चन्द्रमा चन्द्रके नक्षत्र में इकट्ठे हों तो संशय रहित समझो कि शंकावाली जमीन में धन दबा हुआ है। यदि सूर्य के नक्षत्रमें सूर्य और चन्द्र इकट्ठे हो तो वहां पर धन नहीं

है। चन्द्र और सूर्य अपने २ नक्षत्रमें हों तो किसी निकम्मी वस्तु के साथ कुछ धन भी है। अश्विनी से ३ आर्द्रासे ५ पूर्वाषाढासे ४, रेवती और पूर्वाभाद्रपद, ये इतने नक्षत्र चन्द्रमाके बतलाये हैं। बाकी के सूर्य के समझो।

ध्रुवांकों पर से भी प्रश्न निकाला जा सकता है और वह निम्न प्रकार से समझना चाहिये। लाभालाभ के प्रश्न में ध्रुवांक ४२। जीवन मरण के प्रश्नमें ४०। सुख दुख के प्रश्नमें ३५। गमना गमन के प्रश्न में ३४ जय पराजय के प्रश्न में ३५। बारिसके प्रश्नमें ३२। यात्राके प्रश्न में ३५। जिस प्रकार का प्रश्न हो उस प्रश्न का जो ध्रुवांक हो उसको ग्रहण करना। स्वर और व्यंजनों के ध्रुवांक इस प्रकार हैं—अ का ध्रुवाँक २४। आ का २१। इ का १२। ई का १६। उ का २५। ऊ का २२। ए का १६। ऐ का २६। ओ का १६। औ का २५। अं का १०। अः का २२।

क् का २१। ख् का ३१। ग् का २०। घ् का १६ ङ् २१। च् का २७। छ् का १६। ज् का ३४। झ् का २५। ञ् का २६। ट् का २१। ठ् का ३५। ड् का १३। ढ् का १४। ण् का १७। त् का २७। थ् का १३। द् का २६

ष् का १८ । न् का १८ । प् का २८ । फ् का २७ । ब् का २१ । म् का २६ । म् का १६ । य् का ४२ । र् का ११ । ल् का ६ । व् का ७ । श् का २५ । ष् का ११ । स् का २५ । ह् का १२ । क्ष् का ५ । ये व्यंजनों के ध्रुवांक हैं। प्रश्न करने वाले को चाहिये कि यदि सुबह का वक्त हो तो किसी बच्चे के मुख से किसी भी एक वृक्ष का नाम लिखावे, दुपहर का समय हो तो किसी युवा पुरुष से किसी एक पुष्प का नाम लिखावे और यदि प्रश्न का समय संध्याकाल हो तो किसी एक बूढ़े मनुष्य से किसी एक फल का नाम उच्चारण करावे। उस व्यक्ति से उच्चारण किये वृक्ष, पुष्प या फल के नाम में जितने स्वर और व्यंजन हों उन सबका ध्रुवांक मिलाले, तथा पहले बतला प्रश्न का ध्रुवांक भी उसमें मिलाके सारे अङ्कों को जोड़ कर फिर उस रकम का निम्न लिखे प्रकार से भाग दो। यदि लाभालाभ का प्रश्न हो तो उस रकम को तीन से भाग देना, शेष में एक रहे तो लाभ, दो बचें तो कम लाभ और शून्य शेष रहे तो हानि समझो। जीवन मरण का प्रश्न हो तो तीन से भाग देने पर एक शेष रहे तो जीवे, दो रहें तो कष्ट पावे और शून्य रहने पर मृत्यु समझना

चाहिये। सुख दुख का प्रश्न हो तो एकत्रित रकमको दो से भाग देने पर एक रहने से सुख और शून्य रहने से दुःख समझो। गमनागमन के प्रश्न में तीन से भाग देने पर एक शेष रहे तो परदेशगामी आयगा, दो रहें तो आगे जावे और शून्य रहे तो परदेश ही में रहे। जय पराजय के प्रश्न में तीन से भाग देने पर एक रहे तो जय, दो रहें तो समाधान और शून्य रहे तो पराजय हो। बारिश सम्बन्धी प्रश्न में तीन से भाग देने पर एक शेष रहे तो पूर्ण बारिश हो और यदि शून्य रहे तो अनावृष्टि हो। यदि यात्रा का प्रश्न हो तो तीन से भाग देने से एक शेष रहने पर यात्रा सुखाकारी हो, दो बचें तो मध्यम और शून्य रहे तो मार्ग में ही देह पतन का संभव समझो।

कार्य सिद्धि प्रश्न का यह भी एक तरीका है कि प्रश्नकार का मुख जिस दिशामें हो वह दिशा, प्रश्न समय का प्रहर, नक्षत्र और वार की संख्या मिला कर उसे आठ से भाग देने पर यदि शेष में पांच या एक बाकी रहे तो शीघ्र ही कार्य सिद्ध होता है। छह और चार शेष रहें तो तीन चार रोजमें काम हो। तीन या सात बचें तो विलम्ब से कार्य सिद्ध हो, और यदि शून्य रहें तो कार्य सिद्धि में भी शून्य समझना चाहिये।

) नीचे दिये मु ताफ चक्र से आयुकी अवधि जानी जाती है। जन्म कुंडली में देखो कि किस किस भुवन में ग्रह पड़े हैं। जन्म लग्न से जिस २ भुवन में ग्रह पड़े हों उन स्थानों के मुताबिक जोड़ने से जो अंक संख्या बने उतनी ही आयु उस जन्म कुण्डली वाले मनुष्य की जाननी चाहिये।

मृत्यु ज्ञान

मृत्यु ज्ञान के विषय में निम्न लिखे मुजब समझना चाहिये। तीन नाड़ी वाले एक सर्पकी आकृति बनाना, उसमें जिस नक्षत्र में सूर्य चलता हो वह नक्षत्र प्रथम रखना, फिर अनुक्रम से अभिजित नक्षत्र को जोड़ कर तमाम नक्षत्र रखना, परन्तु इस रीति से रखना कि जिस में पंद्रह नक्षत्र सर्प की नाड़ी पर आने चाहियें और बारह नक्षत्र नाड़ी से बाहर रहें।

भुजंग की स्थापना

जिस जिस नक्षत्र में जो जो ग्रह हों उन ग्रहोंको भी उन उन नक्षत्रों पर रखना चाहिये। फिर सूर्य के नक्षत्र से रोगी के नाम नक्षत्र तक गिनना, यदि पहली नाड़ी में पाने अट्ठिसा, नवमा, तेरहवां, एकवीसवां या

होजाती है। इस प्रकार तथा अन्य उपायों द्वारा विचार कर क्रूर ग्रह, दशा, चंद्रकी प्रतिकूलता, थिति आदि के द्वारा रोगीकी मृत्युके ज्ञानका निर्णय करना चाहिये।

सूर्य से नवमा भुवन पिताका, चंद्रमासे चौथा भुवन माता का, मंगल से तीसरा भाइयों का, बुधसे चौथा मामा का, गुरु से पाँचवां पुत्रों का, शुक्र से सातवाँ स्त्रीका, और शनि से आठवां भुवन जन्म कुंडली वाले का मृत्यु स्थान गिना जाता है, इसलिए इन स्थानों में जहाँ पर पापग्रह पड़े हों तदनुसार उनका अनिष्ट फल समझना चाहिये।

यदि कभी अपने, भाईकी, पुत्रकी, स्त्रीकी या माता पिता की मृत्यु के विषय में देखना हो तो जन्म कुंडली देखिये—जिस भुवन से सातवें भुवन में रहा हुआ ग्रह और आठवें भुवन का स्वामी ग्रह इन दोनोंको देखो, दोनों में से जो ग्रह बलवान हो उसी ग्रह की दशा में मृत्यु होना समझिये।

ग्रहों की दशा के संबन्ध में संक्षेप से इतना जान लेना चाहिये कि चंद्रमा, गुरु शुक्र और बुध, ये चारों ग्रह सौम्य होने के कारण अपनी दशा में भी लाभ दायक

'दिन शुद्धि' ग्रन्थ में तो त्रिनाड़ी चक्रकी स्थापना में आर्द्रा नक्षत्र से लेकर तीन तीन नक्षत्रों का अन्तर छोड़े बिना ही तीन तीन की स्थापना नाड़ी पर की है और लिखा है कि प्रथम आर्द्रा, मध्यम में मूल और अन्त में मृगशिरा नक्षत्र आवे इस प्रकार की नाड़ी चक्र पर स्थापना करके गिने। यदि सूर्य, चन्द्र और रोगी का जन्म नक्षत्र एक नाड़ी पर आवे तो उस दिन रोगीकी मृत्यु समझना, जिनेश्वर का वचन अन्यथा नहीं होता,। 'आरम्भ सिद्धि' ग्रन्थ में लिखा है कि—

रवींदू जन्म नक्खत्त एगा नाड़ी गया जया।
सया दिने मवे मच्चू नन्नहा जिण भासिअं

कितनेक विद्वानों का कथन है कि रोगी के जन्म नक्षत्र की नाड़ी पर जब सूर्य नक्षत्र होता है और जितना नक्षत्र सूर्य को भोगना होता है उतने समय तक रोगी को भयंकर कष्ट भोगना पड़ता है। एवं रोगी के जन्म नक्षत्र की नाड़ी पर जब चन्द्रमा होता है तब रोगीको आठ पहर तक अवश्य पीड़ा भोगनी पड़ती है। ऐसे प्रसंग पर यदि कोई अन्य क्रूर ग्रह भी उसी स्थान में रहा हुआ हो तो अवश्य ही उसी समय रोगीकी मृत्यु

होजाती है। इस प्रकार तथा अन्य उपायों द्वारा बिचार कर क्रूर ग्रह, दशा, चंद्रकी प्रतिकूलता, थिति आदि के द्वारा रोगीकी मृत्युके ज्ञानका निर्णय करना चाहिये।

सूर्य से नवमा भुवन पिताका, चंद्रमासे चौथा भुवन माता का, मंगल से तीसरा भाइयों का, बुधसे चौथा मामा का, गुरु से पाँचवां पुत्रों का, शुक्र से सातवाँ स्त्रीका, और शनि से आठवां भुवन जन्म कुंडली वाले का मृत्यु स्थान गिना जाता है, इसलिए इन स्थानों में जहाँ पर पापग्रह पड़े हों तदनुसार उनका अनिष्ट फल समझना चाहिये।

यदि कभी अपने, भाईकी, पुत्रकी, स्त्रीकी या माता पिता की मृत्यु के विषय में देखना हो तो जन्म कुंडली देखिये—जिस भुवन से सातवें भुवन में रहा हुआ ग्रह और आठवें भुवन का स्वामी ग्रह इन दोनोंको देखो, दोनों में से जो ग्रह बलवान हो उसी ग्रह की दशा में मृत्यु होना समझिये।

ग्रहों की दशा के संबन्ध में संक्षेप से इतना जान लेना चाहिये कि चंद्रमा, गुरु शुक्र और बुध, ये चारों ग्रह सौम्य होने के कारण अपनी दशा में भी लाभ दायक

होते हैं। इससे विपरीत जिस मनुष्य को सूर्य, मंगल, शनि और राहु, केतु की दशा होगी, वह उसके लिये हानिकारक समझना चाहिये। यदि पापी ग्रह की दशा में क्रूर ग्रह की अन्तर दशा आजाय तो उसमें अवश्य ही उस मनुष्य की मृत्यु होजाती है। पापग्रह के शत्रुग्रह की अन्तर दशा में भी मृत्यु का भय होता है। यदि पापी ग्रह क्रूर राशि में हो और शत्रु ग्रह उसके साथ हो या उसको देखता हो तो भी मृत्यु भय समझना चाहिये। पापग्रह की दृष्टि से जो अशुभ फल होता है वह दशा के अन्त काल में होता है। शुभग्रहों का भुवन सम्बन्धी फल दशा के पूर्वकाल में होता है। दृष्टि सम्बन्धी फल दशा के उत्तर काल में और राशि सम्बन्धी फल' दशा के मध्य काल में होता है।

अङ्क प्रश्न फल

१०	२०	३०	४०	५०
१	२	३	४	५

इस पर से किसी प्रश्न का उत्तर जानना हो तो एक सुपारी लेकर अपने इष्ट देव का मन में स्मरण कर और प्रश्न का परिणाम चिन्तन कर प्रथम के पांच खानों में

से चाहे जिस खाने वाले अंक पर सुपारी रख दो। उस खाने के अंक को ध्यान में रक्खो, फिर इसी प्रकार नीचे के खानों में से चाहे जिस खाने वाले अंक पर सुपारी रक्खो। बस अब दोनों अंकों को मिला लो और उसका प्रश्न फल नीचे मुजब समझो।

यदि ११ का अंक हो तो निरधारित कार्य सिद्ध होगा। १२ आवे तो समझो कि अपने इष्ट देवकी भक्ति भाव करते या अन्य देव की पूजा उपासना करते हुए कुछ विलम्ब से कार्य सिद्ध होगा। अंक १३ आवे तो निरधारित कार्य में बहुत सी विघ्नबाधा पड़ेगी, परन्तु बुरे कार्य में प्रश्न ठीक समझना। १४ आवे तो निश्चिन्त रहो आपका निरधारित कार्य सिद्ध होगा। १५ आवे तो इच्छित कार्य के पीछे पूर्ण उत्साह पूर्वक लगा रहने से वह कार्य सिद्ध होगा। २१, आवे तो निरधारित कार्य में कुछ चिन्ता पैदा होने का संभव है, क्योंकि इस कार्य में दो तरहकी बुद्धि हुई मालूम होती है, यदि एक बात पर निश्चय रख कर उद्यम करोगे तो जरूर काम फतह होगा। २२ आवे तो कार्य सफल होगा, परन्तु उसमें किसी स्त्री या पुरुष की ओर से बाधा

बदु पाई जायगी, तथापि वह सिद्ध होगा । २३ आवे तो आप उस कार्य को छोड़ दो, उसमें बड़ा विघ्न पड़गा, सिद्ध होना आपकी शक्तिसे बाहर का काम है। २४ आवे तो निरधारित कार्य शुभकारी पूर्ण होगा । २५ का अंक आवे तो समझो कि मनोभाव बहुत बड़ा है, भगवान पूर्ण करेगा, परन्तु इसमें दूसरे का विश्वास मत करो, आपके ही पुरुषार्थ से कार्य पूर्ण होगा। ३१ आवे तो समझो कि कार्य होगा, चिन्ता छोड़ कर उस कामके पीछे लगे रहो। ३२ का अंक आवे तो समझो कि आपका निरधारित कार्य पहिले तो नष्ट प्रायः होजायगा, परन्तु हिम्मत रखकर उद्यम करते रहोगे तो बिगड़ा हुआ भी काम सुधर जायगा। ३३ का अंक आवे तो समझो कि प्रश्न फल अच्छा नहीं है, उसे न छोड़ कर उसके पीछे लगे रहने से क्लेश नुकसान और अपयश उठाना पड़ेगा। ३४ अंक आवे तो समझो कि विमनस्क भाव से काम करने के कारण सफलता का भंग होगा, परन्तु दृढ़ चित्त हो करने से पूर्ण होगा। ३५ अंक आवे तो समझो कि यह कार्य उलझन वाला है, उसमें सफलता [illegible]ना कठिन है। ४१ अंक आवे तो समझो कि

निरधारित कार्य विघ्न रहित सिद्ध होगा। ४२ अंक आने पर पूर्ण उद्यम करने से काम बनेगा, इष्ट देव का स्मरण करो। ४३ आने पर कार्य अवश्य सिद्ध होगा, विलम्ब मत करो। ४४ का अंक आने पर कुछ मेहनत करनी पड़ेगी फिर उत्तर या पश्चिम दिशा तरफ से कार्य सिद्ध होगा। ४५ का अंक आने पर समझो कि निर-धारित कार्य बड़ा है, वह दूसरे के हस्तगत है, उसकी सिद्धि कठिन मालूम होती है। यदि ५१ का अंक आवे तो निरधारित कार्य पूर्ण होने पर यश की प्राप्ति होगी। ५२ का अंक आने पर प्रश्न विचार अवश्य सफल होगा। ५३ का अंक आवे तो उस प्रश्नके कार्यको गुप्त रख कर उद्यम करो तो सफलता मिलेगी,। ५४ का अंक आवे तो समझो कि आपके कार्यमें शत्रुकी ओरसे विरोध किया जा रहा है, आप कुछ समय के लिये सबर करो और यदि प्रश्नांक ५५ का आवे तो समझो कि आपका इच्छित काम पूर्ण होगा, हिम्मत रखकर उद्यम करते रहो।

प्रश्न निर्णय का दूसरा तरीका यह है कि प्रश्न के समय जो तिथि, वार, पहर और दैनिक नक्षत्र हो उन

सबकी संख्या एकत्रित कर तीन से भाग दो। यदि शेष में एक बचे तो कार्य शीघ्र ही सिद्ध हो। अगर दो शेष रहें तो कार्य देरी से सिद्ध हो और यदि शेष में शून्य रहे तो कार्य में भी शून्य ही समझना चाहिये।

(कार्य सिद्धि का निश्चय होने पर उसकी अवधि जानना हो तो उस समय जो सूर्य नक्षत्र हो उससे प्रश्न समय के चंद्र नक्षत्र तक गिनने पर जो अंक आवे उस अंक तक अश्विनी नक्षत्र से गिनो जो नक्षत्र आवे उस नक्षत्र के नीचे जो ध्रुवांक का अंक देख पड़े उतने ही दिनों में कार्य की सिद्धि समझना चाहिये।

अ० भ० कृ० रो मृ० आ० पु० पु०
२७, १८०, २०, १२, ३२, १६, ६०, १८०,
आ० म पू०फा० उ फा० ह० चित्रा०
१५०, २४०, १६, १७, १५०, १२०,
स्वा० वि० अ० जे मू पू०षा० उ० षा०
१२०, २०, ३२, ११, १६, ६०, १५०,
श्र० ध० श०, पू० भा० उ भा० रे०
६०, ३०, ८००, १५, १५, २७०,

लाभालाभ जानने का तरीका

जिस नक्षत्रमें शनि चलता हो वह नक्षत्र उसके मुख पर रखना, उसके बाद चार नक्षत्र क्रमसे दहने हाथों पर रखना, उसके बाद ६ नक्षत्र दोनों पैरों पर रखना, उसके बादके ४ बांये हाथ पर रखना, उसके बादके ५ उदर पर रखना, उसके बादके ३ मस्तक पर रखना, बादके २ नेत्रों पर रखना, बादका १ गुदा पर रखना, और शेष रहा हुआ १ गुह्य पर रखना।

इस प्रकार स्थापना करके शनि के नक्षत्र से अपने नक्षत्र तक गिनने पर जो नक्षत्र आवे वह जिस स्थानमें हो उसका जो फल कहा है सो समझना चाहिये। इसी प्रकार चंद्र नरकी स्थापना करनी चाहिये। जिस नक्षत्रमें चन्द्रमा हो उससे २ नक्षत्र उसके नेत्रों पर रखना, बादके ६ दोनों हाथों पर रखना, बादके ३ मुख पर, बादके ७ हृदय पर, बादके ४ गुह्य पर, और बादके शेष ५ दोनों पैरों पर स्थापना। चन्द्रनरका फल यह समझना। यदि चन्द्रके उस नक्षत्र से जिसमें वह हो गिनने से अपना नक्षत्र नेत्रों पर आजावे तो शुभ, हाथों पर लाभ, मुखपर अतिपीड़ा, हृदय पर सुख, गुह्यपर मृत्यु और पैरों पर परिभ्रमण समझना चाहिये।

शनिनर की स्थापना			मंगलनरकी स्थापना		
मुख	१	पीड़ा	मुख	१	राग
दाहिना हाथ	४	लक्ष्मी	नेत्र	१	ला
दो पैर	६	गमन	मस्तक	१	भय
बांया हाथ	४	बन्धन	बाँया हाथ	[illegible]	रोग
उदर	५	मम	दाँया हाथ	२	शोक
मस्तक	३	लाभ-	कण्ठ	२	हिंसा
दो नेत्र	२	पूजा	हृदय	५	लाभ
गुदा	१	परागमन	गुह्य	१	परस्त्री रति
गुह्य	१	भयमृत्यु	चरण	४	भ्रमण

बुधकी स्थापना

मुख	५	ज्ञान
नेत्र	५	राज्य
कंठ	५	सुस्वर
हृदय	५	ज्ञान
चरण	५	भय
बामकर	१	ज्ञान
दक्षिणकर	१	ज्ञान
गुह्य	१	भय

गुरुकी स्थापना

मस्तक	४	राज्य
दक्षिणकर	४	लक्ष्मी
कंठ	१	भय
हृदय	५	प्र म
चरण	६	पीड़ा
बामकर	४	मृत्यु
नेत्र	२	सुख

शुक्र की स्थापना

मस्तक	४	सौम्यता
मुख	२	मरण
हृदय	४	सौम्यता
दोनों हाथ	१०	राजपूजा
गुह्य	३	दुःख
दोनों गोड़े	२	दुःख
दोनों पैर	२	दुःख

केतुकी स्थापना

मुख	२	जय
मस्तक	५	जय
फण	५	जय
दो हाथ	४	जय
दो पैर	५	सुख
हृदय	२	शोक
कंठ	४	पीड़ा

रविकी स्थापना

मस्तक	३	राजा
मुख	३	मिष्टभोजी
दो कंधे	२	धैर्यवान
दो भुजाओंपर	२	बलवान
दो हाथ	२	चोर
हृदय	५	धनवान
नाभी	१	सुशील
गुह्य	१	पर स्त्रीरति
दो गोड़े	२	विदेशगमन
दो पैर	६	मित्राचारी

राहूकी स्थापना

मुख	३	जय
दक्षिणकर	४	लक्ष्मी
दो पैर	६	भ्रमण
वामकर	४	०
हृदय	३	लाभ
कंठ	१	रोग
मस्तक	३	राज्य
नेत्र	२	सौभाग्य
गुह्य	२	मरण

सामुद्रिक विचार

मनुष्यों के शरीर में जो स्वाभाविक मस्त लक्षण होते हैं वे अन्य समस्त लक्षणों को दबाकर अपने गुणानुसार समय पर फलदायी होते हैं। सामुद्रिक शास्त्रमें शुभाशुभ दो प्रकार के लक्षण बतलाये हैं, जिसमें पुरुषके दहने अंग में और स्त्रीके बाँये अंग में शुभ माने जाते हैं, एवं इससे विपरीत अशुभ गिने जाते हैं।

मणिबन्ध याने पहुँचा से आगेका जो हाथ का भाग या हिस्सा है उसे हथेली कहते हैं। जिसमें एक अंगुष्ट और चार अंगुलियां होती हैं। मनुष्यके इसने हिस्से में जानने वालेके लिए जीवन सम्बन्धी बहुतसी बातें आजाती हैं। अनुक्रम से अंगुष्ट के पासवाली अंगुली का नाम तर्जनी, दूसरी मध्यमा, तीसरी अनामिका और चौथी कनिष्ठा कहलाती है। करतलमें अनामिका अंगुली के नीचे सूर्यका स्थान है। कनिष्ठाके नीचे मणिबन्ध के नजीक चन्द्रमा का स्थान। मंगल के दो स्थान माने गये हैं, एक तो बुधके स्थानके नीचे और दूसरा गुरुके स्थानके ऊपर गुरुके स्थानसे नीचेके भागमें है। कनिष्ठा के निम्न भागमें बुधका स्थान है। तर्जनी अंगुली

के नीचे गुरुका स्थान है। अंगुष्ठ से नीचे मणिवन्ध के ऊपरी हिस्से में शुक्र का स्थान है। मध्यमा अंगुली के नीचे शनिका स्थान समझना चाहिये। विशेष जान नेकी यह बात है कि जिस जिस ग्रहका स्थान ऊंचा और मजबूत मालूम दे वह ग्रह जन्म समय बलवान होनेके कारण श्रेष्ठ फल देता है और जिस ग्रहका स्थान अन्दर को धसा हुआ हो या नरम हो अथवा खरदरा हो तो समझो कि वह गृह जन्म समय निर्बल होने के कारण अशुभफल देता है।

किसी भी गृह के स्थान पर यदि क्रोसका चिन्ह हो तो वह शुभ दायक माना गया है। जोंका चिन्ह खराब माना है। चौरस चिन्ह भी अशुभफल दायक है। बिन्दु का चिन्ह आवरु में फर्क लाता है, द्रव्य हानिकरता है और कुटुम्ब से दुखी करता है। अगर किसी भी ग्रह के स्थान पर जाली के समान चिन्ह आकार हो तो वह दुष्कर्म कराता है, व्यभिचार कराता है, दुष्टस्वभाव करता है, अर्थात् बुरे कामों में प्रेरित करता है। इसी प्रकार गृहोंके स्थान पर पड़े हुए जुदे जुदे शुभाशुभ लक्षणों– आकारों का सामुद्रिक शास्त्रज्ञ बुद्धिमान पुरुष उन लक्षणों के गुणानुसार शुभाशुभ फलादेश कहे।

रेखा विचार

हर एक स्त्री पुरुष की हथेली में प्रायः चार रेखायें मुख्य हुआ करती हैं। प्रथम अन्तिम अंगुलीके नीचे लगभग एक या डेढ़ यव प्रमाण कनिष्ठा के पर्व से पहुं चे की ओर क्रम से एक रेखा निकल कर तर्जनी अंगुलीकी तरफ़ जाती है। वह रेखा आयुष रेखा कहलाती है। दूसरी तर्जनी और अंगुष्ठ के बीच से निकलकर हथेली के मध्यभागमें होती हुई क्रम की तरफ़ चली आती है और वह पिता की रेखा कहलाती है। तीसरी उसी के पाससे याने वह भी तर्जनी और अंगुष्ट के बीचसे हथेली के मध्यमें होती हुई पहुं चे की ओर चली आती है वह माता की रेखा कहलाती है। चौथी रेखा मणिबन्ध याने पहुं चे की तरफ़ से माताकी रेखासे बांई ओर सीधी हथेलीके बीचसे अंगुलियों की तरफ़ जाती है उसे भाग्य रेखा या ऊर्ध्व रेखा कहते हैं। ये रेखायें जितने अंगमें स्पष्ट होंगी उतनी ही श्रेष्ठ समझनी चाहियें।

आयुष की रेखा जो कनिष्टा अंगुलीके नीचे से क्रमसे शुरु होती है यदि वह अस्खलित सीधा तर्जनी अंगुली की जड़ से आ मिले तो उस मनुष्यका उत्कृष्ट

आयुष होता है। यदि मध्यमा अंगुली के ऊपरी मूल तक जा पहुंचे तो मध्यम आयुष होता है। तर्जनी और मध्यमा से एक अंगुलके फासले पर ही हथेली में यदि आयुष रेखा खतम हो जाय तो भी मध्यमा आयुष से कुछ ही कम आयुष उस उत्तम पुरुष की होती है। कनिष्ट से लेकर आयुष रेखा जितनी अंगुलियों को उलंघन कर जाय उतने ही वीस वर्ष आयु के जानने, अर्थात् एक अंगुली ही मुट्ठी बन्द करने पर आयु रेखा हो तो वीस वर्ष, दो अंगुली तक जाय तो ४० वर्ष और तीन अंगुली तक पहुंचे तो ६० वर्ष की आयुष समझिये, न्यूनाधिक से न्यूनाधिक समझना चाहिये। यदि आयुष रेखा वीच में कहीं से कुछ खंडित हुई हो या किसी अन्य रेखा द्वारा काटी गई हो तो उतने समय पर आकर उस मनुष्य को मरणांत कष्ट कारी बीमारी होती है। या कोई वैसा ही खतरनाक अकस्मात होता है, इसे घात कहते हैं। जिस मनुष्य की आयुष रेखामें सूक्ष्म लकीरें देख पड़ें वह साधारण बीमार रहता है और जिसकी आयुष रेखा पर ये बारीक लकीरें अधिक प्रमाण में हों वह मनुष्य साधारण बीमारियों का सदैव सिकार बना रहता है।

रेखा विचार

हर एक स्त्री पुरुष की हथेली में प्रायः चार रेखायें मुख्य हुआ करती हैं। प्रथम अन्तिम अंगुलीके नीचे लगभग एक या डेढ़ यव प्रमाण कनिष्ठा के पर्व से पहुंचे की ओर क्रम से एक रेखा निकल कर तर्जनी अंगुलीकी तरफ आती है। यह रेखा आयुष रेखा कहलाती है। दूसरी तर्जनी और अंगुष्ट के बीच से निकलकर हथेली के मध्यभागमें होती हुई करम की तरफ चली जाती है और वह पिता की रेखा कहलाती है। तीसरी उसी के पासमें याने वह भी तर्जनी और अंगुष्ट के बीचसे हथेली के मध्यमें होती हुई पहुंचे की ओर चली जाती है वह माता की रेखा कहलाती है। चौथी रेखा मणिबन्ध याने पहुंचे की तरफ से माताकी रखासे बाई ओर सीधी हथेलीके बीचसे अगुलियों की तरफ जाती है उसे भाग्य रेखा या उर्ध्व रेखा कहते हैं। ये रेखायें जितने अंशमें स्पष्ट होंगी उतनी ही श्रेष्ठ समझनी चाहियें।

आयुष की रेखा जो कनिष्टा अगुलीके नीचे से करमसे शुरु होती है यदि वह अखण्ड रीत्या तर्जनी अंगुली की जड़ से आ मिले तो उस मनुष्यकी उत्कृष्ट

आयुष रेखा और कनिष्ठा अंगुली के मूल के दरम्यान में जो लगभग एक अंगुल की जगह है, उसमें जो रेखा होती है वह रेखा स्त्री पुरुषों के विवाह सम्बन्धी समझनी चाहिये। यदि उस जगह करभ में एक रेखा हो तो एक विवाह, दो हों तो दो विवाह और तीन हों तो तीन या अधिक हों तो अधिक विवाह सम्बन्ध समझना चाहिये।

आयुष की रेखा से पिता की रेखा तक करभ में जितनी रेखायें हों, उतनी उस मनुष्य की संतान समझनी चाहियें। इसमें जितनी रेखायें स्पष्ट हों उतने पुत्र पुत्री बाल्यवय में नहीं मरते और जितनी रेखायें बड़ी हों उतने पुत्र तथा जितनी रेखायें अस्पष्ट या छोटी या मलीन हों उतनी पुत्री होती हैं।

मणि बन्ध के पास से जो माता की रेखा निकलती है उसकी आदि से लेकर अंगुष्ट के मूल तकका जो बीच का हिस्सा है उसमें जो रेखायें होती है वे बहिन भाई की रेखा होती हैं। उसमे जितनी रेखायें हों उतने ही बहिन भाई समझना चाहिये, परन्तु उसमें जितनी रेखाये स्पष्ट और लंबी हों उतने भाई होंगे और

जिस स्त्री या पुरुष के मस्तक में स्पष्ट तथा तीन रेखायें मालूम होती हों उसका आयुष भी बड़ा लम्बा होता है। मस्तक की चार रेखा वाला मनुष्य राज्य कार्य में बड़ा निपुण होता है। यदि मस्तक पर बहुत सी रेखायें परस्पर सम्मिलित हो गई हों तो वह पुरुष पर स्त्री लम्पट और चोरी की आदत वाला बतलाया है। यदि मस्तक पर एक भी रेखा न हो तो भी वह मनुष्य सत्तर वर्ष से कम आयुष वाला नहीं होता। जिसके मस्तक पर भमर-अर्धचन्द्राकार में सिर्फ एक रेखा हो, या मस्तक ऊंचा हो या एक रेखा रोम रहित हो और स्पष्ट रूप से देख पड़ती हो तो वह मनुष्य अपने जीवन में सदैव राज्य ऋषि के समान सुख भोगता है। माता पिता की रेखा में सम्पूर्ण दोष वर्जित और पूरी हों तो समझो कि उनके माता पिता में पारस्परिक अच्छा प्रेम था है। उन रेखाओं में से जो रेखा लम्बी हो उसकी आयुष भी लम्बा समझो और जिसकी रेखा कम हो उसका आयुष कम जानना चाहिये। यदि माता पिता की रेखा के दरम्यान त्रिशूल जैसा चिन्ह पड़ा हो तो समझो कि उसके माता पिता परलोक में श्रेष्ठ गति को प्राप्त करेंगे॥

आयुष रेखा और कनिष्ठा अंगुली के मूल के दरम्यान में जो लगभग एक अंगुल की जगह है उसमें जो रेखा होती है वह रेखा स्त्री पुरुषों के विवाह सम्बन्धी समझनी चाहिये। यदि उस जगह करभ में एक रेखा हो तो एक विवाह, दो हों तो दो विवाह और तीन हों तो तीन या अधिक हों तो अधिक विवाह सम्बन्ध समझना चाहिये।

आयुष की रेखा से पिता की रेखा तक करभ में जितनी रेखायें हों, उतनी उस मनुष्य की संतान समझनी चाहियें। इसमें जितनी रेखायें स्पष्ट हों उतने पुत्र पुत्री बाल्यवय में नहीं मरते और जितनी रेखायें बड़ी हों उतने पुत्र तथा जितनी रेखायें अस्पष्ट या छोटी या मलीन हों उतनी पुत्री होती हैं।

मणि बन्ध के पास से जो माता की रेखा निकलती है उसकी आदि से लेकर अंगुष्ट के मूल तकका जो बीच का हिस्सा है उसमें जो रेखायें होती हैं वे बहिन भाई की रेखा होती हैं। उसमे जितनी रेखायें हों उतने ही बहिन भाई समझना चाहिये, परन्तु उसमें जितनी रेखायें स्पष्ट और लंबी हों उतने भाई होंगे और

जितनी रेखायें अस्पष्ट तथा छोटी होंगी उतनी बाहिनें समझनी चाहियें।

मणिबन्ध से ऊपर की ओर आने वाली भाग्य रेखा या ऊर्ध्व रेखा पांच प्रकार की शास्त्रकारों ने बतलाई है। एक तो मणिबन्ध से सीधी हथली के मध्य होकर अनामिका अंगुली की ओर जाती है, दूसरी मध्यमा की तरफ जाती है, तीसरी तर्जनी अंगुली की ओर जाती है, चौथी अंगुष्ट की तरफ और पांचवीं कनिष्ठा अंगुली की ओर जाती है। पहली जो अनामिका की ओर जाती है उसका फल धनाढ्य होना है। मध्यमा की तरफ जाने वाली ऊर्ध्व रेखा उसे आचार्य बनाती है। तर्जनी की ओर जाने वाली रेखा पूर्ण रेखा हो तो उसे राज्य ऋद्धि दिलाती है या राज्य ऋद्धि के समान सुख भोगी करती है, अगुष्ट की ओर जाने वाली रेखा भी राज्य सम सुख लाभ कराती है और कनिष्टा अंगुली की तरफ जाने वाली भाग्य रेखा जनता में श्रेष्ठ प्रतिष्ठा प्राप्त कराती है।

जिस मनुष्य के दांत, होठ, नाक, आंख, कान हाथ और पैर ये सात अवयव सीधे सरल हो वह मनुष्य

स्वभाव से सरल होता है। जिस मनुष्य के नेत्रों के प्रान्त भाग, जीभ, तालुआ, नाखून, हाथों के एवं पैरों के तलिये रक्त–लाल हों उसे स्त्री बहुत चाहती है और उसके कार्य सिद्ध हुआ करते हैं। जो मनुष्य अपने हाथ की अंगुलियों के नाप से एक सौ आठ अंगुल ऊंचा हो, जिसके मोगरे की कलीके समान सुन्दर बत्तीस दांत हों वह उत्तम पुरुष माना जाता है। जो मनुष्य अपने ही हाथ की अंगुलियों के नाप से छहानवें अंगुल ऊंचा हो वह मध्यम पुरुष माना जाता है। जो चौरासी अंगुल ऊंचा हो वह साधारण और जो इससे भी कम ऊंचा हो वह मनुष्य बड़े कष्टसे अपना जीवन व्यतीत करता है, अर्थात् वह दुःखी होता है। जिस स्त्री या पुरुष के हाथ या पैर में मछली, मगर, शंख या कमल का चिन्ह उसके सम्मुख हो वह राज्य ऋद्धि समान सुख भोगी होती है। जिसके हाथ में कमान, तलवार या आठ कोण के आकार का चिन्ह हो वह मनुष्य अधिक धनवान होकर अन्य बहुत से जनों की परवस्ती करता है और वह जनता में बड़ा प्रतापी गिना जाता है। जिसके हाथ में तराजू का चिन्ह हो वह व्यापार में

खूब लक्ष्मी पैदा करता है। जिसके हाथ में शंख, चक्र या ध्वजा आदि प्रशस्त चिन्ह हों वह व्यापारादि के कार्य में बड़ा होशियार होता है और अधिक धन प्राप्त करता है, एवं अपना जीवन सन्मानित बिताता है। हाथ में यदि त्रिशूल का चिन्ह हो तो वह राज्य वैभव का लक्षण समझना चाहिये। जिस भाग्यशाली के हाथ या पैर में सूर्य, नन्दावर्त, सिंहासन, चंद्रमा और तोरण आदि स्पष्ट लक्षण हों वह नर संशय रहित सार्व भौम सम्राट होता है। जिस मनुष्य का मस्तक याने सिर पर्वत के शिखर समान मध्य भाग में से कुछ ऊंचा हो उसे महान पुरुष समझना चाहिये। जिसके सिर में टाल पड़ गई हो याने सिर के मध्य भाग में से बाल उड़ गये हों वह धनवान तथा पुत्रवान होता है, परन्तु जो जन्म से ही गंजा हो या बीमारी से बाल उड़ गये हों तो वह निर्धन होता है। कहा भी है कि—"विरलदन्ता कश्चित् मूर्खा खल्वाटो निर्धनं कश्चित्" बिरले दांतों वाला कोई ही मूर्ख होता है और सिर में टाल वाला कोई ही निर्धनी होता है। त्यों एकाक्षी कोई ही सरल होता है, तथा बिल्ली की आंखों के समान आंखों वाला

कोई ही दातार होता है। जिस मनुष्य का मस्तक विशाल होता है वह पदवी प्राप्त या भाग्यवान होता है। छोटे मस्तक वाला कम आयुष व कम बलवान होता हैं। जिसके मस्तक पर कमल के समान लक्षण चिन्ह हो वह जनसाधारण से श्रेष्ठ होकर लोगों में कीर्ति प्राप्त करेगा। जिसके मस्तक के बीच में खड्डा हो और इर्द गिर्द ऊंचाई हो वह मनुष्य दगा बाज, प्रपंची व कपटी होता है। नीचे मस्तक वाला जीवन पर्यन्त खराब कर्म करता रहता है और अपने काले कृत्यों के कारण जनता में अपयश का पात्र बनता है। छोटे मस्तक वाला कंजूस और उन्नत मस्तक वाला पुरुष राज्य ऋद्धि सुख भोगता है।

जिसके मुख में एकतीस दांत हों वह राज मान्य होता है। जिसके तीस हों वह सुखी और इससे कम दांतों वाला अनिष्ट फल भोगता है। जिसके सफेद दांत हों वह लोगों में सम्मान प्राप्त करता है। लाल रंगके दांत वाला कपटी होता है। दांतों की नीचे की पंक्ति ऊपर की पंक्ति से दूर रहती हो वह धन हीनता का लक्षण समझना चाहिये। जिसके दांत बाहर

निकले हुये हों वह साधारण तथा धनवान होता है, परन्तु यदि वह स्त्री हो तो विधवा हो जाती है। जिसकी जिह्वा रक्त रंग और नोकदार हो वह विद्वान होता है। जिसकी जीभ काले रंग की हो वह दासत्व को प्राप्त होता है। सुफेद जीभ संपन्नता का लक्षण है। जिस की जीभ मुख से बाहर न निकल सकती हो वह पापकर्म करने वाला और जिसकी जीभ तालू को न लग सकती हो वह दुखी होता है। जिस मनुष्य के होठ लाल रंग के होते हैं वह भाग्यशाली होता है और उसे स्त्रियां प्रेम की दृष्टि से देखती हैं। काले होठ वाला कुटुम्ब विरोधी और पीले होठ वाला लंपट होता है। जिसके होठ बहुत मोटे होते हैं प्रायः वह भी विशेष विषयी होता है। पतले होठ वाला प्रायः बुद्धिमान होता है। जिसके होठ सदैव सूखे रहते हों प्रायः वह दरिद्री-निर्धन होता है।

जिस मनुष्य के हाथ गोड़ों तक लंबे हों वह गुणी, धनी और परोपकारी होता है। जिसकी हथेली उन्नत होती है वह मनुष्य दातार होता है। जिसके हाथ में बहुत रेखायें होती हैं या जिसके रेखायें होती ही नहीं

वह मानव दरिद्री होता है, और प्रायः उसकी आयुष भी कम होती है। यों तो सविस्तर रीति से सामुद्रिक लक्षणों का उल्लेख करें तो यह पुस्तक बहुत बड़ी हो जायगी इसलिये यहाँ इस विषयका सविस्तर वर्णन नहीं लिखा। मनुष्य के हाथ में अंगूठे व उंगलियों में पड़े हुये शंख, शीप, चक्रादिक का फल नीचे की कविता में देखिये—

एक शंख सुखिया करे, दो दरिद्र की खान,
तीन शंख निर्गुण करें, चार करें गुणवान।
पांच शंख निर्धन करे, छहसे हो सरदार,
जगमें ख्याति पायके यश व्यापे तलवार।
दशतक लेकर सातसे शंख होंय यह रीत,
हो राजा वह मुल्कका, इसमें ना विपरीत।
एक शीप सद्गुणी करे, वक्ता दोय निहाल,
जगजन सब प्रेमी बनें, वाणी होय रसाल।
तीन शीप जग यश मिले, और बने धनवान,
जनता गुण माने सदा, नित्य करे सन्मान।
चार शीप से अधिक ले, दशतक सीमा मान,
ऋद्धि सिद्धि सब गुण मिलें, महा पुरुष वह जान।

एक चक्र होवे कमी, सुखमें रहे हमेश,

दो से सुख मरदार हो, झूठ नहीं लवलेश।

तीन चक्र वाला सदा, पावे धनका लाभ,

चार चक्र दारिद्रता, दुख मुख के स्वभाव।

पाँच चक्र पावे कमी, मोमे खूब विलास,

भाग्यवान छह चक से, क्रमाधिक उल्लास।

सात चक्र से सुख मिले, आठ से तनमें रोग।

राजा हो नव चक्र से दश से सिद्धि योग।

(हरिगीत में)

हाथ के अंगुष्ठ दोनों आठ अंगुली लीजिये।

गिन पर्व सबके तीनसे फिर भाग उसको दीजिये।

भागांक ग्यारह और बारह आय तो सच जानिये।

धनधान्य पूर्ण समृद्ध गुणवान् उस सुखी पहचानिये।

भागांक तेरह हो कमी मन हीन वह रोगी बने।

हो पंच दश भागांक जिनका चोर वे होते घने।

भागांक गर सोलह मिले तो पूर्व उसको भेजना।

सत्रह अगर भागांक हो पापी अभागी देखना।

दोहा—अठारह भागांक से, सुखी सपून्नत मान,

उन्निस भागा-कारसे, बुद्धिमान गुणवान।

बीस भाग दो तीन से तो तपसी योगीश,
एक बीस भागांक हो ज्ञानी महा मुनीश ।

शुभाशुभ शकुन विचार

गांव शहर में जब कभी, करना होय प्रवेश,
तो मन से सुमरो सदा, गौतम नाम गणेश ।
वेश्या मछली वहल हो, मदिरा भर्त्ता अन्न,
यदि ये पट सन्मुख मिलें, तो पावे अति धन्न ।
शंख दूध दही बाछड़ी, या हो कन्या गाय,
शृंगारिन हाथी मिले, भला शकुन कहलाय ।
पुत्र सहित गर्दभ मिले, पोठी पोठ समेत,
घोड़े चढ़ क्षत्रिय मिले, लाभ गजसम देत ।
फूल सहित मालन मिले, तंबोली ले पान,
कर शीशा नापित मिले, तो अगणित धन जान।
घुर्राता कुत्ता मिले, मनमें राखिये होश,
सांड मिले सन्मुख भला, तो हो सुख संतोष।
गेहूं मूंग गाडी मिले, हलपति हांकन हार,
धवल बैल दोनें जुड़े, तो सुख अपरंपार ।
पुस्तक ले पण्डित मिले, वेद उचारे चार,
मस्तक कुंकुम तिलक हो, शकुन एह श्रीकार ।

वर कन्या सन्मुख मिले, गाय सुहागन गीत,
सन्मुख बाज बाजते, यह शुभ शकुनी रीत
इक्षु श्रीफल सुख मिले, धन द फल सहकार,
राम सियाफल यदि मिले, लाभ अधिक ॰
कर लिये भामिनी मिले, मिले कुवारी बाल,
चार मिलें विद्यार्थी, यह सुखदा कर ख्याल
हनमत वहमे गडमड़े, सन्मुख अश्व सवार,
शस्त्र सहित क्षत्रिय मिले, नहीं लाभ का पार
बायें ब्राह्मण पुत्र हो, कर मस्तक लिपि चार,
मैंस लिये कामिनी मिले, निश्चय ब्याहे नार ।
कोरे घट में बालिका, गोद लिये जब ज्वार,
मिले शकुन ऐसा जिसे, निश्चय पावे मार ।
बायें बोले देवला, दहने भैरव बास,
मिले शकुन ऐसा जिसे, जीमे की बहु आस ।
सारस कौवा मोर भी, उल्लू गर्दभ सार,
गीदड़ सिदरी बैल का, बोलन वाम सुखकार ।
चलते भमरी बोलती, शकुन शुभंकर जान,
निश्चय यह कहता रही, होगा कार्य प्रमाण ।
एक ही बकरा बैल था, पांच मैंस पर श्वान,

तीन गाय सन्मुख मिलें, तो यह अति शुभमान।

सन्मुख वत्स चुखावर्ता, मिले दुधारु गाय,

ऐसा फल इस शकुनका, अतिशय लक्ष्मी पाय।

सन्मुख कोयल कूकती बैठी आंबाडार,

सुख पावे पर देश में, हो दुख का संहार।

बोले तीतर गमनमें, प्रात समय यदि होय,

दुख दोहग सब दूर हों, संशय मनसे खोय।

सुस्क वृक्ष पर रवि तरफ वायस करे विलास,

अशुभ शकुन यह जानिये, होय अधिक परिताप

बायें से दहने बुरा, रोगी रीछ सुनार,

गीदड़ बोलें चहु दिशे; सन्ध्या अशुभ विचार।

दहने पग से श्वान जो, दहना अंग खुजाय,

ऋद्धि सिद्धि संपति मिले, खूब खुशी हो जाय।

कुत्ता दहने पैरसे, खुजवे बांया अंग,

अशुभ शकुन यह वर्जिये, करे कार्य को भंग।

गमन समय यदि आपके, श्वान झटकता कान,

कार्य सिद्धि संशय पड़े, अशुभ शकुन पहचान।

बिन त्राजू बनिया मिले; पंडित पुस्तक हीण,

शस्त्र रहित चत्रिय मिले, समझ कार्य फिर चीण

रासम महिषी नर पड़ा, लड़ती मिले मँजार,
रवान महिष मानव लड़े, यह भी अशुभ विचार।
विधवा अथवा बन्ध्यका, रजस्वला या होय,
ऐसे शकुने जो चले, घर नहीं देखे सोय।
माता विधवा शुभ कही, पर विधवा दुखकार,
बालक घरमें रो रहे तो यह कष्ट पुकार।
कर लाठी इसहाव या, करतल हाथ सुधार,
फिर नहीं देखे देश को यदि कर लोह कुठार।
मरघट जाता शव मिले, रुदन करत नर नार,
यदि रोगी जोगी मिले, औंदंडी दुखकार।
अपने विन यदि छींक हो, बिल्ली काटे राह,
स्थिरता स्वल्प कर फिर चले, हो यदि कुशल की चाह
यक दफा दो तीन या, यदि शुभ शकुन न पाय,
देख मुहूरत दूसरा, उस दिन कभी न जाय।
प्रथम शकुन शुभ हो कभी, फिर हो अशुभ प्रकाश,
तो फल होवे अशुभका, सुन कर होय उदास।
आढ्य मद पीकर पड़ा, खुले केश की नार,
तिलक बिना ब्राह्मण मिले, पहु जावे यमद्वार।
हिन्दी तुकबन्दी किया, शकुना-मत्ती प्रकाश,
'तिलक' कहे शुभ शकुन से, घर घर मंगलवास।

वार्षिक फल व तेजी मन्दी

सर्व साधारण के हितार्थ हम यहाँ पर गणित ज्योतिष की एक ऐसी कुंजी बतलाते हैं कि जिससे अल्प बुद्धिवाला मनुष्य भी वर्ष में होने वाली तेजी मन्दी व अन्य लाभा-लाभों को सुगमता से जानकर उनसे कुछ फायदा उठा सके।

विक्रम सम्वत् का जो अंक हो उसे तीन से गुणाकार करो। गुणाकार करने पर उसमें तीन और मिला दो। अब सबको एक कर उसे सातसे तकसीम कर दो। तकसीम करने पर यदि शेष में ४ रहें तो समझो कि वर्ष सुभिक्ष अच्छा रहेगा। १—२ या ६ शेष रहे तो समझो कि साल साधारण—मामूली रहेगा। यदि ३ या ४ बचें तो समझना चाहिये कि उस वर्ष में बहुत खराब परिणाम उपस्थित होंगे।

इसी प्रकार शक के अंक को तीन गुणा करके उसमें दो और मिलाना और सारी रकम एकत्रित करके उसे चार से भाग देना, फिर विभाजित रकमोंमें से यदि शेष में दो बचें तो वृष्टि अल्प समझना और यदि एक या तीन बचें तो समझो कि उस साल काफी बारिस होगी।

यदि मंगल, शनि, राहू और सूर्य एक ही राशिमें

बैठे हों तो पूर्व दिशामें उत्पात होगा । यदि सूर्य, चन्द्र, राहु और शनि एक राशिमें आवें तो समझो कि उस साल में किसी एक बड़े सम्राट की मृत्यु होगी । चंद्र,मंगल, राहु और शनि एक राशिमें निवास करते हों तो जनता में रोगोत्पत्ति होना समझना चाहिये। शुक्र, मंगल और सूर्य एक राशिमें हों तो उस साल में अन्न रस कस वगैरह तेज हों और राजा को भय पैदा हो ।

यदि गुरु, चन्द्र और बुध सिंह राशिमें वास करते हों तो किसी राजा की मृत्यु हो और प्रजा को भी कष्ट उठाना पड़े । शुक्र, शनि, राहु और सूर्य यदि एक राशि में एकत्रित हों तो समझो कि सर्वजनता सुख शान्तिका अनुभव करे । गुरु, शुक्र, मंगल और शनि एक राशिमें बसे हों तो अल्पवृष्टि हो, अन्न महँगा हो, प्रजा को भारी संकटका सामना करना पड़े और यदि गुरु, सूर्य, राहु और केतु एक राशिमें हों तो सर्वसाधारण को सुख हो । जब शनि, मंगल और राहु एक राशिमें बैठते हैं तब उसे कर्तरी योग कहते हैं । इस योग से राज्यों में फिसाद पैदा होता है और वृष्टि न होने से प्रजा को भी बड़ा कष्ट उठाना पड़ता है ।

विक्रमी चढ़ते वर्ष का वार फल

दक्षिण देशोंमें विक्रम वर्षका प्रारम्भ कार्तिक शुक्ला एकमसे होता है अतः उसी हिसाव से यदि वर्ष प्रारम्भ तिथि के रोज **सोमवार** हो तो व्यापारियों को चाहिये कि अन्न का संग्रह करके उस भाद्रपद शुक्ल द्वितीया से विक्रय शुरू कर आश्विन शुक्ल सप्तमी तक लाभ उठावें। वर्ष प्रारंभ तिथि को **मंगलवार** हो तो अन्न संग्रह करके आश्विन मास में विक्रय करना लाभ कारी है। काली मिरच, छुवारे, गुड़, बिनौले और पीतल आदि भादवे में विक्रय करना लाभ प्रद होगा। **बुधवार** को वर्ष प्रारम्भ हो तो तेल, घी, मक्खन, मोठ, बिनौले, गुड़, कसुवा, लाल-मिरच, काली मिरच, खांड, राल, मजीठ और सुपारी ये वस्तुयें फागुन मास में वेचने से लाभदायक हैं। वर्ष प्रारम्भ में **गुरुवार** हो तो अनाज का संग्रह लाभकारी होगा। गेहूं, गुड़, विनौले, खांड, शक्कर, तेल और हलदी के भाव में तेजी हो और वेचने वाले को फायदा हो। वर्ष प्रारम्भ में **शुक्रवार** पड़े तो अन्न का संग्रह किया हुआ आश्विन या कार्तिक मास में लाभदाई हो। यदि वर्ष प्रारम्भ में **शनिवार** हो तो समझो कि अषाढ

शुक्ल १५ से अन्न तेज हो और संग्रह किया हो तो मगसिर मास में विक्रय करने से लाभ मिले। वर्ष प्रारम्भ में जो रविवार आया हो तो गुड़, घी, तिल, गेहूं, बाजरा अषाढ़ सुदी द्वितीया से श्रावण सुदि द्वितीया तक विक्रय करे तो लाभ प्राप्ति हो। उस साल बारिस भी अच्छी होगी तथापि घी और तेलका कार्तिक मास तक तेज रहेगा।

"संक्रान्ति फल"

सूर्य क्रमसे बारहों राशियों में घूमता रहता है, परन्तु जब वह एक राशि से दूसरी राशि में संक्रमण-गमन करता है, तब उसे संक्रान्ति कहते हैं। रविवार के रोज कोई सी भी संक्रान्ति हो तो वह बड़ी कड़ी कहलाती है। उसी मास में अनाज तेज होजाता है, तेल, घी, खांड, गुड़, आदि चीजों का भाव बढ़ जाता है और किसी भी ओर से भय की सम्भावना होती है। सोमवार की संक्रान्ति उतनी कठिन नहीं होती, साधारण मानी गई है, परन्तु इसमें घी, तेल, कपास, और सूत का भाव सस्ता ही रहता है।

मंगलवार की संक्रान्ति हो तो अन्न के भावों में

तेजी का रुख मालूम दे और रसादि पदार्थ भी महंगे होवें, जैसे कि घी, तेल, खाँड, दूधादि। इस मास में रक्त-विकारादि रोगों के पैदा होने की भी सम्भावना है और लाल वस्तुके भावमें भी तेजी होने का संभव है। **बुधवार** की संक्रान्ति शुभकारक होती है। जनता में सुख संतोषा पैदा करे; अन्नादि पदार्थ सस्ते हों, व्यापार अच्छा लाभप्रद रहे। **गुरुवार** की संक्रान्ति बड़ी श्रेष्ठ मानी जाती है। इसमें सब तरह से प्रजा को आराम रहता है। **शुक्रवार** की संक्रान्ति भी प्रजा में सुभिक्ष जैसी शान्ति रख कर जनता के मनको सुखी रखती है। **शनिवार** की संक्रान्ति जरा कड़ी होती है। यदि यह संक्रान्ति वर्षा ऋतु में बैठे तो एक बूंद भी वृष्टि न होने दे।

आर्द्रा, स्वाती या मूल इनमें से किसी भी नक्षत्र में चाहे जिस संक्रान्ति का परिवर्तन हो तो उसके फल स्वरूप में अन्न के भाव में तेजी पैदा होती है। यदि कर्क संक्रान्ति के समय भरणी, मघा या चित्रा इनमें से कोई सा भी नक्षत्र हो तो अनाज का संग्रह करना लाभ कारक समझना चाहिये। कुंभ और मीन संक्रान्ति के मध्य में रोहिणी नक्षत्र आता है, यदि वह अष्टमी के

दिन आवे तो वृष्टि कम होती है, नवमी के दिन आवे तो मध्यम होती है और यदि वह दशमी के रोज आवे तो काफी वृष्टि होती है।

चैत्र मास की मेष संक्रान्ति यदि रवि, शनि या मंगलवार को बैठे तो गेहूं, चना महगा करती है, कष्टकारी होती है, पशुओं में रोगोत्पत्ति हो। सोमवार की हो तो सुखाकारी समझना चाहिये। सुफेद वस्तु, घी, तेल, कपास में तेजी हो और रुई में सैकड़ा बत्तीस टका जितना तेजी का भाव उत्पन्न करे। यदि बुध, गुरु या शुक्रवारी हो तो जनता के लिये सुखाकारी जानना और अन्न भी सस्ता करती है।

वैशाख मासकी वृष संक्रान्ति रवि, शनि या मंगलवारी हो तो जनता दुःखी हो, गेहूं, चना, जुवार तेज हो, कपाये की वस्तुयें रसादि, सुपारी, मजीठ और कपास का भाव बढ़े, रुई के भाव में सैकड़े पचीस टका जितनी तेजी हो। सोमवारी हो तो अन्न सस्ता हो। गुरुवारी रागोत्पत्ति करे, बुध या शुक्रवारी हो तो रसादि पदार्थ साधारण पैदा हो।

जेठ मास की मिथुन संक्रान्ति रवि, शनि, या

मंगलवारी हो तो जनता में रोगोत्पत्ति करे, अन्न भी महंगा करे, भय पैदा करे। बुधवारी हो तो जनता को सुखदायक हो, वस्तुयें भी समान भाव में रहें। सोम, शुक्र, या गुरुवारी हो तो सुभिक्ष रहे, परन्तु सिन्ध देश में दुर्भिक्ष रहे, और रुई के भाव में खासी तेजी रहे।

आषाढ मासकी कर्क संक्रान्ति रवि, शनि और मंगलवारी हो तो वृष्टि विशेष हो, परन्तु अन्न की पैदावार कम हो। राजाओं में विग्रह हो, अन्न तेज हो, रुई के भाव में खूब तेजी पैदा हो। गुरुवारी हो तो पवन विशेष चले, वृष्टि भी हो, गुड़ का भाव बढ़े। सोमवारी होने पर रसादिका भाव बढ़े और रुई में भी तेजी आवे। बुध या शुक्रवारी हो तो सुभिक्ष हो, ओले पड़ें बारिश अच्छी हो। यदि रविवारी हो तो तमाम वस्तुओं का संग्रह करना चाहिये, क्योंकि धान्य का भाव बढ़ जाता है। जो कर्क और मकर संक्रान्ति रवि, शनि या मंगलवारी हो तो अनावृष्टि होवे, अकाल पड़े, युद्ध छिड़ने की संभावना हो, अन्नादि का भाव बढ़े। यदि कर्क संक्रान्ति मंगलवार को बैठे और मकर संक्रान्ति शनिवार को बैठे तो देश के लिये भयंकर हानिकारक समझना चाहिये।

भाद्रव मास की सिंह संक्रान्ति रविवार को लगे तो वृष्टि कम हो, परन्तु अन्नादि अच्छा पैदा हो। मंगलवारी हो तो वृष्टि अधिक हो। सोम, बुध, गुरु या शुक्रवारी हो तो मूंग, उड़द आदि अधिक प्रमाण में पैदा हों, जनता सुखी हो, परन्तु देश में कहीं कहीं पर क्लेश भी पैदा हो। शनिवार को बैठे तो मेघ वृष्टि ठीक हो, परन्तु धान्य कम पैदा हो और तमाम वस्तुओंके भावमें तेजी आवे।

भाद्रव मास की कन्या संक्रान्ति रविवार को बैठे तो वारिस अधिक होवे। सोमवारी बैठी हो तो जनता को सुख दायक हो। मंगलवारी हो तो वृष्टि कम होवे, बुध, गुरु या शुक्रवारी हो तो अन्नादि पदार्थ अच्छे प्रमाण में पैदा हों, लोग सुखी हों, परन्तु पश्चिम सिन्ध में कुछ उपद्रव उत्पन्न हो। यदि शनिवारको बैठे तो अन्न का भाव बढ़े।

आश्विन मास की तुला संक्रान्ति में वृष्टि हो तो धान्यादि को हानि कारक हो। रविवार को बैठे तो ब्राह्मणों को पीड़ा पैदा करे। मंगलवार को बैठे तो धान अधिक प्रमाण में पैदा हों। गुरुवारी या शुक्रवारी

हो तो अन्नादि सस्ता होवे। कपास तथा रुई का भाव अधिक प्रमाण में तेज हो। धान (चावल) खूब पैदा हों, तथा शनिवारी अनाज भाव महंगा करती है।

कार्तिक मास की **वृश्चिक संक्रान्ति** में वृष्टि होवे तो धान्यादि मध्यम प्रकार का पैदा हो। रविवारी हो तो विशेष अन्न उत्पन्न हो। सोमवारी होवे तो जनता सुखी रहे। मंगलवारी बैठे तो धान्यादिका संग्रह करने से लाभ हो। बुधवारी होने पर घी, धान्य सस्ता हो। गुरुवारी धान्य महँगा और रसादि सस्ता करे। शुक्रवारी होने पर घी, चावल और मूंग सस्ता होवे। शनिवारी हो तो अनाज में खराबी पैदा करे, जनता में भी रोगोत्पत्ति पैदा करे।

मगसिर मास की **धन संक्रान्ति** में वृष्टि हो तो मध्यम प्रकार की धान्यादिकी उत्पत्ति होवे। रवि, मंगल या शनिवार को बैठे तो देश में पीड़ा पैदा हो। कपास, घी, तेल और सुवर्ण का भाव तेज हो। रुई के भाव में आशातीत तेजी आवे, शरदी विशेष पड़े। सोमवारी होने पर रुई के भाव में अषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा से पहले ही थोड़ी तेजी आवे। बुध या गुरूवारी होने से धान्य तेज हो,

और शुक्रवारी होने पर जनता को सुखकारी हो, परन्तु देश में उपद्रव होवे और रूई का भाव एकदम नीचे गिरे।

पोष मास की मकर संक्रान्ति रविवार को बैठे तो धान्य पीके भावमें बढ़ाव करे। सोमवारी शुभकर रहे। मंगलवारी अनाज को तेज करे और बुधवारी हो तो तमाम चीजें सस्ती होवें। गुरु या शुक्रवार को लगे तो देश में अन्नादि काफी पैदा हो और रूई के भाव में विशेष मंदी हो। शनिवारी होने पर मयकी समानता हो और धान्य में व्यापारियों को अधिक लाभ हो।

महामास की कुम्भ संक्रान्ति रविवार को बैठे तो राज्यों में लड़ाई का संभव है, सोमवार को लगे तो मूंग, चवा, जुवार, मसूर घी और कपास आदि पदार्थों की तेजी हो और रुई में साधारण तेजी देख पड़े, बुध या गुरुवार को लगे तो भी धान्यादिक में तेजी हो, रसादिका भाव विशेष चढ़। शुक्रवारी हो तो सुफेद और लाल पदार्थों के भाव में वृद्धि हो और रुई के भावमें भी कुछ तेजी हो। शनिवार को बैठे तो समाव रहे, घी की बिकरी लाम दायक रहे।

फाल्गुन मास की मीन संक्रान्ति रविवारी होने

पर रसादि तेज हों । सोमवारी होने से जनता सुखी रहे, परन्तु पशु पक्षियों में पीड़ा उत्पन्न हो। मंगलवारी से भी जनता में सुख शान्ति रहे और सुवर्ण भाव तेज हो। बुधवारी होने से अन्न सस्ता रहे। गुरूवार को लगने पर रसादि सस्ते रहें, परन्तु सुख प्रद नहीं हो। शुक्रवारी हो तो सुफेद वस्तु सस्ती रहे। शनिवारी हो तो विशेष उपद्रव कारी समझना चाहिये, रूई के भाव में तेजी करावे।

शुक्ल द्वितीया के चन्द्रमा का फल

द्वितीया के रोज उदित चन्द्रमा की उत्तर ओरकी किरण यदि ऊंची मालूम हो तो रुई के भाव में तेजी होगी यह समझना चाहिये। जो दक्षिण दिशा तरफ की किरण ऊंची जान पड़े तो रुई के भाव में मन्दी होती है। यदि द्वितीया के चन्द्रका रविवार को दर्शन हो तो तमाम वस्तुओं में पन्द्रह रोज के भीतर मन्दी हो। अफीम मे विशेष मंदी हो और रुई में तेजी मंदी हुआ करे। सोमवार को उदित चन्द्र दर्शन हो तो पन्द्रह दिनमें अफीममें अधिक रुई में उससे कम और चांदीमें कुछ तेजी आवे। मूंग, मोठ और चणा आदि द्विदल धान्य में भी तेजी होवे। मंगल

वार को द्वितीया चन्द्र दर्शन हो तो चन्द्रह रोजमें रुईके भावमें तेजी हो और चांदी में तेजी मन्दी होती रहे। बुधवारको दोयम का चन्द्र का दर्शन हो तो चांदीके भाव में उतार चढ़ाव रूप तजी हो, तेजी मन्दी लगाने वालों को लाभ हो और रुई में मंदी हो। द्वितीयाका चन्द्र यदि गुरुवार को उदित हो तो रुई और अफीम के भावमें तजी हो, चांदीमें उतार चढ़ाव हो और घी तज होवे। शुक्रवार को द्वितीया चन्द्र उदित हो तो एक महीनेमें अफीमके भाव में अतितजी हो। रुईमें उतार चढ़ाव होकर तेजी हो, स्वादिष्ट पदार्थों की विशेष बिक्री हो। चांदीमें कुछ तजी हो, परन्तु उनमें ठीक प्रमाणमें तेजी हो। चना, तिल और उड़द का भाव बढ़े। शनिवार को चंद्रोदय हो तो चांदी, रुई और कुछ धान्यमें तेजी होवे।

मेषराशि के चन्द्रमा में यदि चन्द्र उदित होवे तो धान्यका भाव चढ़े। वृषराशिमें हो तो तिल, उड़द आदि धान्यमें तजी हो। मिथुन राशिमें चंद्रोदय हो तो कपास सूत वगैरहका भाव चढ़े। कर्क में उदय हो तो अनावृष्टि होव। सिंह में हो तो धान्य का भाव तेज हो। कन्यामें चंद्र दर्शन हो तो पशुओंका संहार हो और राजाओं में

परस्पर विरोध भाव पैदा हो। तुला में हो तो व्यापारिक वस्तुओं का भाव बढ़े। वृश्चिक में होवे तो धान्यादि की पैदास अच्छी हो। धन या मकर राशिमें हो तो शुभकर हो और कुम्भ राशिमें हो तो चणा, उड़द तथा तिलका विनाश हो, एवं मीन राशिमें चंद्र दर्शन हो तो सुभिक्ष कर्त्ता है।

तिथिवार के योगायोग का फल

शुक्लाएकम बुधवार को हो तो बीस दिन बाद चांदी में कुछ मंदी हो, घीका भाव बढ़े। शुक्लाएकम गुरुवार को हो तो भी चांदी में कुछ मन्दी का ही रुख देख पड़े। शुक्रवारी एकम हो तो रुई का भाव तेज हो। सुदि एकम शनिवारी और सुदि दशमी रविवारी हो तो रुई और धान्यका भाव चढे। सुदि एकम, अष्टमी और पूर्णिमा बुधवारी हो तो धान्यादि सर्व वस्तुओं में कुछ तेजी हो और रुई में भी कुछ तेजी मन्दी होवे। यदि सुदि द्वितीया सोमवार को उदित हो तो पन्द्रह दिन में रुई में तेजी हो या शुक्रवार को अथवा शनि को शुक्ला द्वितीया उदित हो तो भी रुई के भाव में तेजी हो। सुदि द्वितीया बुधवारी सुदि छठ रविवारी, सुदि दशमी या पूर्णिमा गुरुवारी हो-

तो घी का भाव बढ़े । गुरुवारी तिथिका क्षय हो और सुदि द्वितीया तथा दशमी शुक्रवारी हो तो रुई में खासी तेजी करे । सुदि तृतीया या चौथ की वृद्धि हो तो मूंग व घी महँगा होवे । सुदि तीज या चौथ माघ या पोष महिने में वृद्धि हो तो अनाज के भाव में भी वृद्धि हो। सुदि एकम, पंचमी या चौदश बढ़े तो सुभिक्ष करे और घटे तो दुर्भिक्ष करे । शुक्र पंचमी सोमवारी हो तो उसी दिन अफीम व रुई के भाव में तजी हो । सुदि पंचमी को मंगलवार हो तो चांदी में आठ दिन बाद कुछ तेजी हो और शुक्र या शनिवार हो तो रुई का भाव बढ़े । सुदि छठ सोम या मंगलवारी हो तो गुड़, गेहूं आदि खासखास खानी वस्तुओं के भावमें तेजी हो। यदि बुध, गुरु, शुक्र अथवा शनिवार हो तो एक मास तक धान्यादि महँगा रहे । सुदि आठ गुरुवारी और सुदि दशमी रविवारी पूर्ण हो तो रुई में तेजी होवे, एक मास में अवश्य भाव में वृद्धि हो। सुदि आठ कम घड़ियों की हो तो रुई के भाव में साधारण तेजी हो, अगर सिर्फ दो ही घड़ी की हो तो अधिक तेजी हो। सुदि सप्तमी को सोमवार और सुदि त्रयोदशी को शनिवार हो तो यह महीना जरा कठिन समझना चाहिये।

सुदि अष्टमी को बुधवार हो तो उस पक्ष में धान्यादि तथा अफीम में उतार चढ़ाव होवे। सुदि दशमी को रविवार हो तो रुई में तेजी आवे। सुदि एकादशी बढ़े तो घी का भाव गिरे और यदि घटे तो घी का भाव चढ़े, इसी तरह पूर्णिमा बढ़े तो घी का भाव घटे और पूर्णिमा घटे तो घीका भाव बढ़े। पूर्णिमा दोंहों तो चांदी एवं अन्नभाव में गिरावट हो। यदि पूर्णिमासी मात्रपाँच घड़ी की हो तो रुई का भाव बढ़े और कमी पाँच घड़ी से अधिक हो तो रुई में मंदी आवे। पूर्णिमा रविवार को हो तो दश दिनमें रुई का उतार चढ़ाव हो और अलसी में कुछ तेजी एवं सरसों में कुछ तेजी होवे। पूनम को शुक्रवार हो तो मीलों के शेर तेज हों, धान्यादि में तेजी आवे और रुई में मंदी हो, पूर्णिमासी को शनिवार हो तो रुईमें एक महीनेतक मंदी रहे। पूनम अपने नक्षत्र से कम घड़ियों की हो तो अन्न का भाव गिरे और समान हो तो समान रहे एवं अधिक हो तो भाव में भी अधिकता आवे। पूर्णिमाका ऊगता चन्द्रमा यदि लाली लिये हुवे हो तो रुईके भावमें वृद्धि हो। यदि श्यामता पर उदित हो तो रुई का भाव गिरे। सुदिमें सोलह दिनका और वदि में चौदह दिन

का पथ हो तो चांदी के भाव में तेजी होती है। एक पक्षमें तीन बुधवार आवे तो फीका भाव पड़े।

यदि पंचमी दो हों तो रुई में खासी तेजी रहे। यदि छठका क्षय हो तो भी रुई की तेजी हो। यदि छठ मात्र दो घटिका ही हो तो रुई में भयङ्कर मंदी होवे। रविवार को रेवती नक्षत्र हो तो भी रुई में तेजी हो। यदि सोमवार या बुधवार को पंचक लगें तो रुई में मंदी हो और शनि वार को लगें तो उतार चढ़ाव होवे। रविवारी तिथिका क्षय हो और सोमवारी अमावस्या हो तो रुई के भावमें काफी मन्दी हो। कार्तिक सुदि पंचमी के दिन मूल नक्षत्र जितनी घड़ी हो और अषाढ़ पूर्णमासी को मूल नक्षत्र जितनी घड़ी हो उन दोनों का मिलान करने से जितनी संख्या आवे उस साल में रुपये का उतने सेर अन्न बिके सुदि दशमी यदि ४० घड़ी हो या इससे कुछ उपरान्त हो तो उस साल में पन्द्रह सेर का अनाज बिके और दो ऐसी सुदि दशमी हों तो तीस सेर का भाव हो। इसी प्रकार बारह महीने की शुक्ल दशमी देखकर हिसाब सम झना। कार्तिक सुदि पंचमी और पौष बदि अमावस्या ये दोनों शनि, रवि या मंगल वारी हों तो अन्न के भाव

में विशेष तेजी होवे। चैत्र सुदि एकम से लेकर वैशाख सुदि पूर्णिमा तक जिन जिन चीजों में तेजी हो उन पदार्थों में भाद्रव मास में भी तेजी हो। कार्तिक सुदि पंचमी तथा फागण सुदि द्वितीया जिस वार में हों उसका फल नीचे मुजब समझिये, मंगलवारी होने से धान्य तथा रस कस महँगा हो। रविवारी और शनिवारी हो तो अन्नादि में तेजी करे। सोम, बुध, गुरू या शुक्रवारी हो तो अनाज सस्ता करे, वर्ष साधारण अच्छा रहे और प्रजा में शान्ति रहे। पूंछड़ी वाला तारा (धूम-केतु) निकले तो रुई के भाव में प्रायः दूनी तेजी हो।

निम्न राशियों के नीचे लिखी वस्तुयें इन राशियोंके साथ सम्बन्ध रखती हैं इस लिए इस कोष्ट से तेजी मन्दी का ग्रहोंकी चाल से पता लग सकता है।

"राशिवस्तु कोष्टक"

ऊपर के कोष्टक से जब जिस वस्तु की तेजी मंदी जाननी हो तब उस वस्तु की राशिमें देखकर किस राशि में सूर्यादि ग्रह रहे हुये हैं यह देखना। जिस राशिकी वस्तु हो उस राशिसे चौथी, दशवीं, दूसरी, ग्यारहवीं, पांचवीं, या नवमी राशि में गुरु स्थित हो तो उस राशिकी वस्तु सस्ती होती है। यदि पहली, तीसरी, छठी, आठवीं, बारहवीं राशि में गुरु हो तो उस राशि की वस्तु तेज भाव में बिकती है। यदि बुध दशवीं, ग्यारहवीं, आठवीं पांचवीं या दूसरी राशिमें हो तो उस राशि की वस्तु सस्ती बिके और यदि पहली, तीसरी छठी, सातवीं, नवमी और बारहवीं राशिमें बुध हो तो उस वस्तुकी तेजी हो।

यदि शुक्र पहली, दूसरी, तीसरी, चौथी, पांचवीं, आठवीं, नवमी, दशवीं और बारहवीं राशिमें स्थित हो तो सस्ती और यदि छठी, सातवीं राशि में हो तो तेज भाव में बिके। अन्य ग्रह सूर्य, मंगल, क्षीण चन्द्र, शनि राहू और केतु ये तीसरी, छठी, दशमी, ग्यारहवीं राशिमें हों तो सस्ती और अगर ये पहली, दूसरी, चौथी, पांचवीं सातवीं, आठवीं, नवमी, बारहवीं राशिमें हों तो वस्तुभाव तेज हो। यदि पूर्णचन्द्र हो तो गुरुके समान फल

समझना। इस प्रकार नव ही ग्रहों का फल मानना। जिस राशि में तेज या मन्दी हो और उसमें बहुत से ग्रह बलवान हों तो जहाँ गुरु हो वहाँ का विशेष फल समझो। तथापि ऊच, नीच, मित्र, सम, शत्रु, मूल, त्रिकोण स्वगृही आदि ग्रहों की तार तम्यता देख कर निश्चय करो।

स्वरोदय

अब यहाँ पर स्वरोदय ज्ञान के विषय में कुछ संक्षिप्त विवेचन करते हैं, नासिका के दहने नसकोरे को सूर्य नाड़ी कहते हैं और बाँयें नसकोरे को चंद्रनाड़ी कहते हैं। जिस तरफ की नाड़ी में पवन चलता हो उस तरफ का पैर घर से चलते समय पहिले उठाना चाहिये। उसमें भी विद्वानों को चाहिये कि किसी काम को सिद्ध करने के लिये प्रयाण करते समय जिस नाड़ी में पवन प्रवेश करता हो उस तरफ ही उस ओर का पैर उठाना चाहिये। पवन बाहर निकलते समय नहीं उठाना। इस प्रकार गमन करने से कार्य की सिद्धि होती है। प्राणवायु की गति और आगति के विषय में अध्यात्मिक महा पुरुषों का कथन है कि शरीर म किसी प्रकार की व्याधी या आलस्य न होने पर स्वास्थ्य शरीर धारी मनुष्य की नासिका

के संपुटों में एक रात्रि और दिन में मिलकर प्राणवायु श्वासोछ्वास इक्कीस हजार छह सौ दफा गमनागमन करता है। विवेक विलास ग्रन्थ में लिखा हैं कि जिस ओर की नाड़ी में निरन्तर पवन चलता हो उस ओर का पैर पहिले उठा कर चलने से कार्य की सिद्धि होती है और हानि क्लेश उपद्रव नहीं होता। कितनेक विद्वानों का मत है कि यदि दूर देश में जाना हो तो चंद्र नाड़ी में जव वायु चलता हो तब उस तरफ का पैर प्रथम उठा कर प्रयाण करना श्रेयस्कर है।

स्वरोदय ज्ञान धारण करने वाले आचार्य महाराज विशेष में यह भी फरमाते हैं कि सूर्य नाड़ी में याने दहनी नाड़ी में जब वायु प्रवेश करता हो तब विषम कदम (१–३–५–७–९) उठा कर चलना और पश्चिम तथा दक्षिण दिशा में न चलना। जिस समय चंद्रनाड़ी याने बांई नाडी वायु पूर्ण हो उस वक्त सम (२–४–६ ८–१० कदम उठाकर चलना चाहिये और पूर्व एवं उत्तर दिशा में गमन न करना चाहिये। इस प्रकार प्राणवायु आदि की शुद्धि होने पर जिनेश्वर प्रभु की प्रदक्षिणा करके गमन करने से विशेषतः सर्व कार्यों की सिद्धि होती है। इस विषय में 'यतिवल्लभ' ग्रन्थ में लिखा है कि

प्राणप्रवेशे वहनाडी पादं,
कृत्वा पुरोदक्षिणमर्क बिम्बम्।
प्रदक्षिणी कृत्य जिनं च याने,
विनाप्यहः शुद्धिमुशन्ति सिद्धिम्॥

प्रयाण करने के साथ सम्बन्ध होने से प्रवेश करने में भी पूर्वोक्त विधि ही समझना चाहिये। 'दिन शुद्धि' ग्रन्थ में लिखा है कि जब प्राणवायु नासिका में प्रवेश करता हो उस समय पूर्ण नाड़ी तरफ का पैर उठा कर चलने द्वारा विद्वान पुरुष प्रवेश और गमन करते हैं।

शत्रु को जीतने की इच्छा वाले मनुष्य को चाहिये कि वह वायु सचार वाली नाड़ी से शत्रु को बांयें तरफ रक्खे, याने जिस तरफ की नाड़ी में वायु न चलता हो उधर शत्रु को रखकर विवाद में युद्ध में उस पर विजय प्राप्त होती है। इसका उपयोग मुकदमे की तारीख आदि पर भी किया जा सकता है। परन्तु जो निज को इष्ट जन हो या राजा आदि महान् पुरुष हो और उसको प्रसन्न करके कार्य लेना हो तो उस पुरुष को पूर्णांग तरफ याने जिधर की नाड़ी वायु वहन करती हो उस ओर रखना चाहिये।

तत्व में शुभ कार्य करना निषेध किया है। अस्थिर कार्य करना हो तो अग्नि, वायु और आकाश तत्व में करना अच्छा बतलाया है।

पृथ्वी तत्व में कार्य करने से चित्तकी स्थिरता रहती है, जलतत्व में कार्य करने से चित्त में शीतलता और कामदेव का विनाश होता है, तेज (अग्नि) तत्व में कार्य करने से क्रोध और संताप पैदा होता है, वायु तत्व में कार्य करने से चित की चंचलता बढ़ती है और पंचम आकाश तत्व में कार्य करने से मानसिक शून्यता होती है।

दोनों कानों में दो अंगूठे रख कर नासिका के दोनों संपुटों पर दोनों मध्यमा अंगुली, दोनों होठों पर कनिष्ठा और अनामिका अंगुली तथा नेत्रों के प्रान्त भाग में दोनों तर्जनी अंगुली रख कर अन्तः करण में ध्यान करने से पृथवी आदि तत्वों का परिज्ञान अनुक्रम से इस प्रकार हो सकता है—यदि पीला वर्ण मालूम दे तो पृथवी तत्व समझना चाहिये, सुफेद रंग देख पड़े तो जल तत्व जानना चाहिये, लाल रंग भासित हो तो तेज तत्व याने अग्नि तत्व, स्याम-कालारंग भासे तो वायु तत्व जानो

परन्तु यह नाड़ी पृथ्वी तत्व या जलतत्व में चलती हो तब इन पूर्वोक्त कार्यों में प्रवृत्त करना।

दोनों नाड़ी सदैव पाँच तत्वोंमें गमन करती हैं, इसका प्रमाण सरलता पूर्वक इस प्रकार समझना चाहिये।

जिस वक्त नाड़ीगत प्राण वायु ऊर्ध्व गमन करता हो उस वक्त अग्नि तत्व में वहन करती है ऐसा समझना चाहिये। नाड़ीस्थ प्राणवायु नीचे को बहता हो तब जल तत्व में चलती है, नाड़ीगत प्राण वायु तिरछी गति करता हो उस समय वायु तत्व में बहती है, जिस वक्त मध्यपुट में वहन करता हो उस समय पृथ्वी तत्व में सर्व व्यापक होकर प्राणवायु गति करता है।

पृथ्वी तत्व का प्रमाण ५० पल है, जल तत्व का प्रमाण ४० पल है, अग्नि तत्व का प्रमाण ३० पल है, वायु तत्व का प्रमाण २० पल है और आकाश तत्व का प्रमाण १० पल समझना चाहिये। इस प्रकार एक एक नाड़ी पाँचों तत्वों में गति करती हुई एक सौ पचास पलों को भोगती है। इस तरह चंद्रनाड़ी चलती हो उस समय पृथ्वी या जल तत्व में ही शुभ कार्य करना इष्ट फल दायक कहा है, परन्तु अग्नि, वायु और आकाश

उत्तर दिशा में जाना अर्थ सिद्ध करता है। मिथुन, तुला और कुंभ राशि में पश्चिम दिशा में प्रयाण करना श्रेष्ठ है, तथा वृष कन्या और मकर राशि में दक्षिण दिशा में जाना वांच्छित दायक है। इन तीन तीन राशियों में पूर्वोक्त दिशाओं में गमन करने से चंद्रमा सम्मुख होता है। इसलिये यह अति श्रेष्ठ माना है। दिन शुद्धि ग्रन्थ में चंद्रमा तीन प्रकार से सन्मुख माना जाता है—चंद्रमा जिस दिशा में उदय पाता है उस उदय के वश से जिस दिशा में जाता है उस दिशा के वश से और जिस दिशा के द्वार वाले नक्षत्र को पाया हो उस दिशा द्वार नक्षत्र के वश से, एवं तीन प्रकार से चंद्र को कितनेक आचार्यों ने सन्मुख माना है। परन्तु दिशा-गत सन्मुख चंद्र सर्व श्रेष्ठ समझना चाहिये।

तिथि द्वार

नन्दादि तिथिया अपने नामके अनुसार ही फल देती हैं। श्रीपति नामक विद्वान का कथन है कि चित्त को प्रसन्न करने वाले आनन्द के कार्य नन्दा तिथि में करने श्रेष्ठ हैं। विवाह, प्रयाण, शान्ति पौष्टिकादि भद्र कार्य भद्रा तिथि में किये जाते हैं। युद्ध, शत्रु पर चढ़ाई आदि विजय

और यदि शून्य—बिन्दु मालूम दे तो उपाधि रहित आकाश तत्व समझना चाहिये। पीला रंग कार्य की सिद्धि बतलाता है। बिन्दु तथा श्वेत वर्ण सुख की सूचना करता है। संध्या काल के समान रक्तवर्ण—लाल रंग भय की सूचना देता है और भ्रमर के समान श्यामवर्ण कार्य की हानि बतलाता है। जीवन सम्बन्धी कार्य में, जय प्राप्त करने में, धान्य की उत्पत्ति में, युद्ध के प्रश्न में एवं गमनागमन में और लाभ के कार्य में पृथ्वी तथा जल-तत्व शुभ कहे हैं। अग्नि तत्व, वायु तत्व अशुभ माने हैं। पृथ्वी तत्व में कार्य करने से कार्य की सिद्धि स्थिर होती है और जल तत्व में प्रारम्भित कार्य जल्दी सिद्ध होता है।

पृथ्वी तत्व नासिका सपुट से सोलह अंगुल गति करता है, जलतत्व बारह अंगुल बहता है, अग्नि तत्व आठ अंगुल, वायु तत्व चार अंगुल और आकाश तत्व एक अंगुल भी गति नहीं करता।

राशि आश्रित दिशाओं में दिशाशूल को वर्ज कर मेष, सिंह और धन राशि में पूर्व दिशा में गमन करना सिद्धि दायक है। कर्क, वृश्चिक और मीन राशि में

उत्तर दिशा में जाना अर्थ सिद्ध करता है। मिथुन, तुला और कुंभ राशि में पश्चिम दिशा में प्रयाण करना श्रेष्ठ है, तथा वृष कन्या और मकर राशि में दक्षिण दिशा में जाना वांच्छित दायक है। इन तीन तीन राशियों में पूर्वोक्त दिशाओं में गमन करने से चंद्रमा सम्मुख होता है। इसलिये यह अति श्रेष्ठ माना है। दिन शुद्धि ग्रन्थ में चंद्रमा तीन प्रकार से सन्मुख माना जाता है—चंद्रमा जिस दिशा में उदय पाता है उस उदय के वश से जिस दिशा में जाता है उस दिशा के वश से और जिस दिशा के द्वार वाले नक्षत्र को पाया हो उस दिशा द्वार नक्षत्र के वश से, एवं तीन प्रकार से चंद्र को कितनेक आचार्यों ने सन्मुख माना है। परन्तु दिशा-गत सन्मुख चंद्र सर्व श्रेष्ठ समझना चाहिये।

तिथि द्वार

नन्दादि तिथियां अपने नामके अनुसार ही फल देती हैं। श्रीपति नामक विद्वान का कथन है कि चित्त को प्रसन्न करने वाले आनन्द के कार्य नन्दा तिथि में करने श्रेष्ठ हैं। विवाह, प्रयाण, शान्ति पौष्टिकादि भद्र कार्य भद्रा तिथि में किये जाते हैं। युद्ध, शत्रु पर चढ़ाई आदि विजय

के काय अथा तिथि में करने चाहियें। मघ, चन्दन,घात विष, अग्नि और शस्त्रादिक सम्बन्धी काय रिक्ता तिथि में किये जाते हैं, तथा विवाह, यात्रा, दीक्षा, मांगलिक कार्य पूर्णा तिथि में किये जाते हैं। प्राय रिक्ता और अमावस्या तिथियों को वर्ज कर अन्य शुभ योग देखकर सर्व तिथियों में शुभकार्य हो सकता है। अमावस्या और रिक्ता तिथियों में तो उनमें करने के योग्य ही काय किये जा सकते हैं। यन्त्र, मन्त्र, रक्षादि क्षुद्र कार्यों को साधने में रिक्ता और अमावस्या तिथियां शुभ मानी हैं (शुक्लपक्ष की पहली पांच तिथियां हीन मानी हैं, छठ से दशमीतक पांच तिथियां मध्यम कही हैं और एकादशी से पूर्णिमा तक पांच तिथियां उत्तम मानी हैं। परन्तु कृष्णपक्ष में इससे उलटा समझना चाहिये। याने कृष्णपक्ष में पहली पांच तिथियां उत्तम होती है, उसके बाद की पांच तिथियां मध्यम और अन्तिम पांच तिथियां हीन समझना।)

शुभ कार्य में तीन रिक्ता तिथि तथा छठ अष्टमी, द्वादशी और अमावस्या य तिथियां त्याग करने योग्य बतलाई हैं। शुभ कार्य के करने में शुभ तिथि और अशुभ कार्य करने में अशुभ तिथि ली जाती है। उपरोक्त

तिथियों को पक्ष छिद्र होने के कारण अशुभ मानी हैं। अर्थात् छठ अष्टमी, चौथ, चौदश, द्वादशी अमावस्या और नवमी ये इतनी तिथि पक्षछिद्र नामा कहलाती हैं। इनमें भी छठ और द्वादशी ये दो तिथियां प्रयाण में विशेष अशुभ मानी हैं, परन्तु ये दोनों ध्रुव कार्य में शुभ हैं ऐसा 'लल्ल' पण्डित का मत है। 'श्रीपति' पंडित के मतानुसार यात्रा में चौदश भी विशेष अशुभ है।

जो तिथि वृद्धि होने के कारण तीन वार को स्पर्श करती हो तथा तिथि क्षय होने के कारण तीन तिथियाँ एक वार को स्पर्श करती हों तो उन तीन तिथियोंमें से मध्यकी तिथि क्षय मानी जाती है, अर्थात् वृद्धि के कारण या क्षय के कारण जो तीन तिथियों में संमिश्रण हुआ हो तो उनमें से बीच की तिथि को शुभ कार्य में अवश्य वर्ज देना चाहिये। क्षय तिथि में आरम्भ करने से कार्य क्षय होता है और प्रकृति में अन्यथापन-विकार हो तो वह उत्पात कारक होता है अतः निषेध्य तिथियों को शुभ कार्य के प्रारम्भ में वर्ज देना ही शुभकर है।

८ दग्ध तिथि

१मेष, ३मिथुन, ५सिंह, ७तुला, ९धन और ११कुंभ,

ये छह राशि विषम कहलाती हैं। इनमें से किसी भी राशि में सूर्य सङ्क्रान्ति हुई हो तो उस राशि के अंकमें पाँच और मिला के बारह से भाग देने पर जो शेष रहे उस अंक वाली तिथि को संक्रान्ति में सूर्य दग्धा समझना चाहिये। तथा २वृष, ४कर्क, ६कन्या ८वृश्चिक, १०मकर, और १२मीन इन छह सम राशियों में से किसी भी राशि में सूर्य संक्रान्ति हो तो उस राशि के अंकमें दो और मिलाकर बारह से भाग देने पर जो शेष रहे उस अंकवाली तिथि को भी सूर्य दग्धा समझना चाहिये। पूर्वोक्त नियमानुसार बारह से भाग देने पर शून्य आवे तो द्वादशी को दग्धा समझना और यदि बारह का भाग देन तक संख्या ही न पहुँचे तो नियमानुसार मिलान पर जो संख्या आवे उस अन्तिम अंकवाली तिथि को सूर्यदग्धा मानना चाहिये। उदाहरण के तौर पर-मेष राशि पहली है और कथन किये मुजब एकमें पाँच और मिलाने से मात्र ६ ही होते हैं इस कारण मेष राशिका सूर्य हो तब छट्ट को ही सूर्यदग्धा समझना चाहिये। तुला राशि सातवीं है और विषम है इस लिये नियमानुसार पाँच और मिला कर बारह से भाग देन पर शेष में शून्य आता है अत

तुला का सूर्य हो तब द्वादशी को सूर्यदग्धा जानना । सारांश यह है कि इस हिसाब से धन और मीन की संक्रान्ति में द्वितीया को दग्धा समझना, वृष और कुंभ की संक्रान्ति में चौथ तिथि को दग्धा जानना, मेष और कर्क की संक्रान्ति में छठ को दग्धा मानना, मिथुन और कन्या की संक्रान्ति में अष्टमी को दग्धा, सिह और वृश्चिक की संक्रान्ति में दशमी को दग्धा और तुला तथा मकर राशि की संक्रान्ति मे द्वादशी को सूर्य दग्धा तिथि समझना चाहिये ।

प्रसंग से चन्द्रदग्धा तिथि भी इस प्रकार जानना, कुंभ और धन राशि का चंद्रमा हो तो द्वितीया को चंद्र दग्धा तिथि समझना, मेष और मिथुन का चंद्रमा हो तब चौथ को दग्धा तिथि जानना, तुला और सिंह का चन्द्र हो तब छठ को दग्धा मानना, मकर और मीन में चंद्रमा हो तब अष्टमी को, वृषभ और कर्कका चन्द्रमा हो तब दशमी को और वृश्चिक तथा कन्या का चन्द्रमा हो तब द्वादशी को चन्द्रदग्धा तिथि समझना चाहिये। इन दग्धा तिथियों में जन्म लेने वाले बालक प्रायः अल्प आयुष वाले होते हैं। इन पूर्वोक्त दग्ध तिथियों को भी शुभ कार्य में वर्ज देना चाहिये ।)

यदि रात्रि की भद्रा दिन को हो और दिन की भद्रा रात को हो तो वह दूषित नहीं मानी है, वह सर्व कार्यों को सिद्ध करती है। वेदमसमाले नक्षत्र में सोम, बुध, शुक्र या गुरुवार को भद्रा आवे तो वह कल्याणी नामक भद्रा होती है और वह सर्वकार्यों को सिद्ध करने वाली होती है।

जब मेष, वृषभ, मकर और कर्क राशिका चन्द्रमा होता है तब विष्टि-भद्रा स्वर्गमें क्रीडा करती है। कन्या मिथुन, धन और तुलाराशि का चन्द्रमा हो तो विष्टि पाताल में रहती है और जब चन्द्रमा कुंभ, मीन, वृश्चिक और सिंह राशि में रहता है तब विष्टि मनुष्य लोक में वास करती है। शुक्लपक्ष में चौथ तथा एकादशी की रात्रि को पश्चिम दल में और अष्टमी तथा पूर्णिमा को दिनमें पूर्वदल में भद्रा या विष्टि रहती है। कृष्ण पक्ष की तृतीया और दशमी की रात्रिको पश्चिम दल में और सप्तमी तथा चतुर्दशी को दिन में पूर्वदल में विष्टि का वास होता है।

विष्टि की पहली पांच घड़ी उसका मुख कहलाती हैं, उसके बाद की दो घड़ी उसका कंठ जानना, उसके बाद की दश घड़ियों को हृदय जानना, उसके बाद की चार

घड़ियों को नाभि जानना, तत्पश्चात् की छह घड़ियों को कटि जानना और उसके पीछे की तीन घड़ियों को उसकी पुच्छ समझना चाहिये। यदि विष्टि के मुखमें कार्य किया हो तो कार्य का विनाश हो, कंठ में किया हो तो शरीर का नाश हो, हृदयमें किया हो तो द्रव्य का नाश, नाभि में किया हो तो बुद्धिका नाश, कटिमें किया हो तो प्रीति का विनाश होता है और यदि पुच्छ में कार्य किया हो तो अवश्यमेव वह कार्य सिद्ध होता है।

दशमी और अष्टमी को प्रथम की पांच घड़ियों के बाद विष्टि की पुच्छ आती है, क्योंकि उस दिन विष्टि का प्रारम्भ कटिवाली दूसरी घड़ी से होता है। ग्यारस-एकादशी और सप्तमी के रोज हृदय की अन्तिम तीन घड़ियों से विष्टि का प्रारम्भ होता है इस कारण विष्टिकी तेरह घड़ी बीतने पर तीन घड़ी प्रमाण वाली उसकी पुच्छ आती है। तृतीया और पूर्णिमा के दिन विष्टि का उसके कंठ की दूसरी घड़ी से प्रारम्भ होता है अतः विष्टि की इकीस घड़ी जाने पर उसकी पुच्छ आती है। चौथ और चौदश के दिन विष्टिका प्रारम्भ मुख से होता है इसलिये विष्टि के उतरते समय अन्तिम तीन घड़ी उसकी पुच्छ

आती है। दिन की विष्टि या भद्रा सर्पिणी कही है और रात की विष्टि विच्छुनी कहलाई है इस कारण दिन की विष्टिका मुख और रात की विष्टिका पुच्छ विशेषतः शुभ काम में वर्जनीय कहा है। प्रवासके समय विष्टिका मुख अवश्य त्यागना चाहिये।

चतुर्थ के दिन प्रथम पहर में विष्टि पूर्व दिशा में होती है, अष्टमी के दिन दूसरे पहर में अग्निकोण में रहती है सप्तमी के तीसरे पहर में दक्षिण में रहती है, पूर्णिमासी के रोज चौथे पहरमें नैऋत्य कोण में बसती है, चौथ के दिन पांचवे पहर में पश्चिम दिशा में रहती है, दशमी के दिन छठे पहर में वायव्यकोण में रहती है, एकादशी को सातवे पहर में उत्तर दिशा में निवास करती है और तृतीया के आठवे पहर में ईशानकोण में वास करती है। यह विष्टि प्रथमादि में संकुल अशुभ और पीछे शुभ समझना चाहिये।

छाया लग्न

सूर्य के ताप में खड़ा रहने पर रविवार के दिन यदि ग्यारह कदम अपने शरीर की छाया आवे तो वह कार्य सिद्ध करने वाली सिद्ध छाया समझनी चाहिये। इसे सिद्ध

छाया लग्न कहते हैं। इसी प्रकार सोमवार के दिन साढ़े आठ कदम, मंगलवार को नव कदम, बुधवार को, आठ गुरुवार को सात कदम और शुक्र तथा शनिवार को साढ़ेआठ साढ़े आठ कदम नापने पर अपनी छाया आवे तो वह समय प्रारम्भित कार्य को सिद्ध करने वाला छाया लग्न कहलाता है। 'नरपति जयचर्या' ग्रन्थ में लिखा है कि

नक्षत्राणि तिथिर्वारास्तारा श्चंद्रवलं ग्रहाः
दुष्टान्यपि शुभं भावं भजन्ते सिद्ध छायया १

नक्षत्र	तारा	नक्षत्र	तारा	नक्षत्र	तारा	नक्षत्र	तारा
अश्विनी	३	पुष्य	३	स्वाति	१	अभिजित्	३
भरणी	३	अश्लेषा	६	विशाखा	४	श्रवण	३
कृत्तिका	६	मघा	५	अनुराधा	४	धनिष्ठा	४
रोहिणी	५	पूर्वाफाल्गुनी	२	जेष्ठा	३	शतभिषक	१००
मृगशीर्ष	३	उत्तरा ,,	२	मूल	११	पूर्वाभाद्रपद	२
आर्द्रा	१	हस्त	५	पूर्वाषाढा	४	उत्तरा ,,	२
पुनर्वसु	४	चित्रा	१	उत्तरा ,,	४	रेवती	३२

नक्षत्र, तिथि, वार, तारावल, चंद्रवल और ग्रह कदाचित् दूषण वाले भी हों तथापि सिद्ध छाया द्वारा

वे शुभ भाव को भजते हैं। याने शुभ फल देते हैं। इस सिद्ध छाया का समय मात्र तीस अक्षर उचार करने जितना ही समझना चाहिये। याने जब इष्ट छाया के कदमों का समय पंद्रह अक्षर उचार जितना न्यून हो उस समय कार्य प्रारम्भ करके इष्ट छाया के समय से पंद्रह अक्षर उचार काल पीछे तक प्रारंभित कार्य को पूर्ण कर लेना चाहिये। यदि अधिक समय में पूर्ण होने वाला कार्य हो तो उसे उतने समय में याने पूर्वोक्त कथन किये सिद्ध छाया के काल में प्रारम्भ कर देना चाहिये। कार्य की परिसमाप्ति सिद्ध छाया से बहार हो तो उसमें कोई हरकत नहीं है।

जन्म के नक्षत्र से तथा उसके उदय से लग्न की राशि यदि पहले स्थान में हो तो आरोग्यता देती है, दूसरे स्थान में हो तो धन का नाश करती है, तीसरे में हो तो धन देती है, चौथे में हो तो सुख का नाश करती है, पांचवें में हो तो पुत्र का नाश करती है, छठे हो तो शत्रु के समूह का नाश करती है सातवें स्थान में हो तो स्त्री का नाश करती है, आठवें स्थान में हो तो उसका निजका विनाश होता है, नवम स्थान में हो तो

व्याधि पैदा करती है, दशवें मे हो तो धन संपत्ति देती है, ग्यारहवें स्थान में हो तो धन के समूह को देती है और बारहवें स्थान में हो तो भय देने वाली होती है।

निम्न लिखे यंत्र से ताराओं की संख्या समझना—

यह ताराओं की संख्या नक्षत्रों के परिवार रूप में मानी है। इसका मतलब यह समझना कि जिस रोज जो तिथि हो उस रोज तिथि की संख्या उतनी ताराओं वाला नक्षत्र हो तो उसे शुभ कार्य में वर्ज देना चाहिये। अर्थात् जैसे कि यदि अश्विनी नक्षत्र तीज के दिन हो तो उस नक्षत्र की भी तीन तारायें हैं अतः तीज को अश्विनी नक्षत्र हो तो शुभ कार्य में वर्जना। पांच तारा वाला रोहिणी नक्षत्र पंचमी को हो तो वर्जनीय है। याने तिथि के प्रमाण वाली ताराओं वाला नक्षत्र जिस तिथि को हो वह तिथि शुभ कार्य में वर्ज देनी चाहिये। अठाईस नक्षत्रों की योनी निम्न प्रकार समझना।

अश्विनी से अनुक्रम वार नक्षत्रों की योनि॥

अश्व, हाथी, बकरा, सर्प, सर्प, श्वान, बिलाव, बकरी बिलाव, चूहा, चूहा, बैल, भैंसा, व्याघ्र, भैंसा, व्याघ्र, मृग, मृग, श्वान वानर, फिर दो नक्षत्रों की न्योल, बंदर सिंह,

घोड़ा, सिंह, बकरा और हाथी। नक्षत्रों की इन योनियों में जिनमें परस्पर वैर हो वे नक्षत्र गुरु शिष्य और वर वधू के योग में वर्जनीय समझने चाहियें। जैसे कि श्वान और मृग में परस्पर वैरभाव है, एवं सिंह, हाथी में, सर्प न्योल में, बकरा बन्दर में, बैल व्याघ्र में, घोड़ा भैंसे में, बिलाव चूहे में, व्याघ्र और मृग में, कुत्ते और बिल्ली में, इत्यादि में पारस्परिक जाति वैर होता है। यह योनि वैर स्वामी सेवक भाव में अवश्य त्यागना चाहिये। नक्षत्रों के मिलान में एक का जन्म नक्षत्र और दूसरे का नाम नक्षत्र लेकर कदापि मिलान न करना। नाम नक्षत्र से योग मिलाना हो तो दोनों का नामनक्षत्र ही लेना चाहिए और यदि जन्म नक्षत्र से योग देखना हो तो दोनों का जन्म नक्षत्र ही देखना चाहिये। जन्म नक्षत्र से योग न मिलने पर प्रसिद्ध नाम नक्षत्र से योग मिलाना उचित होगा।

अब किस किस राशि को कौन कौन सा नक्षत्र भोगता है सो नीचे लिखे मुजब समझना—मेष में—अश्विनी के ४ पाद, भरणी के ४ पाद, कृत्तिका का १ पाद। वृष राशि में कृत्तिका ३ पाद, रोहिणी ४ पाद,

मृग शीर्ष २ पाद। मिथुन राशि में मृगशीर्ष २ पाद, आर्द्रा ४ पाद, पुनर्वसु ३ पाद, । कर्क में पुनर्वसु १, पुष्य ४, अश्लेषा ४। सिंह राशि में—मघा ४, पूर्वा फाल्गुनी ४, उत्तरा फाल्गुनी १ पाद। कन्या राशि में उत्तरा फाल्गुनी ३, हस्त ४, चित्रा २। तुला में—चित्रा २, स्वाति ४, विशाखा ३। वृश्चिक में—विशाखा १, अनुराधा ४, जेष्ठा ४। धनराशि में मूल ४। पूर्वाषाढा ४, उत्तराषाढा १। मकरराशि में उत्तराषाढा ३, श्रवण ४, धनिष्ठा २। कुंभराशि में धनिष्ठा २, शतभिषक ४, पूर्वाभाद्रपद ३। मीनराशि में पूर्वा भाद्रपद १ पाद, उत्तरा भाद्रपद ४ पाद और रेवती भी ४ पाद ही मीन में पूर्ण करता है।

नक्षत्र नाड़ी ज्ञान के लिए तीन लाइन वाला एक ऐसा सर्पाकार बनाना जिस पर तमाम नक्षत्र आसकें। फिर क्रमसे सर्व नक्षत्रों की उस पर स्थापना करके देखना, यदि गुरु शिष्य, पति पत्नी या स्वामी सेवक का नक्षत्र एक ही नाड़ी-लाइन पर आया हो तो श्रेष्ठ समझना चाहिये। परन्तु स्वामी सेवक की यदि तीसरी पांचवीं और सातवीं तारा आती हो तो वर्जनीय है।

जिस नक्षत्र में सूर्य चलता हो उस नक्षत्र से ६ नक्षत्र तक बाल नक्षत्र समझना, उसके बाद के १२ नक्षत्र जवान समझना और उसके बाद के नव नक्षत्र वृद्ध जानना। विद्वानों का मत है कि जवान नक्षत्र में खोई वस्तु नहीं मिलती, वृद्ध नक्षत्र में गई वस्तु वापिस आती, है और बाल नक्षत्रों में गई वस्तु दूर नहीं जाने पाती पास ही रहती है, अर्थात् जिस स्थान से वह गुम होती है उसके नजदीक में ही रहती है और मिल भी जाती है।

रविवार को रेवती, अश्विनी, धनिष्ठा, पुनर्वसु, पुष्य या उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तरा भाद्रपद हों। सोमवार को पुष्य रोहिणी और अनुराधा हो, मंगलवार को मृगशीर्ष, मूल, अश्लेषा या रेवती हो, बुधवार को मृगशीर्ष, पुष्य, अश्लेषा, श्रवण या रोहिणी हो, गुरुवार को हस्त, अश्विनी, पूर्वा फाल्गुनी, विशाखा, अनुराधा या रेवती हो, शुक्रवार को उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढा, हस्त श्रवण, अनुराधा पुनर्वसु या अश्विनी हो तथा शनिवार को श्रवण, पूर्वा फाल्गुनी, मघा या शतभिषक नक्षत्र हो तो शुभ समझना चाहिये।

प्रतिष्ठा कराने में, दीक्षा देने में और विवाह में नीचे लिखे नक्षत्र श्रेष्ठ समझना। जैन प्रतिष्ठा में—रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य मघा, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, स्वाति, अनुराधा, मूल, उत्तराषाढा, श्रवण; धनिष्ठा; उत्तराभाद्रपद और रेवती। ये इतने नक्षत्र बिम्ब प्रतिष्ठा में शुभ माने हैं। दीक्षा में—अश्विनी, रोहिणी, पुनर्वसु, उत्तराफाल्गुनी हस्त, स्वाति, अनुराधा, मूल, उत्तराषाढा, श्रवण, शतभिषक, उत्तरा भाद्रपद और रेवती। ये नक्षत्र शुभ माने हैं। विवाह में—रोहिणी, मृगशिरा, मघा, उत्तराफाल्गुनी हस्त, स्वाति, अनुराधा, मूल, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपद और रेवती, ये नक्षत्र शुभ कहे हैं।

मूल, उत्तराभाद्रपद या उत्तराषाढा नक्षत्र में यदि विवाह होवे तो वह स्त्री सौभाग्यवती होती है, अर्थात् वह सदैव पति को प्यारी लगती है। यदि रेवती, रोहिणी और मृगशीर्ष नक्षत्र में विवाह हुआ हो तो वह पुरुष सदैव अपनी स्त्री को प्रिय लगता है; स्त्री उसे सदा प्रेम करती है। बाकी के पाँच नक्षत्रों में विवाह हुआ हो तो वर वधू में परस्पर सदैव प्रेम रहता है, दोनों की ओर से एक दूसरे की प्रीति कायम रहती है। दैवज्ञ वल्लभ ग्रन्थ में लिखा है कि—

"वल्लभः स्यान्नरो नार्या, यलिमि' पुरुष ग्रहैः
स्त्रीग्रहैः पुरुषस्य स्त्री सर्वैं प्रेमोभयोरपि ॥

विवाह के लग्न में यदि पुरुष के ग्रह बलवान हों तो स्त्री को पुरुष अधिक प्रिय लगता है। यदि स्त्री के ग्रह बलवान हों तो वह स्त्री पति को विशेष प्यारी लगती है, याने उस पर पति का अधिक प्रेम होता है और यदि दोनों के ग्रह बलवान हों तो दोनों में परस्पर अधिक प्रेम भाव रहता है।

विवाह कुण्डली में नीचे लिखे मुजब स्थानों में रहे हुये ग्रह उत्तम समझना चाहिये रवि-सूर्य तीसरे, छठे आठवें, ग्यारहवें में। चंद्रमा दूसरे, तीसरे और ग्यारहवें में। मंगल-तीसरे, छठे और ग्यारहवें में। बुध-पहले, दूसरे, तीसरे, चौथे, पाँचवें, छठे, नवम, दशवें ग्यारहवें में। गुरु पहिले, दूसरे, तीसरे, चौथ, पांचवें छठे, नवमें, दशवें और ग्यारहवें में। शुक्र पहले, दूसरे तीसरे, चौथे, पांचवें, नवमें, दशवें और ग्यारहवें में। शनि तीसरे, छठे, आठवें, ग्यारहवे में। राहु और केतु-दूसरे, तीसर, पांचवे छठे आठवे, नवमें दशवें और ग्याहवे में रहे हों तो शुभ है। इन उपरोक्त भावों में रहे हुये नवग्रह विवाह कार्य में सर्वोत्तम मानना।

रवि यदि दूसरे, चौथे, पांचवे, नवमें, दशवें और वारहवें स्थान में हो, चन्द्रमा–चौथे, पांचवें सातवें नवमें, दशवें और वारहवें में हो । मंगल यदि दूसरे, चौथे, पांचवें नवमें, दशवें और वारहवें स्थान में हो बुध वारहवें में हो, गुरु सातवें में, या वारहवें में हो, शुक्र वारहवें में हो । शनि दूसरे, चौथें, पांचवें, नवमें, दशवें या वारहवें में हो और राहू केतु वारहवें स्थान में हों तो यह योग विवाह में मध्यम समझना चाहिये । इससे विपरीत योग अधम कहा है इस लिए वह वर्जनीय है । यदि राहू लग्न में रहा हो तो वर की मृत्यु करता है, और यदि सातवें स्थान में रहा हो तो कन्या की मृत्यु करता है, ऐसा 'शौनिक पंडित' का मत है । शौनिक यह भी लिखता है कि यदि विवाह कुण्डली में सातवें, स्थान में बुध रहा हो तो वह कन्या सात वर्ष के भीतर ही पति की मृत्यु करती है । यदि बुध आठवें स्थान में रहा हो तो तीन महीने में वह कन्या स्वयं मृत्यु को प्राप्त होती है । देवल मुनि का कथन है कि सातवें स्थान में गुरु हो तो पुरुष की आयुष व सौभाग्य का नाश होता है और शुक्र सातवें में रहा हो तो कन्या की आयु व सौभाग्य का

विनाश करता है । यदि गुरु लग्न में हो तो भी कहा शुक्र तथा आठवां मंगल दुष्ट समझना चाहिये। केन्द्र में रहे हुए ग्रह पूर्ण बलवान होते हैं।

बिम्ब प्रतिष्ठा कराने में शुभ योग

जिन प्रादि मन्य में प्रतिमा कराने के शुभ कार्य में दश द्वारकी शुद्धि करना बतलाया है। शुभ महीना, शुभ वार, शुभ तिथि, शुभ नक्षत्र, शुभ योग, शुभ करण, सगुण दिवस, निर्दोष दिन, निर्दोष नक्षत्र और सगुण नक्षत्र; ये सब निर्दोष देखने चाहियें।

मार्गशीर्ष मास से लेकर आठ महीने शुभ हैं। इसमें भी चैत्र पोष और अधिक मास को वर्ज देना चाहिये। इनमें भी यदि किसी मास में गुरु या शुक्र बालक वृद्ध या अस्तता को पाया हुआ हो तो वह मास वर्जनीय कहा है। शुक्र यदि पश्चिम दिशा में उदय हुआ हो तो उदय से लेकर वह दश दिन तक बाल कहलाता है और अगर पूर्व दिशा में उदय हुआ हो तो तीन दिन तक बाल समझना। पश्चिम दिशा में अस्त हुआ हो तो पांच दिन तक वृद्ध समझना और पूर्व दिशा में अस्त हुआ हो तो इसी प्रकार गुरु को प्रथम के पन्द्रह दिन वृद्ध समझना, विषममें भी यथा संभव जानना।

बिम्ब प्रतिष्ठा में गुरुवार, सोमवार, बुधवार और शुक्रवार शुभ माने हैं। प्रतिष्ठा कराने में शुक्लपक्षकी एकम द्वितीया, पंचमी, दशमी, त्रयोदशी और पूर्णिमा तथा कृष्णपक्ष की एकम, द्वितीया और पंचमी ये इतनी तिथियां शुभ मानी हैं। चन्द्रमा नष्ट या क्षीण न होने पर सिद्धि योग सर्व तिथियों व वारों में श्रेष्ठ माना है। शुक्ल पक्ष की एकमसे लेकर दश दिनतक चन्द्रमाको मध्यम बलवाला जानना और उसके बाद के दश दिन तक चन्द्रमा क्षीण बल होता है।

प्रतिष्ठा में मघा, मृगशिर, हस्त तीनों उत्तरा, अनुराधा, रेवती, श्रवण, मूल, पुष्य, पुनर्वसु, रोहिणी, स्वाति और धनिष्ठा, ये नक्षत्र शुभ माने हैं। बिम्ब प्रतिष्ठा में प्रतिष्ठा कराने वाले का जन्म नक्षत्र, दशवां, सोलहवां अठारहवां, तेईसवां और पचीसवाँ नक्षत्र वर्ज देना चाहिये।

विष्कंभक आदि २७ योगों में से पहला, छठा, नवमा दशवां, तेरहवां, पन्द्रहवां, सत्रहवां, उन्नीसवां और सत्ताईसवां योग वर्जनीय कहा है। शुभकार्य में छठे योगकी पहली ६ घड़ी, दशवें योग की ५ घड़ी पहले और नवमें की ५ घड़ी, सत्ताईसवें की ३० घड़ी, तेरहवें और पंद्रहवें

की ६ घड़ी, सत्रहवें तथा उन्नीसवें योग की ६० ही घड़ी अवश्य वर्जनीय हैं। बाकी के योग शुभकारी समझना और करणों में तो सिर्फ विष्टि वर्जकर प्रायः सभी करण शुभ कारी माने हैं।

एकमको शुक्रवार हो, द्वितीयाको बुधवार हो, तृतीया को मंगलवार हो, चौथ को शनिवार हो, पंचमी को गुरुवार हो, छठ को मंगलवार या शुक्रवार हो, सप्तमी को बुधवार हो, अष्टमी को रविवार या मंगलवार हो, नवमी को शनिवार या सोमवार हो, दशमी को गुरुवार एकादशी को गुरु या शुक्र हो, द्वादशीको बुधवार हो, त्रयोदशी को मंगल या शुक्रवार हो, चौदश को शनिवार हो तथा पूर्णिमा को गुरुवार हो तो वह सिद्धि योग कहा जाता है और वह सर्वकार्यों में शुभ माना है। रविवारके दिन यदि हस्त और तीन उत्तरा तथा मूल नक्षत्र, इन पांचमें में कोई सा भी नक्षत्र हो तो भी सिद्धि योग समझना। सोमवार को रोहिणी, मृगशीर्ष,पुष्य, अनुराधा और श्रवण इन में से कोई नक्षत्र हो तो सिद्धि योग जानना। मंगल वार को उत्तराभाद्रपद, अश्विनी और रेवती, तथा बुधवार को कृत्तिका, रोहिणी, मृगशीर्ष पुष्य और अनुराधा

इन पांचों में से हो तो सिद्धि योग समझना चाहिये। गुरुवार को अश्वनी, पुष्य, पुनर्वसु, अनुराधा रेवती में से कोई हो, शुक्रवार को पुनर्वसु, अश्विनी, पूर्वाफाल्गुनी, रेवती, अनुराधा और श्रवण में से कोई सा हो तो सिद्धि योग होता है। तथा शनिवार को रोहिणी, श्रवण या स्वाति हो तो सिद्धि योग जानना। अश्विनी, रोहिणी, मूल, हस्त, पुनर्वसु, विशाखा, मघा, श्रवण और पूर्वा भाद्रपद इनमें से कोई एक नक्षत्र हो और मंगल, शुक्र, बुध तथा सोमवार इनमें से कोई एक वार हो एवं दशमी छठ, एकादशी, एकम और पचमी इन में से कोई एक तिथि हो तो इस रीतिसे नक्षत्र, तिथि और वारके संयोग से वह कुमार योग कहलाता है। इस प्रकार तिथि, वार और नक्षत्र के मेल से सिद्धि व कुमार योग समझकर शुभ कार्य में प्रवृत्ति करनी चाहिये, परन्तु रविवार को मघा, सोमवार को विशाखा, मंगलवार को आर्द्रा, बुधवार को मूल, गुरुवार को कृत्तिका, शुक्रवार को रोहिणी और शनिवार को हस्त नक्षत्र हो तो उस दिन यमघंट समझ कर शुभ कार्य न करना। तथा रवि, सोम, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनिवार को क्रमसे इन वारों के जन्म नक्षत्र

भरणी, चित्रा, उत्तराषाढ़ा, धनिष्ठा, उत्तराफाल्गुनी, ज्येष्ठा और रेवती हैं। पूर्वोक्त वारों में क्रमसे भरणी वगैरह ये सात नक्षत्र वर्जनीय समझना।

अ आदि आठों ही वर्गों के विषय में भी शुभ कार्य में देखना आवश्यक है। आठों वर्ग के स्वामियों में अपने अपने वर्ग से पांचवे पांचवे वर्गस्वामी में परस्पर वैर समझना चाहिये और वह वैर भाव स्वामी वाले वर्ग शुभ मिलान में जरूर त्याग देने चाहियें। अवर्ग (समस्त स्वर वर्ण) का स्वामी गरुड़ है। कवर्गका मालिक बिलाव, है, चवर्गका स्वामी सिंह है, टवर्गका पति कुत्ता है, तवर्ग का मालिक सर्प है, पवग का पति चूहा है, यवर्ग (य र ल व) का स्वामी मृग है, तथा शवर्ग (श ष स ह) का पति मेंढा है।

यदि सराब योगके दिन ही जरूर कोई शुभ कार्यकरना ही हो तो समस्त कुयोगों की प्रथम की दो दो घड़ी त्याग देना आवश्यक है। इस प्रकार ग्रन्थ में लिखा है कि कुतिथि, कुवार, कुयोग, विष्टि, जन्मनक्षत्र, दग्ध तिथि आदि सराब दिनों में दिनका पिछला भाग शुभ जानना चाहिये। 'लल्ल पंडित' का कथन है कि "अशुभे मे

शुभेघस्त्रे ,दिवा यात्रादि साधयेत्। शुभे भे त्वशुभे घस्रे , रात्रौ यात्रादि साधयेत् । यदि अशुभ नक्षत्र हो और शुभ दिन हो तो दिन में प्रयाण करना शुभ है और यदि नक्षत्र शुभ हो और तिथि अशुभ हो तो रात्रिमें गमन करना शुभ है। क्योंकि नक्षत्रं बलवद्रात्रौ दिने बलवती तिथि" रात्रि में नक्षत्र बलवान होता है और दिन में तिथि बलवती होती है।

[५३]अब तीन प्रकार का गंडान्त दोष बतलाते हैं—लग्न गंडान्त, तिथि गंडान्त और नक्षत्र गंडान्त। यह तीनों प्रकार का गंडान्त अपने २ तीसरे हिस्से में अनुक्रम से आधी घड़ी, एक घड़ी और दो घड़ी के प्रमाण वाला है। बारह लग्न-राशि हैं, उनके तीसरे तीसरे भाग में चौथा कर्क, आठवां वृश्चिक और बारहवां लग्न मीन आता है। उसमें कर्क की अन्तिम पंद्रह पल और सिंह लग्न की प्रथम की पंद्रह पल ये दोनों मिलकर तीस पल याने आधघड़ी गंडान्त योग कहलाता है। इसी तरह वृश्चिक की अन्तिम पंद्रह और धन की प्रथम पन्द्रह पल गंडान्त योग जानना चाहिये। याने इसे लग्नगंडान्त कहते हैं। तिथियां पंद्रह हैं अतः पंद्रहों का तीसरा ३

भाग गिनने पर पंचमी, दशमी और पूर्णमासी आती है। पूर्वोक्त हिसाब से पंचमी की अन्तिम आधी घड़ी और छठ की पहली आधी घड़ी, एवं दोनों तिथियों की आधी आधी मिलकर एक घड़ी का गंडान्त होता है। इसी तरह दशमी की अन्तिम आधी घड़ी और एकादशी की पहली आधी घड़ी मिलकर एक घड़ी का गंडान्त योग होता है तथा पूर्णमासी की अन्तिम अर्ध घड़ी और प्रति पदा की पहली आध घड़ी मिलकर एक घड़ी का गंडान्त योग होता है। यह तिथिगंडान्त कहलाता है। इसी प्रकार सत्ताईस नक्षत्रों में भी तीन गंडान्त जानना चाहिये। सत्ताईस का तीसरा तीसरा भाग लेने पर नवमां नवमां नक्षत्र आता है। प्रथम का तीसरा भाग नवम अश्लेषा नक्षत्र, अठारहवां ज्येष्ठा नक्षत्र और सत्ताईसवां रेवती नक्षत्र है, अतः अश्लेषा की अन्तिम एक घड़ी और मघा की प्रथम एक घड़ी एवं दो घड़ी का गंडान्त योग जानना। इसी तरह ज्येष्ठा की अन्तिम एक घड़ी और मूल नक्षत्र की प्रथम एक घड़ी में गंडान्त समझना तथा रेवती की अन्तिम घड़ी और अश्विनी नक्षत्र की प्रथम एक घड़ी मिलकर दो घड़ी का गंडान्त योग जानना चाहिये। यह नक्षत्र गंडान्त कहलाता है।

उपरोक्त तीनों प्रकार से गंडान्त योग जन्म, यात्रा विवाह, गर्भाधान एवं व्रतादि शुभ कार्यो में अशुभ माने हैं। जन्म की दृष्टि से गंडान्त का फल इस प्रकार लिखा है--यदि नक्षत्र गंडान्त में बालक का जन्म हुआ हो तो वह माता को हणता है, तिथि गंडान्त में पैदा होने वाला बालक पिता की मृत्यु करता है और लग्न गंडान्त में जन्मने वाला बालक स्वयं अपने आपको ही भारी होता है, अर्थात् गंडान्त में जन्म लेने वाला मनुष्य जल्दी मृत्यु पाता है इतना ही नहीं किन्तु माता पिता का अहितकर होने के उपरान्त वह स्वकुल नाशक होता है। यदि गंडान्त में जन्म लेने वाला कोई विरला जीवित भी रह गया तो वह बड़ा भारी महान् पुरुष होता है।

गंडान्त योगमें खोई हुई वस्तु वापिस नहीं आती सर्प डंस हुआ हो तो मनुष्य जीवित नहीं रह सकता, गंडान्तमें प्रयाण किया हुआ प्रायः वापिस घर नहीं आता।

तमाम नक्षत्र, योग और तिथियों की सन्धी में दोनों तरफ अनुक्रम से एक घड़ी और पंद्रह, आठ

और बीस पल का समय सन्धि दोष कहलाता है। याने नक्षत्रों की सन्धी में पहले नक्षत्र की अन्तिम एक घड़ी और पंद्रह पल तथा दूसरे नक्षत्र की प्रथम की एक घड़ी और पंद्रह पल मिल कर ढाई घड़ी का समय नक्षत्र संधि दोष समझना चाहिये। इसी प्रकार दो योगों की सन्धि में पूर्व के योग की अन्तिम एक घड़ी और आठ पल तथा पूर्व योग के बाद आने वाले योग की प्रथम एक घड़ी और आठ पल एवं दो घड़ी और सोलह पल योग सन्धि दोष कहलाता है। तिथि की सन्धी में पूर्वतिथि की अन्तिम एक घड़ी और बीस पल मिलकर ढाई घड़ी के समय में इसमें वाली तिथि की प्रथम की एक घड़ी और बीस पल एवं दो घड़ी और चालीस पल का समय तिथि सन्धि दोष का समझना चाहिये। यह तीनों प्रकार का संधि दोष भी शुभ कार्य में वर्जनीय कहा है।

"षट् वर्ग"

अब राशियों के स्थान होरा द्रेष्काण, नवांश द्वादशांश और त्रिशांश नाम वाले षट्वर्ग का स्वरूप बतलाते हैं।

इस षट्वर्ग के

स्थान की संज्ञा दी है। इस कारण मेष राशि (गृह)
से अनुक्रम वार १ मंगल, २ शुक्र, ३ बुध, ४ चंद्र, ५
रवि, ६ बुध, ७ शुक्र, ८ मंगल, ६ गुरु, १० शनि, ११
शनि और १२ गुरु ये बारह स्थानों के बारह स्वामी
जानना।

राशि का अर्ध भाग होरा कहलाता है, इससे एक
एक राशि में दो दो होरा होती हैं। इसमें मेष वगैरह
विषम राशि में पहली होरा सूर्य की और दूसरी होरा
द्रमाकी होती है। वृषभ आदि सम राशियों में पहली
ा चन्द्रमा की और दूसरी होरा सूर्य की होती है। होरा के
लादेश में कहा है कि सूर्य की होरा में जन्म लेने वाला
ालक तेजस्वी होता है और चन्द्रकी होरा मे पैदा होने
ाला मृदु-कोमल होता है। इसी प्रकार द्रेष्काण
ादि में भी क्रूर तथा सौम्य स्वामी के अनुसार क्रूर
ण्वं सौम्यपन समझना चाहिये। प्रत्येक राशिमें तीन
तीन द्रेष्काण होते हैं, उसमें जो अपनी ही राशि का
स्वामी हो वह प्रथम द्रेष्काणका ईश होता है। उसमे
जो पाचवीं राशि का स्वामी हो वह दूसरी द्रेष्काण का
स्वामी होता है। श्रीहरिभद्र सूरिकृत लग्न शुद्धि ग्रन्थ

में भी लिखा है कि हर एक राशिका तीसरा भाग द्रेष्काण कहलाता है। उसमें अपनी राशि के अधिपति का पहला द्रेष्काण, उससे पाँचवीं राशि के स्वामी का दूसरा द्रेष्काण और नवमें घर के स्वामी का दूसरा द्रेष्काण समझना चाहिये। बृहज्जातक में लिखा है कि—

"द्रेष्काण स्यु स्वभवन सुत त्रित्रिकोणाधिपानां"

अपनेस्थान के, पाँचवें स्थान के और नवम स्थान के स्वामियों के तीन तीन द्रेष्काण होते हैं। कितने एक आचार्य इन्हें राशियों के सप्तांश भी कहते हैं। होरा मकरन्द, ग्रन्थ में लिखा है कि—

"स्वर्क्षादोजे युग्मभे पूनगेहा दृगण्या स्तवहोः सप्तांशा क्रमेण"

इसके अनुसार मनुष्यों को अनुकूल ऐसे विषम अपनी राशिसे सप्तांश गिनने, समराशि में अपनी राशि से सातवीं को होवे वहाँ से सप्तांश गिनने, अर्थात् मेष राशि में पहला मेष का सप्तांश जानना, दूसरा वृषभका यावत् सातवा तुला और वृषभ राशिमें पहला वृश्चिक का,

दूसरा धनका और यावत् सातवां सप्तांश वृषभ राशिका जानना चाहिये। अब नवांश कहते हैं।

मेष से लेकर हर एक राशिमें नव नव नवांश होते हैं। उसमें मेषके नवांश मेषको आदि लेकर नव तक गिनना चाहिये। याने मेष राशिमें पहला नवांश मेषका, दूसरा नवांश वृषभ का, तीसरा नवांश मिथुन का, इस प्रकार क्रमसे गिनने पर नवम नवांश धनका आता है। इस तरह वृषके नवांश मकरसे गिनना, मिथुनके नवांश तुला से गिनना तथा कर्कके नवांश कर्कसे ही गिनना। इसी प्रकार सिंहके नवांश मेषसे गिनना, याने मेषके समान गिनना, कन्या के वृषभ के समान, तुलाके मिथुनके जैसे और वृश्चिकके नवांश कर्कके समान गिनने चाहियें। इसी प्रकार धन, मकर, कुंभ और मीनके नवांश भी अनुक्रमसे मेष, वृष, मिथुन और कर्कके समान ही गिनने चाहियें।

अंशोंके फलादेशमें समझना चाहिये कि जन्ममें राशियों का तीसरा, पाँचवां, चोथा, सातवां, और नवम ये पाँच नवांश सुख कर हैं। छठा नवांश मध्यम है और पहला, दूसरा तथा आठवाँ नवांश अधम जानना।

वर्ग याने समूहमें उत्तम हो उसे वर्गोत्तम कहते हैं अतः राशियोंमें प्रथम नवांश वर्गोत्तम समझना और द्विस्वभाव वाली राशियोंमें अन्तिम याने नवमा नवांश वर्गोत्तम जानना, तथा स्थिर स्वभाव वाली राशियो में पांचवां नवांश वर्गोत्तम मानना। इस प्रकार गिनने से सब राशियों में अपने अपने नामका नवांश वर्गोत्तम आता है। वर्गोत्तम नवांशमें पैदा हुआ मनुष्य अपने कुल में प्रधान पुरुष होता है। प्रायः शुभ कार्य में वर्गोत्तम नवांश ही सर्व श्रेष्ठ माना है। वर्गोत्तम नवांशमें रहा हुआ ग्रह भी बलवान जानना चाहिये और स्थान का पूर्ण फल देता है) कहा भी है कि

यस्तो य एव राशि स्यात्स एव च नवांशक ।
प्रोक्त स्थानफलं शुद्धमतोऽस्मिन् सोपपत्तिकम् ॥

क्योंकि जो राशि है वही नवांशक होता है, याने उस राशिके नामका नवांश ही वर्गोत्तम होता है।

अब द्वादशांश और त्रिंशांशका स्वरूप बतलाते हैं, अपने अपने स्थानसे बारह बारह द्वादशांश होते हैं, याने जिस नामकी राशि हो उस नाम का पहला द्वादशांश जानना चाहिये। बाकीके ग्यारह द्वादशांश उसके बादकी

ग्यारह राशिके नाम वाले जानने। जैसे कि मेष राशिमें पहला द्वादशांश मेष राशिका जानना, दूसरा द्वादशांश वृषका जानना, तीसरा मिथुन का समझना। इस प्रकार गिनते हुए अन्तिम द्वादशांश मीनका आता है। इसी तरह वृषराशिमें पहला द्वादशांश वृषका, दूसरा मिथुनका, तीसरा कर्कका, ऐसे गिनने पर अनुक्रमसे अन्तिम द्वादशांश वृषमें मेषका आता है। ऐसे ही मिथुन राशिमें पहला द्वादशांश मिथुनका, दूसरा कर्कका और इसी अनुक्रमसे गिनते जाने पर अन्तिम द्वादशांश वृषका आयगा। इन द्वादशांशोंके स्वामी जो मेष आदि राशियों के स्वामी हैं सो ही जानना। मेष, मिथुन वगैरह विषम राशियोंमें पाच, पांच आठ, सात और पांच त्रिशांशों के स्वामी क्रमसे मंगल, शनि, गुरु, बुध और शुक्र जानना। सम राशियोंमें वे अंश तथा स्वामियोंको उत्क्रम ले याने पश्चानुपूर्वी से समझना। अर्थात् वृष, कर्क आदि सम राशियों में पाच, सात, आठ, पाँच और पाच त्रिशांशों के स्वामी शुक्र, बुध, गुरु शनि और मंगल जानना। प्रतिष्ठा तथा विवाह आदि शुभ कार्यों में सर्व पंडित जनों ने नवांश को ही अधिक बलवान माना है। लल्ल नामक पंडित का कथन है कि—

स्वार्धे नक्षत्रफलं तिथ्यर्धे तिथिफलं समादेश्यम्।
होराया वारफलं लग्नफलं स्वंशके स्पष्टम् ॥१॥

नक्षत्र का फल उसके आधे भाग में स्पष्ट है, तिथि का फल तिथि के अर्ध भाग में स्पष्ट है, होरा में वार का फल स्पष्ट है तथा लग्न का फल अंशक में याने नवांश में स्पष्ट है। इस विषय में दैवज्ञ वल्लभ का कथन है कि—

"लग्ने शुभेपि यद्यंशः क्रूरः स्यान्नेष्टसिद्धिदः
लग्ने क्रूरेपि सौम्यांशः, शुभदोंशो बली यतः।

लग्न शुभ हो किन्तु नवांश यदि क्रूर हो तो वह शुभ लग्न भी सिद्धि दायक नहीं होता। लग्न क्रूर हो तथापि यदि नवांश सौम्य हो तो वह शुभ कारक है, क्योंकि अंशों की अधिक बलवत्ता मानी है। नवांश की महिमा बतलाते हुवे आचार्य महाराज लिखते हैं कि क्रूर नवांश में रहा हुआ सौम्य ग्रह भी क्रूर हो जाता है और सौम्य नवांश में रहा हुआ क्रूर ग्रह भी सौम्य होजाता है। इसी प्रकार क्रूर नवांश में रहे हुये सौम्य

ग्रह की दृष्टि भी क्रूर होजाती है तथा सौम्य अंश में क्रूर ग्रह की दृष्टि सौम्य होजाती है।

ज्योतिर्विदाचार्यों ने केतु को राहु की छाया रूप माना है इस कारण जिस राशि में राहु रहता है उस राशि से सातवीं राशि में केतु होता है, तथा जिस राशि के जितनेवें नवांशक में राहु होता है, उस राशि से सातवीं राशि के उतने ही नवांशक में केतु होता है, परन्तु राहु की स्थिति वाले नवांशक से गिनने पर केतु की स्थिति वाला नवांशक सातवां ही आता है। जैसे कि—मेष के पहिले मेष नामक नवांशक में राहु हो तो तुला के प्रथम तुला नामक नवांश में केतु रहता है, अतः मेष नामक नवांश से गिनने पर सातवाँ नवांश तुला नामक ही आता है। यदि मेष के नवम धन नामक नवांश में राहु हो तो तुला के नवांश में मिथुन नामक नवांश में केतु रहता है अतः धन नामक नवांश से गिनने पर मिथुन नाम का नवांश सातवां ही आता है।

तमाम ग्रह अपने घर में, मित्र के घर में, अपने उच्च स्थान में, मित्र के उच्चस्थान में मित्र के नवांश में और

अपने नवांश में रहे हों तो उन्हें बलवान समझना। स्त्री राशिमें चन्द्र और शुक्र बलवान हैं तथा बाकी के पांच ग्रह पुरुष राशि में बलवान आनना। मित्रग्रह के स्थान में रहा हुआ ग्रह रुपये में चार आने फल देता है, अपने स्थान मे रुपये में आठ आने फल देता है, त्रिकोण में रहा हो तो बारह आने फल देता है और यदि उच्च स्थान में रहा हो तो सोलह आने फल देता है।

• इति श्री •